पागल

इवान तुर्गनेव

सोवियत साहित्य

विषय-सूची

पागल

निक उठकर खड़ा हो गया। वह बिल्कुल ठीक था। वह पटरी के मोड़ पर आंखों से ओझल होती ट्रेन की रोशनी को देखने लगा। पटरी के दोनों किनारों पर पानी जमा था और उसके बाद दलदल था।

घुटने पर उसे दर्द महसूस हो रहा था। पैंट फट गई थी और चमड़ा चिर गया था। उसके हाथों में खरोंच आ गई थी और नाखूनों के बीच बालू तथा लकड़ी के तिनके धंस गए थे। वह पटरी के हल्के-से ढाल पर उतरकर पानी तक गया और अपने हाथ धोने लगा। वह ठंडे पानी से बड़ी सावधानी से अपने हाथ धोने और नाखूनों के भीतर से गर्द निकालने लगा। घुटनों के बल बैठकर उसने अपना घुटना भी साफ किया।

वह बदमाश ब्रेकमैन! किसी दिन वह उससे बदला ज़रूर लेगा। उसे समझ लेगा। यह भी कोई तरीका है!

"यहां आओ, बच्चे," उसने कहा था, "देखो, मेरे पास तुम्हारे लिए क्या कुछ है!"

वह धोखे में आ गया था। बच्चों की तरह मूर्खता की थी। अब कोई उसे कभी इस तरह बेवकूफ नहीं बना पाएगा।

"यहां आओ, बच्चे, देखो, मेरे पास तुम्हारे लिए क्या कुछ है!" तब एक ज़ोरदार घूंसा पड़ा और वह अपने हाथों व घुटनों के बल सड़क पर गिर पड़ा।

निक ने आंख मली। वह सूजती जा रही थी। हां, तो आंख में चोट लगी है। ठीक है। आंख में दर्द अभी से होने लगा है। वह बदमाश ब्रेकमैन!

उसने अपनी उंगलियों से आंख पर पड़ रहे गुलमे को छुआ। ओह, कितनी सूजन आ गई है! बस, इतना ही हुआ था। चलो सस्ते छूटे। काश, वह सूजन को देख पाता! पानी के ऊपर झुककर भी नहीं देख पाया था। एक तो अंधेरा था और दूसरे वह किसी भी बस्ती से बहुत दूर था। उसने अपनी पैंट पर अपने हाथ पोंछे और उठकर खड़ा हो गया। तब ढलकान पर चढ़कर पटरी पर पहुंच गया।

वह पटरी पर चलने लगा। पटरी के जोड़ों को बालू और कंकड़ों से जोड़ा गया था और चलने में आसानी थी। लेकिन चलना काफी था। बांध पर बनी पटरी चिकनी सड़क की तरह दलदल को चीरती हुई दूर तक चली गई थी। निक चलता गया। कहीं न कहीं तो उसे पहुंचना ही है।

वाल्टन जंकशन के यार्ड पर मालगाड़ी जब धीमी हुई थी तभी निक उस पर सवार हो गया था। अंधेरा होते-होते गाड़ी, जिस पर निक सवार था, कालकास्का स्टेशन को पार कर गई थी। अब वह मैसेलोना के नज़दीक होगा। तीन-चार मील का दलदल। वह रेल की पटरी के किनारे-किनारे इस तरह चल रह था कि पटरियों को बांधने वाले जोड़ों के बीच में रहे। कुहरा उठ रहा था और उसमें दलदल बड़ा रहस्यमय मालूम पड़ रहा था। उसकी आंख दर्द कर रही थी और उसे भूख लगी थी। वह चलता गया और पटरी मीलों पीछे छूटने लगी। फिर भी दोनों ओर का दलदल वैसा ही था।

आगे एक पुल था। वह उसे पार करने लगा और उसके जूते लोहे पर बजने लगे। पटरों के छेदों के बीच से नीचे पानी काला दिखाई दे रहा था। निक ने एक ढीली कील को ठोकर लगाई तो वह पानी में जा गिरी। पुल

के पार पहाड़ियां थीं। पटरी के दोनों ओर ऊंचाई और कालिमा थी। पटरी के पास आगे उसे आग दिखलाई पड़ी।

वह सावधानी से चलता हुआ आग के पास पहुंचा। वह पटरी के एक ओर, बांध के नीचे जल रही थी। उसे सिर्फ उसकी रोशनी दिखलाई पड़ी थी। पटरी चट्टान के बीच से बनाई गई थी और जहां आग जल रही थी वहां जगह फिर फैल गई थी और परे जंगल था। निक सावधानी से ढाल पर नीचे उतरा और जंगल को पार करता हुआ पेड़ों के बीच जलती आग की ओर बढ़ने लगा। जंगल 'बीच' का था और पेड़ों के बीच उसके चलने से 'बीच' के फल जूतों के नीचे दब रहे थे पेड़ों के किनारे पर ग्राम अब ज्यादा तेज़ दिख रही थी। उसके बगल में एक आदमी बैठा था। निक एक पेड़ के पीछे छिपकर देखने लगा। आदमी अकेला मालूम पड़ रहा था। वह अपना सिर हाथों में दिए बैठा आग को देख रहा था। पेड़ की ओट से निकलकर निक आग के सामने जा खड़ा हुआ।

आदमी आग की ओर देखता बैठा रहा। निक उसके बहुत पास पहुंचकर खड़ा हो गया तो भी वह हिला नहीं।

"हलो!" निक ने कहा।

आदमी ने सिर उठाकर देखा।

"तुम्हारी आंख पर चोट कैसे लगी!" उसने पूछा।

"एक ब्रेकमैन ने घूंसा जड़ दिया।"

"सीधे जाने वाली मालगाड़ी से बाहर गिरा था?"

"हां।"

"मैंने उस दोगले को देखा था," आदमी बोला, "वह करीब डेढ़ घंटे पहले इधर से गुज़रा है। वह डिब्बों की छतों पर हाथ पटकता और गाता हुआ जा रहा था।"

"दोगला!"

"तुम्हें घूंसा जमाकर उसे बड़ा मज़ा आया होगा,"

आदमी ने गंभीरतापूर्वक कहा।

"मैं उसे मारूंगा।"

"जब कभी वह इधर से जा रहा हो, उसे पत्थर से मारना," आदमी ने सलाह दी।

"मैं उससे बदला ज़रूर लूंगा।"

"तुम मज़बूत हो, है न?"

"नहीं," निक ने उत्तर दिया।

"तुम सभी लड़के मज़बूत होते हो।"

"होना ही पड़ता है।" निक ने कहा।

"यही तो मैंने कहा था।"

निक की ओर देखकर आदमी मुस्कराया। आग की रोशनी में निक ने देखा कि उसका चेहरा विकृत था। उसकी नाक धंसी थी, आंखें दरारों-सी थीं, और ओठ अजीब-से थे। निक ने एकबारगी यह नहीं देख लिया, उसने सिर्फ इतना ही देखा कि आदमी का चेहरा अजीब ढंग का और विकृत था—आग की रोशनी में मुर्दा दीखने वाला!

"तुम्हें मेरा तसला पसंद नहीं?" आदमी ने पूछा।

निक ज़रा परेशान हुआ।

"बिल्कुल पसंद है," उसने कहा।

"देखो! "आदमी ने अपनी टोपी उतार दी।

उसके सिर्फ एक कान था। वह मोटा और सिर के बगल में एकदम चिपका-सा था। जहां पर दूसरा कान होना चाहिए था, उस जगह पर एक खूंटी-सी थी।

"कभी देखा है ऐसा?"

"नहीं," निक बोला। वह ज़रा घबरा रहा था।

"मैं इसे बर्दाश्त कर सकता हूं," आदमी ने कहा, "तुम्हारा क्या ख्याल है नौजवान, मैं इसे बर्दाश्त कर सकता हूं न?"

"ज़रूर!"

"सभी मुझे घूंसे मारते हैं," ठिगने आदमी ने कहा, "लेकिन वे मेरा नुकसान नहीं कर सकते।"

उसने निक को देखा। "बैठो," उसने कहा, "खाना खाओगे?"

"फिक्र न करो," निक बोला, "मैं शहर जा रहा हूं"

"सुनो।" आदमी ने कहा, "मुझे ऐड कहकर पुकारो।"

"ज़रूर।"

"सुनो! "ठिंगने आदमी ने कहा, "मैं बिल्कुल ठीक नहीं हूं।"

"क्या बात है?"

"मैं पागल हूं।"

उसने अपनी टोपी पहन ली। निक को हंसी आने को हुई।

"तुम बिल्कुल ठीक हो," उसने कहा।

"नहीं, मैं नहीं हूं। मैं पागल हूं। सुनो, क्या तुम कभी पागल हुए हो?"

"नहीं," निक बोला, "तुम कैसे पागल हो गए?"

"मैं नहीं जानता," ऐड ने कहा, "पागल हो जाने के बाद आदमी कुछ नहीं जानता। तुम मुझे जानते हो, है न?"

"नहीं।"

"मैं ऐड फ्रांसिस हूं।"

"भगवान की कसम?"

"तुम्हें मुझ पर विश्वास नहीं?"

"है।"

निक समझ गया कि यह सच है।

"तुम जानते हो मैं उन्हें कैसे मारता हूं?"

"नहीं," निक ने कहा।

"मेरा हृदय धीरे-धीरे चलता है। एक मिनट में सिर्फ चालीस बार धड़कन होती है। महसूस करो।"

निक हिचकिचाया।

"देखो भी," आदमी ने उसका हाथ पकड़ लिया।" मेरी कलाई पकड़ो। अपनी अंगुलियां वहां रखो।"

ठिंगने आदमी की कलाई मोटी थी और मांसपेशियां हड्डी के ऊपर उभर रही थीं। निक को अपनी अंगुलियों के नीचे धीमी गति से चलती नाड़ी महसूस हुई।

"घड़ी है?"

"नहीं।"

"मेरे पास भी नहीं है," ऐड बोला, "पास में घड़ी न होना अच्छा नहीं होता।"

निक ने उसकी कलाई छोड़ दी।

"सुनो," ऐड फ्रांसिस ने कहा, "कलाई फिर पकड़ो। तुम नब्ज़ गिनो और मैं साठ तक गिनती गिनूंगा।"

अपनी अंगुलियों के नीचे धीमी चलती नब्ज़ को महसूस करके निक ने गिनना शुरू कर दिया। उसने सुना—ठिंगना आदमी ऊंचे स्वर में धीरे-धीरे एक, दो, तीन, चार, पांच...गिनने लगा।

"साठ," ऐड ने गिनती बन्द की, "एक मिनट हो गया। तुमने कितना गिना?"

"चालीस।" निक ने उत्तर दिया।

एक आदमी पटरी के बांध पर से नीचे उतरा और जंगल के बीच की खुली जगह से आग के पास आया।

"हल्लो, बग्स," ऐड ने कहा।

"हल्लो! "बग्स ने उत्तर दिया। आवाज़ नीग्रो जैसी थी। उसके चलने के ढंग से ही निक समझ गया था कि वह नीग्रो है। बग्स उनकी ओर पीठ करके आग पर झुककर खड़ा हो गया। तब सीधा हुआ।

"यह मेरा दोस्त है, बग्स," ऐड बोला, "यह भी पागल है।"

"बड़ी खुशी हुई आपसे मिलकर," बग्स ने कहा, "आपने क्या कहा, आप कहां के हैं?"

"शिकागो," निक ने उत्तर दिया।

"वह बड़ा अच्छा शहर है," नीग्रो बोला, "मैं आपका नाम नहीं समझ पाया।"

"ऐडम्स। निक ऐडम्स।"

"यह कहता है कि यह कभी पागल नहीं हुआ, बग्स," ऐड ने कहा।

"तो फिर बड़ा ज़बर्दस्त पागलपन सवार होने वाला है इस पर," नीग्रो बोला। वह आग की रोशनी में एक पैकेट खोल रहा था।

"हम लोग खाना कब खाएंगे, बग्स?" पागल ने कहा।"

"अभी। फौरन।"

"तुम्हें भूख लगी है, निक?"

"बड़े ज़ोर की।"

"सुना तुमने, बग्स?"

"मैं अधिकांश बातें सुन लेता हूं।"

"मैंने तुमसे यह नहीं पूछा था।"

"हां। इन महाशय की बात मैंने सुनी।"

एक बटलोई में वह हैम के 'स्लाइस' रख रहा था बटलोई गर्म हुई तो चिकनाई तड़कने लगी और अपनी लम्बी टांगों के बल आग पर झुककर बग्स हैम को उलटने और बटलोई में अंडे फोड़ने लगा और बटलोई को ऊपर-नीचे करने लगा जिससे गर्म चिकनाई सभी अंडों में लिपट जाए।

"मिस्टर ऐडम्स, क्या आप उस थैले से डबलरोटी निकालकर काट लेंगे?" बग्स ने आग की ओर से आंख हटाकर कहा।

"ज़रूर।"

निक ने थैले के भीतर हाथ डालकर एक डबलरोटी निकाली। उसने छः स्लाइस काटे। ऐड आगे झुककर उसे देखने लगा।

"ज़रा अपना चाक मुझे दो, निक," उसने कहा। "नहीं, मत देना," नीग्रो बोला, "अपना चाकू अपने ही पास रखना, मिस्टर ऐडम्स।"

पागल पीछे हटकर बैठ गया।

"क्या आप डबलरोटी मुझे देंगे, मिस्टर ऐडम्स?" बग्स ने पूछा। निक ने स्लाइस उसे दे दिए।

"क्या आप अपनी रोटी हैम की चर्बी में डुबोना पसंद करते हैं?" नीग्रो ने पूछा।

"बेहद।"

"अच्छा हो कि हम आखिर में ऐसा करें। खाना खत्म होने पर ठीक रहेगा। लो।"

नीग्रो ने हैम का एक टुकड़ा उठाया और उसे डबलरोटी के एक स्लाइस पर रखने के बाद सबके ऊपर एक अंडा रख दिया।

"इस सैंडविच को बन्द करके, कृपया इसे मिस्टर फ्रांसिस को दे दें।"

ऐड ने सैंडविच लेकर खाना शुरू कर दिया।

"देखो, अंडा बह रहा है," नीग्रो ने होशियार किया।"

"यह आपके लिए है, मिस्टर ऐडम्स। बाकी मेरे लिए।"

निक ने सैंडविच काटी। नीग्रो उसके सामने ऐड के बगल में बैठा था। गर्म भुने हैम और अंडे बड़े ज़ायकेदार लग रहे थे।

"मिस्टर ऐडम्स सचमुच भूखे हैं," नीग्रो बोला। ठिगना आदमी, जिसे नाम से निक एक प्रसिद्ध योद्धा के रूप में जानता था, चुप था। जब से नीग्रो ने चाकू के बारे में कहा था तब से वह कुछ नहीं बोला था।

"क्या मैं आपको एक स्लाइस हैम की गर्म चर्बी में डुबाकर दे सकता हूं?"

"शुक्रिया।"

ठिंगने श्वेतांग ने निक को देखा।

"आप भी लेंगे, मिस्टर एडॉल्फ फ्रांसिस?" बग्स ने बटलोई निकालते हुए कहा।

ऐड ने जवाब नहीं दिया। वह निक को देख रहा था।

"मिस्टर फ्रांसिस!" नीग्रो की मुलायम आवाज़ आई।

ऐड ने जवाब नहीं दिया। वह निक को देख रहा था।

"मैंने तुमसे कुछ कहा था, मिस्टर फ्रांसिस।" नीग्रो ने मुलायम स्वर में कहा।

ऐड निक को देखता रहा। उसने अपनी टोपी नीचे आंखों तक खिसका ली थी। निक को घबराहट हो रही थी।

"तुम यहां कैसे आ गए?" टोपी के नीचे से निक को संबोधित करती तीखी आवाज़ निकली।

"तुम्हारा क्या ख्याल है, तुम कौन हो? बदमाश, दोगला। किसीके न कहने पर तुम यहां आए और एक आदमी का खाना खा लिया और जब उसने तुम्हारा चाकू मांगा तो नहीं दिया।"

वह अंगारे-सी आंखों से निक को देखने लगा। उसका चेहरा सफेद हो गया था और आंखें टोपी के नीचे लगभग अदृश्य थीं।

"तुम बड़े चालबाज़ हो। किसने तुमसे यहां आने को कहा था?"

"किसीने नहीं।"

"ठीक है, किसीने नहीं कहा था। किसीने तुमसे रुकने को भी नहीं कहा था। तुम यहां आए और मेरे चेहरे के बारे में बुरा ख्याल किया और मेरी सिगार पी और मेरी शराब ढाली और फिर बदमाशी की बातें करने लगे। तुम्हारा क्या ख्याल है, तुम्हारा क्या हाल होगा?"

निक ने कुछ नहीं कहा। ऐड उठकर खड़ा हो गया।

"मैं कहे देता हूं तुझसे, शिकागो के दोगले, कि अब तेरी शामत आ गई है! आया समझ में?"

निक पीछे हट गया। ठिगना आदमी धीरे-धीरे, पैर जमा-जमाकर उसकी ओर बढ़ा। बायां पैर आगे चल रहा था और दायां पीछे घिसट रहा था।

"मारो मुझे," उसने अपना सिर हिलाया, "जरा मारने की कोशिश करो मुझे।"

"मैं तुम्हें मारना नहीं चाहता।"

"इस तरह तुम बच नहीं सकते। तुम्हें तो मार खानी ही पड़ेगी। समझे? बढ़ो धागे और मुझे मारो।"

"बन्द करो यह बकवास," निक बोला।

"अच्छा तो ठीक है, दोगले।"

ठिंगने आदमी ने निक के पैरों को देखा। उसने नीग्रो को देखा, जो उसके भाग से दूर हटने पर पीछे-पीछे चला आया था। नीग्रो ने उसकी खोपड़ी के नीचे एक ठुमका लगाया। वह आगे को गिर पड़ा और बग्स ने कपड़े में लिपटा लोहा घास पर फेंक दिया। ठिगना आदमी वहीं लेटा रहा। उसका चेहरा घास पर था। नीग्रो ने उसे उठाया और आग के पास ले आया। इस बीच उसका सिर लटकता रहा। उसका चेहरा बदसूरत मालूम पड़ रहा था ओर आंखें खुली थीं। बग्स ने उसे मुलायमियत से लिटा दिया।

"बाल्टी में पानी भर लाएंगे आप मेरे लिए, मिस्टर ऐडम्स?" उसने कहा, "मुझे डर है, मैंने उसे जरा ज्यादा ज़ोर से मार दिया है।"

नीग्रो फ्रांसिस के चेहरे पर दोनों हाथों से पानी उलीचने और धीरे-धीरे उसके कान खींचने लगा। आंखें मुंद गईं।

बग्स खड़ा हो गया।

"अब यह ठीक है," वह बोला, "परेशान होने की ज़रूरत नहीं। मुझे दुःख है, मिस्टर ऐडम्स।"

"अरे, सब ठीक है।" निक ठिंगने आदमी को देख रहा था। उसने घास पर पड़ा लोहा देखा और उसे उठा लिया। उसकी मुठिया लचकदार

थी और हाथों में मुलायम मालूम पड़ रही थी। वह पुराने काले चमड़े की बनी थी और भारी हिस्से पर एक रूमाल लिपटा था।

"यह व्हेल की हड्डी की मुठिया है," नीग्रो मुस्कराया, "अब ऐसी मुठियां नहीं बनतीं। मैं नहीं जानता था कि आप अपनी रक्षा कर सकेंगे या नहीं और फिर यह तो कतई नहीं चाहता था कि आप उसे चोट पहुंचाएं और उसके चेहरे पर निशानों की संख्या और बढ़े।"

नीग्रो फिर मुस्कराया।

"तुमने उसे खुद घायल कर दिया है।"

"मैं जानता हूं कि ऐसा कैसे किया जाना चाहिए। उसे यह कुछ नहीं याद रहेगा। जब वह ऐसा व्यवहार करने लगता है तो उसे ठीक करने के लिए मुझे ऐसा करना पड़ता है।"

निक अब भी ज़मीन पर पड़े ठिंगने आदमी को देख रहा था, जिसकी आंखें आग की रोशनी में मुंदी थीं। बग्स ने आग में कुछ लकड़ियां डाल दीं।

"आप उसके लिए परेशान न हों, मिस्टर ऐडम्स। ऐसी हालत में मैं उसे अनेक बार देख चुका हूं।"

"वह पागल क्यों हो गया?" निक ने पूछा।

"ओह, तमाम बातें हैं," नीग्रो ने आग के पास से जवाब दिया। "आप एक प्याला काफी पिएंगे, मिस्टर ऐडम्स?" निक को प्याला देकर वह उस कोट को सहलाने लगा जिसे उसने बेहोश आदमी के सिर के नीचे रख दिया था।"

"एक बात तो यह कि उसने मार बहुत खाई है।" नीग्रो ने काफी की एक चुस्की ली।" लेकिन इससे वह कुछ-कुछ सीधा हो गया। फिर उसकी बहन उसकी मैनेज़र थी। सभी कागजों में उन्हें भाई-बहन लिखा गया था। वह अपने भाई को कितना प्यार करती थी और वह अपनी बहन को कितना प्यार करता था! फिर न्यूयार्क में दोनों ने आपस में शादी कर ली और इससे काफी बदनामी हुई।"

"मुझे इसकी याद है।"

"ज़रूर होगी। वे भाई-बहन बिल्कुल भी नहीं थे। लेकिन कुछ लोग किसी भी तरह की बातें नहीं पसंद करते। फिर उनमें आपस में झगड़ा होने लगा और एक बार जो वह गई तो फिर वापस लौटकर नहीं आई।"

उसने काफी पीकर अपनी गुलाबी हथेली से ओठों को पोंछा।

"और वह पागल हो गया। आप और काफी लेंगे, मिस्टर ऐडम्स?"

"शुक्रिया।"

"मैंने उसे एक-दो बार देखा था," नीग्रो कहता गया, "वह बला की खूबसूरत औरत थी। बिल्कुल उसकी जुड़वां-सी मालूम पड़ती थी। अगर उसके चेहरे पर इतने घाव न लगे होते, वह भी देखने में बुरा न लगता।"

"वह रुक गया। कहानी खत्म हो गई-सी मालूम पड़ी।"

"तुम उससे कहां मिले?" निक ने पूछा।

"मैं उससे जेल में मिला," नीग्रो ने उत्तर दिया, "औरत के जाने के बाद वह हमेशा लोगों को पीटता रहता था और इसीलिए उसे जेल में बन्द कर दिया गया। मैं एक आदमी को घायल करने के जर्म में जेल गया था।"

वह मुस्कराया और अपनी मुलायम आवाज़ में कहता गया:

"मैं उसे फौरन चाहने लगा और जब मैं बाहर आया तो उसे तलाश लिया। वह मुझे पागल समझना पसन्द करता है और मैं बुरा नहीं मानता। मुझे उसका साथ पसन्द है और जगह-जगह घूमना पसन्द है और ऐसा करने के लिए मुझे चोरी नहीं करनी पड़ती। शरीफ आदमी की तरह यह सब मुझे पसन्द है।"

"तुम लोग करते क्या हो?" निक ने पूछा।

"'कुछ नहीं। बस, घूमते रहते हैं। उसके पास पैसा है।"

"उसने काफी कमाया होगा?"

"बेशक। हालांकि उसने सारा पैसा खर्च कर दिया या लोगों ने उससे छीन लिया। वह उसे पैसा भेजती है।"

उसने आग को कोंचकर उकसाया।

"वह बहुत अच्छी औरत है," वह कहता गया, "वह बिल्कुल अच्छी जुड़वां-सी मालूम पड़ती है।"

नीग्रो ने फिरकर ठिंगने आदमी को देखा, जो ज़मीन पर पड़ा था और जिसकी सांस धीमे-धीमे चल रही थी। उसके भूरे बाल माथे पर आ गए थे। इस तरह शान्त पड़ा उसका विकृत चेहरा बच्चों जैसा मालूम पड़ रहा था।

"अब मैं उसे किसी भी समय जगा सकता हूं, मिस्टर ऐडम्स। अगर आप बुरा न मानें तो मैं कहूंगा कि आप यहां से चले जाएं। मैं अतिथि सत्कार करना नापसन्द नहीं करता, लेकिन आपको देखकर हो सकता है वह फिर असन्तुलित हो जाए। मैं उसे मारना पसन्द नहीं करता लेकिन जब वह उत्तेजित हो उठता है तो यही करना पड़ता है। मुझे उसे लोगों से एक तरह से अलग रखना पड़ता है। आप बुरा तो नहीं मान रहे हैं, मिस्टर ऐडम्स? नहीं, मुझे धन्यवाद मत दीजिए, मिस्टर ऐडम्स। मैं उसके बारे में आपको पहले ही आगाह कर देता, लेकिन ऐसा मालूम होता था कि वह आपको इतना पसन्द करने लगा है कि मैं सोचने लगा, सब कुछ ठीक है। पटरी के सहारे सहारे दो मील जाने पर आपको एक शहर मिलेगा। मैसेलोना नाम है उसका। गुडबाई! काश, मैं आपसे रात-भर ठहरने का अनुरोध कर पाता, पर अब तो इसका प्रश्न ही नहीं उठता। आप अपने साथ कुछ हैम और रोटी ले जाएंगे? नहीं? आप एक सैंडविच ले लें।" यह सब उसने धीमी, मीठी, नम्र आवाज़ में कहा।

"ठीक है। अच्छा तो गुडबाई, मिस्टर ऐडम्स! गुड-बाई! आप सौभाग्यशाली हों।"

निक आग के पास से जंगल के बीच की खुली जगह में होकर रेल की पटरी की ओर चल पड़ा। आग के प्रकाश की सीमा से बाहर पहुंचकर वह सुनने लगा। अपनी धीमी मुलायम आवाज़ में नीग्रो बोल रहा था। निक शब्दों को नहीं सुन सका। तब उसने ठिंगने आदमी को कहते सुना, "सिर में भयानक दर्द है, बग्स।"

"अभी तबीयत ठीक हो जाएगी, मिस्टर फ्रांसिस,"

नीग्रो की आवाज़ उसे आराम पहुंचा रही थी, "बस तुम गरम काफी का एक प्याला पी लो।"

निक बांध पर चढकर पटरी के सहारे चलने लगा। उसने अपने हाथ में एक हैम सैंडविच पाई और उसे अपनी जब में रख लिया। पटरियों के मुड़कर पहाड़ियों के बीच घुसने से पहले चढ़ाई में उसने फिरकर देखा तो जंगल के बीच की खुली जगह पर आाग की रोशनी दिखाई पड़ी।

प्रतीक्षा

हम लोग अभी बिस्तर पर ही थे कि वह खिड़कियां बन्द करने कमरे के भीतर आया और मुझे बीमार-सा दीखा। वह कांप रहा था, उसका चेहरा सफेद हो गया था, और वह धीरे-धीरे चल रहा था, मानो चलने में दर्द हो रहा हो।

"क्या बात है, शाज़?"

"सिर दर्द कर रहा है।"

"तो चुपचाप बिस्तर पर लेट जाओ।"

"नहीं। मैं ठीक हूं।"

"तुम लेटो चलकर। कपड़े पहनकर मैं तुम्हें देखने आता हूं।"

लेकिन जब मैं नीचे पहुंचा तो वह कपड़े पहन चुका था और आग के पास बैठा नौ बरस का बहुत ही बीमार और पीड़ित लड़का मालूम पड़ रहा था। उसके माथे पर हाथ रखते ही मैं समझ गया कि उसे बुखार है।

"तुम लेटो बिस्तर पर," मैंने कहा, "तुम्हारी तबीयत ठीक नहीं।"

"मैं बिल्कुल ठीक हूं," उसने कहा।

डाक्टर ने आकर उसके शरीर का तापमान लिया।

"कितना है?" मैंने उनसे पूछा।

"एक सौ दो।"

नीचे, डाक्टर ने तीन अलग-अलग दवाइयां तीन अलग-अलग रंगों की शीशियों में रख दीं और उनके खाने की विधि भी बताई। एक बुखार कम करने की दवा थी, दूसरी जुलाब और तीसरी अम्लीय दशा को दूर

करने की। "इन्फ्लुएन्जा के कीटाणु अम्लीय परिस्थिति में ही जीवित रह सकते हैं," उन्होंने बताया। लगता था वे इन्फ्लुएन्जा के बारे में सब कुछ जानते हैं। उन्होंने कहा कि तापमान एक सौ चार अंश से अधिक न बढ़े तो घबराने की ज़रूरत नहीं। "यह फ्लू की हल्की अवस्था है और निमोनिया से बचाव किया जाए तो फिर कोई खतरा नहीं।"

कमरे में वापस लौटकर मैंने लड़के का तापमान लिखा और विभिन्न दवाइयां देने का समय भी।

"मैं तुम्हें कुछ पढ़कर सुनाऊं?"

"अगर आप चाहते हैं तो," लड़के ने कहा। उसका चेहरा बहुत सफेद हो गया था और उसकी आंखों के नीचे काले धब्बे थे। वह बिस्तर पर शान्त लेटा था और अपने चारों ओर की बातों से बिल्कुल तटस्थ मालूम पड़ रहा था।

मैं हावर्ड पाइल की 'समुद्री डाकुओं की किताब' का अंश पढ़ रहा था, लेकिन देख रहा था कि वह ध्यान नहीं दे रहा है कि मैं क्या पढ़ रहा हूं।

"कैसी तबीयत है, शाज़?" मैंने उससे पूछा।

"अभी तक तो वैसी ही," उसने कहा।

बिस्तर के पायताने बैठकर मैं दूसरी दवा देने के समय का इन्तज़ार करता हुआ धीरे-धीरे पढ़ने लगा। उसका सो जाना ही स्वाभाविक था, लेकिन किताब से सिर उठाने पर मैंने देखा कि वह पलंग के पायताने की ओर देख रहा है, बड़ी अजीब दृष्टि से देख रहा है।

"तुम सोने की कोशिश क्यों नहीं करते? दवा के लिए मैं तुम्हें जगा लूंगा।"

"मैं जागते ही रहना चाहता हूं।"

कुछ देर बाद उसने मुझसे कहा, "अगर आपको परेशानी हो रही हो, पापा, तो यहां न बैठें।"

"मुझे कोई परेशानी नहीं है।"

"नहीं, मेरा मतलब है कि अगर परेशानी होने लगे तो आप यहां न बैठें।"

मैंने सोचा कि शायद उसकी तबीयत कुछ हल्की हो गई है, इसलिए ग्यारह बजे वाली दवा खिलाकर मैं थोड़ी देर को बाहर चला गया।

साफ, सर्द दिन था और धरती पर पतली बर्फ जम गई थी। मालूम पड़ रहा था कि सभी नंगे पेड़, झाड़ियां, और घास और नंगी धरती—सबपर बर्फ की वार्निश कर दी गई हो। मैं जवान आयरिश कुत्ते को लेकर सड़क पर एक जमे हुए नाले के किनारे घूमने चल दिया, परन्तु चिकनी सतह पर खड़ा होना या चलना कठिन था। कुत्ता फिसलता, कांपता चल रहा था तथा मैं स्वयं दो बार ज़ोर से गिरा, एक बार तो मेरी बन्दूक गिरकर फिसलती हुई दूर चली गई।

एक ऊंचे मिट्टी के ढूहे पर लटकती झाड़ियों पर से बटेरों के एक झुण्ड को हमने उड़ाया और ढूहे पर चढ़कर आंखों से ओझल होने से पहले मैंने दो को मार डाला। कुछ बटेर पेड़ों पर जा बैठीं, लेकिन अधिकतर झाड़ियों में जा छिपीं और अब उन्हें उड़ाने के लिए बर्फ से ढकी झाड़ियों पर कई बार उछलना आवश्यक था। बर्फीली, कंटीली झाड़ियों पर असन्तुलित खड़े रहकर उनके बाहर निकलते ही गोली दागना मुश्किल काम है, लेकिन मैंने दो मार लीं, पांच का निशाना चूक गया। इसके बाद प्रसन्नतापूर्वक लौट चला कि घर के इतने पास ही बटेर मिल गए और अगले दिन के लिए काफी और मौजूद हैं।

घर पहुंचकर पता लगा कि लड़के ने हरेक को कमरे के भीतर जाने को मना कर दिया था।

"आप मत आइए," उसने कहा, "जो मुझको हुआ है, वह आपको नहीं होना चाहिए।"

मैं उसके पास गया। पाया कि जिस दशा में मैं उसे छोड़कर गया था वह अब भी ठीक उसी दशा में था। चेहरा सफेद था लेकिन बुखार से

गाल लाल हो गए थे। पहले की तरह स्थिर दृष्टि से पलंग के पायताने देख रहा था।

मैंने उसका तापमान लिया।

"कितना है?"

"सौ के करीब।" मैंने कहा। तापमान एक सौ दो दशमलाव चार था।

"पहले तो एक सौ दो था," उसने कहा।

"किसने कहा था?"

"डाक्टर ने।"

"तुम्हारा तापमान ठीक है," मैंने कहा, "परेशान होने की ज़रूरत नहीं।"

"मैं परेशान नहीं हूं," उसने कहा, "लेकिन सोचने से अपने को रोक नहीं पाता।"

"सोचो मत," मैंने कहा, "ज़रा बहादुर बनो।"

"मैं इसे बहादुरी से झेल रहा हूं," कहकर उसने अपने सामने देखा। स्पष्ट ही वह किसी बात को छिपा रहा था।

"इसे पानी के साथ खा लो।"

"आप समझते हैं, इससे कुछ लाभ होगा?"

"ज़रूर।"

मैं बैठकर फिर समुद्री डाकुओं वाली किताब पढ़ने लगा, लेकिन देखा कि वह सुन नहीं रहा है तो बन्द कर दिया।

"आपका क्या ख्याल है कि मैं किस समय मर जाऊंगा?" उसने पूछा।

"क्या?"

"कितनी देर बाद मैं मरूंगा?"

"तुम मरोगे ही नहीं। क्या हो गया है तुम्हें?"

"ओह, मैं ज़रूर मर जाऊंगा। मैंने उन्हें एक सौ दो कहते सुना था।"

"एक सौ दो बुखार में लोग मरा नहीं करते। निहायत बेवकूफी की बात है।"

"लोग मर जाते हैं, मैं जानता हूं। फ्रांस के स्कूल में लड़कों ने मुझे बताया था कि चौवालीस अंश के बाद कोई जिन्दा नहीं रह सकता। मुझे तो एक सौ दो है।"

नौ बजे सुबह से लेकर सारे दिन-भर वह मरने का इन्तज़ार करता रहा था।

"पागल," मैंने कहा, "यह तो मील और किलोमीटर के समान है। तुम मरोगे नहीं। वह तापमापी ही दूसरा है। उस तापमापी पर सैंतीस अंश सामान्य तापमान होता है। इस तरह के तापमापी पर अट्ठानवे होता है।"

"क्या आपको ठीक से मालूम है?"

"निस्सन्देह," मैंने कहा, "यह मील और किलोमीटर की तरह है। बिल्कुल उसी तरह कि अगर कार में हम सत्तर मील का सफर करें तो कितने किलोमीटर चलेंगे?"

"ओह," उसने कहा।

पलंग के पायताने पर जड़ी उसकी टकटकी खुल गई। अन्त में उसके भीतर का तनाव भी खतम हो गया और दूसरे दिन तो उसे बड़ा आराम था और वह ज़रा-ज़रा-सी महत्त्व-हीन बातों पर रोने लगा था।

आदिवासी बस्ती

एक दूसरी डोंगी भी झील के किनारे से लगी खड़ी थी। दो आदिवासी खड़े इन्तज़ार कर रहे थे।

निक और उसका पिता डोंगी के पिछले हिस्से में बैठ गए। आदिवासियों ने उसे धकियाया और उनमें से एक उसे खेने के लिए उसमें जा बैठा। चचा जार्ज शिविर वाली डोंगी के पृष्ठभाग में बैठ गया। इस नाव को जवान आदिवासी ने धकियाया और चचा जार्ज को खे ले जाने के लिए उसमें कूद गया।

दोनों नावों ने अंधेरे में कूच कर दिया। कुहरे में काफी दूर आगे चलती दूसरी डोंगी के चप्पुओं की आवाज़ें निक सुनता रहा। आदिवासी तेज़ी से और ज़ोर-ज़ोर से चप्पू चला रहे थे। निक पीछे को अपने पिता की बांहों में लिपटकर लेट गया। पानी की सतह पर काफी ठंड थी। उन्हें खेले चलने वाला आदिवासी बहुत सख्त मेहनत कर रहा था लेकिन वह दूसरी नाव कुहरे में लगातार उनसे आगे ही आगे सरकी जाती थी।

"हम कहां जा रहे हैं बापू?" निक ने पूछा।

"वहां उस आदिवासी बस्ती में एक आदिवासी स्त्री है, जो बहुत बीमार है।"

"अच्छा।" निक बोल उठा।

झील के पार पहुंचने पर दूसरी नाव को उन्होंने किनारे से लगे पाया। अंधेरे में खड़ा चचा जार्ज सिगार पी रहा था। जवान आदिवासी ने नाव

को किनारे पर खींच लिया। चचा जार्ज ने दोनों आदिवासियों को पीने के लिए सिगार दिए।

किनारे से एक घास के मैदान में होकर वे बढ़े। मैदान ओस से गीला हो रहा था। लालटेन लिए आदिवासी युवक उनके आगे-आगे चल रहा था। वे जंगल में प्रवेश कर गए और उस पगडंडी पर चलने लगे जो लट्ठे ढोने के लिए बनी उस सड़क से जा मिली थी जो स्वयं पहाड़ियों में प्रवेश कर रही थी। यहां सड़क पर चलना अधिक सहज था क्योंकि दोनों ओर से लकड़ियां कट गई थीं। आदिवासी युवक रुका। अपनी लालटेन उसने बुझा दी और वे सब सड़क पर बढ़ने लगे।

एक मोड़ आया। एक कुत्ता भौंकता हुआ कहीं से आ पहुंचा। सामने ही उन झुग्गियों की रोशनियां दीख पड़ रही थीं जिनमें छाल छीलने वाले आदिवासी रहते थे। और अधिक कुत्ते निकलकर उनपर झपटे। दोनों आदिवासियों ने उन्हें वापस झुग्गियों की ओर भगा दिया। सड़क से सबसे पास वाली झुग्गी की खिड़की में एक रोशनी जल रही थी। एक बूढ़ी औरत लैम्प लिए दरवाज़े पर खड़ी थी।

अन्दर लकड़ी के बिस्तर पर एक आदिवासी युवती लेटी थी। दो दिनों से वह बच्चा होने का कष्ट सहन कर रही थी। बस्ती की सभी बूढ़ी औरतें उसकी मदद कर रही थीं। पुरुष दूर सड़क पर अंधेरे में जा बैठे थे और उस स्त्री की चीख-पुकारों की पहुंच से बाहर सिगरेटें पीकर समय काट रहे थे। जैसे ही निक के पिता और चचा जार्ज आगे-आगे और वह और दोनों आदिवासी पीछे-पीछे झुग्गी में घुसे, वह चीखी। वह निचले बिस्तर पर लेटी थी और लिहाफ में लिपटी बहुत बड़ी लग रही थी। उसका सिर एक ओर को मुड़ा था। ऊपर के बिस्तर पर उसका पति लेटा था। तीन दिन पहले उसका पैर एक कुल्हाड़ी से बुरी तरह कट गया था। वह एक पाइप पी रहा था। कमरे में बुरी गन्ध भरी हुई थी।

निक के पिता ने कुछ पानी अंगीठी पर रखने का आदेश दिया। जब वह गरम हो रहा था, वह निक से बातें करता रहा।

"इस औरत को बच्चा होने वाला है, निक।" उसने कहा।

"मैं जानता हूं।" निक बोला।

"तुम नहीं जानते।" उसके पिता बोले, "सुनो, जिस स्थिति में से यह गुज़र रही है, इसे प्रसव की अवस्था कहते हैं। बच्चा पैदा होना चाहता है। वह भी चाहती है कि वह पैदा हो जाए। उसकी सब पेशियां कोशिश कर रही हैं कि बच्चा पैदा हो जाए। जब यह चीखती है, तब यही कुछ होता है।"

"अच्छा।" निक बोला।

तभी स्त्री फिर चीख उठी।

"डैडी, क्या आप इसे कुछ ऐसा नहीं दे सकते कि इसका चीखना बन्द हो जाए?" निक ने पूछा।

"नहीं, मेरे पास बेहोशी की दवाई नहीं है।" उसके पिता ने कहा, "लेकिन महत्त्वपूर्ण उसकी चीखें नहीं हैं। मैं उन्हें नहीं सुनता, क्योंकि इनका कोई महत्त्व नहीं है।"

ऊपर के बिस्तर पर लेटा पति दीवार से सटकर लुढ़क गया।

रसोई वाली औरत ने डाक्टर को इशारा किया कि पानी गर्म हो गया है। निक का पिता रसोई-घर में गया और बड़ी केतली से लगभग आधा पानी उसने एक बेसिन में लौट लिया। एक रूमाल में से खोलकर कुछ चीजें उसने केतली में बचे पानी में डाल दीं।

"इन्हें उबलने दो।" उसने कहा और बेसिन के गर्म पानी में शिविर से लाई साबुन की टिकिया से अपने हाथों को रगड़-रगड़कर धोना शुरू कर दिया। सांबुन से पिता के हाथों का एक-दूसरे को रगड़-रगड़ कर धोना निक देखता रहा। उसका पिता अच्छी तरह अपने हाथों को धोता रहा और उससे बातें करता रहा।

"देखो निक, पहले बच्चों के सिर बाहर आने चाहिए, पर कभी-कभी ऐसा नहीं होता। जब ऐसा नहीं होता तब हर् एक के लिए वे भारी परेशानी पैदा कर देते हैं। शायद मुझे इस औरत का आपरेशन करना पड़े। हम जरा-सी ही देर में सब जान-समझ लेंगे।"

जब वह अपने हाथों से सन्तुष्ट हो चुका तो अन्दर गया और काम में जुट गया।

"जार्ज, ज़रा इस लिहाफ को पीछे खींच लो।" उसने कहा, "मैं इसे छूना नहीं चाहूंगा।"

बाद में जब उसने आपरेशन करना शुरू किया तो चचा जार्ज और तीन आदिवासी उस स्त्री को थामे रहे। उसने चचा जार्ज की बांह पर काट लिया और चचा जार्ज चिल्ला उठा, "चुड़ैल कहीं की।" जो आदिवासी युवक चचा जार्ज को खेकर लाया था वह हंस पड़ा। निक पिता के पास बेसिन थामे खड़ा रहा। इस सबमें काफी समय लग गया।

उसके पिता ने बच्चे को ऊपर उठा लिया और उसे थपका, जिससे वह सांस लेने लगे। फिर उसे बूढ़ी औरत को पकड़ा दिया।

"देखो निक, यह लड़का है।" उसने कहा, "इस तरह एक डाक्टर बनना तुम्हें कैसा लगता है?"

"ठीक लगता है।" निक ने उत्तर दिया। वह दूसरी ओर देख रहा था, जिससे जो कुछ उसके पिता कर रहे थे, वह न देख सके।

"यह लो, काम ख़त्म हो गया।" उसके पिता ने कहा और कोई चीज़ बेसिन में डाल दी।

निक ने उसे नहीं देखा।

"अब बस, कुछ टांके लगाने हैं।" उसके पिता ने बताया, "तुम इसे देखो चाहे न देखो। जैसा तुम चाहो, निक। जो हिस्सा मैंने काटा था, उसे सी रहा हूं।"

निक ने नहीं देखा। बहुत पहले ही उसकी उत्कंठा समाप्त हो चुकी थी।

उसके पिता ने काम ख़त्म किया और खड़ा हो गया। चचा जार्ज और तीनों आदिवासी भी खड़े हो गए। बेसिन कोनिक ने रसोई में रख दिया।

चचा जार्ज ने अपनी बांह देखी। आदिवासी युवक मुस्कराया।

"मैं इसपर कुछ परआक्साइड लगा दूंगा, जार्ज।" डाक्टर ने कहा।

वह आदिवासी औरत पर झुक गया। वह खामोश थी और उसकी आंखें बन्द थीं। वह बहुत पीली दीख रही थी। वह नहीं जानती थी कि उसके बच्चे का या किसी भी चीज़ का क्या बना है।

"मैं सुबह फिर आऊंगा।" डाक्टर ने सीधे खड़े होते हुए कहा, "नर्स सेंट इग्नेस से दुपहर तक यहां पहुंच जाएगी और ज़रूरत की हर चीज़ वह ले आएगी।"

वह बहुत प्रसन्नता अनुभव कर रहा था और फुटबाल के खिलाड़ी खेल के बाद कपड़े बदलते हुए जैसे बातें करते हैं, वैसी ही बातें कर रहा था।

"जार्ज, यह तो डाक्टरी पत्रिका में छपने योग्य बात गई है।" उसने कहा, "एक मामूली चाकू से प्रसव का आपरेशन करना और नौफुटी नुकीली आंत की डोरी से उसे सी डालना।"

चचा जार्ज दीवार से लगा खड़ा अपनी बांह को देख रहा था।

"आप सचमुच ही एक महान व्यक्ति हैं।" उसने कहा।

"ज़रा इस भाग्यवान पिता पर भी एक नज़र डाल लेनी चाहिए। इन मामूली मामलों में आम तौर पर सबसे अधिक कष्ट इन्हें ही उठाना पड़ता है," डाक्टर बोला "मुझे मानना चाहिए कि यह सब वह काफी शान्तिपूर्वक सह गया है।"

आदिवासी के सिर पर से उसने लिहाफ खींचा। उसका हाथ गीला हो उठा। एक हाथ में लैम्प लेकर निचले बिस्तर के सिरे पर वह चढ़ गया। आदिवासी दीवार की ओर चेहरा मोड़े पड़ा था। एक कान से लेकर दूसरे

कान तक उसका गला कटा हुआ था। खून बहकर नीचे बिस्तर पर इकट्ठा हो गया था। उसका शरीर उसीमें लुढ़का॰उसकी बायीं बांह पर टिका था। खुला चाकू कपड़ों में पड़ा था।

"जार्ज, निक को झुग्गी से बाहर ले जाओ।" डाक्टर ने कहा।

पर इसकी कोई ज़रूरत नहीं थी। जब एक हाथ में लैम्प लेकर निक के पिता ने आदिवासी के सिर को पीछे की ओर पलटा था, उस समय रसोई के दरवाज़े में खड़ा निक ऊपर के बिस्तर को अच्छी तरह देख चुका था।

जब लट्ठे ढोने वाली सड़क पर चलकर वे झील की ओर वापस जा रहे थे, तभी दिन निकलना शुरू हुआ था।

"निक्की, मुझे बड़ा अफसोस है कि मैं तुम्हें यहां लाया।" उसके पिता ने कहा। आपरेशन के बाद उसकी सारी खुशी जा चुकी थी। "बड़ी ही भीषण घटना तुम्हें देखनी पड़ी।"

"बच्चे पैदा करते समय क्या स्त्रियों को सदा ऐसे ही कष्ट का सामना करना पड़ता है?" निक ने पूछा।

"नहीं, ऐसा बहुत कम होता है।"

"डैडी, उसने अपनी हत्या क्यों कर डाली?"

"पता नहीं। मैं समझता हूं, यह सब वह सह नहीं सका।"

"डैडी, क्या बहुत सारे लोग आत्महत्या कर लेते हैं?"

"बहुत सारे तो नहीं, निक।"

"क्या बहुत सारी औरतें ऐसा करती हैं?"

"शायद ही कभी कोई करती है।"

"वे कभी नहीं करतीं?"

"हां, कभी-कभी तो करती हैं।"

"डैडी?"

"हां!"

“चचा जार्ज कहां गए हैं?”

“वह वापस आ जाएगा।”

“डैडी, क्या मरना बहुत कठिन होता है?”

“नहीं, मैं समझता हूँ काफी आसान है। सब कुछ आदमी पर निर्भर करता है।”

वे नाव में बैठे थे। निक पीछे के हिस्से में था। पिता चप्पू चला रहे थे। सूरज पहाड़ियों से ऊपर उठ रहा था। एक मछली पानी पर घेरा बनाती हुई उछली। निक ने अपना हाथ पानी पर छुआया। सुबह की तेज ठंड में भी वह उसे गर्म-गर्म-सा लगा।

उस सुबह पिता द्वारा खेई जाती नाव के पिछले हिस्से में बैठे उसे निश्चित-सा लग रहा था कि वह कभी नहीं मरेगा।

तूफान के बाद

किसी खास चीज़ के बारे में नहीं, पंच (शराब) बनाने के सिलसिले में कुछ बात हुई और हमने लड़ना शुरू कर दिया। मैं फिसल गया और उसने मुझे गिरा लिया। फिर मेरी छाती पर झुककर दोनों हाथों से मेरा गला ऐसे घोंटने लगा जैसे मार डालने की कोशिश कर रहा हो। इस पूरे समय मैं अपनी जेब से चाकू निकालने का यत्न करता रहा कि उसकी पकड़ को ढीला कर सकूं। हर कोई इतना धुत था कि उसे मुझ-पर से खींच नहीं पा रहा था। वह मेरा गला घोंटे दे रहा था और मेरे सिर को फर्श पर पटक रहा था। मैंने चाकू निकाल लिया और उसे खोल भी लिया और उसकी बांह के पट्टे को आर-पार काट डाला। अब उसने मुझे छोड़ दिया। वह चाहता तो भी अब मुझे पकड़े नहीं रह सकता था। वह लुढ़क गया और उस बांह से चिपक गया और चीखने-चिल्लाने लगा।

मैंने कहा, "भला तुम मेरा गला घोंट डालना क्यों चाहते थे?"

मैं उसे मार ही देता। उसने मेरा गला इस बुरी तरह भींच डाला था कि सप्ताहभर तक मैं कुछ निगल नहीं सका।

खैर, मैं वहां से निकल आया। उसके साथ काफी लोग थे। उनमें कुछ ने मेरा पीछा भी किया। मैं एक मोड़ पर मुड़ गया और बन्दरगाह पर पहुंच गया। वहां एक आदमी मिला और उसने बताया कि ऊपर गली में किसीने एक आदमी की हत्या कर दी है। मैंने कहा, "हत्या किसने की है?" और उसने बताया, "पता नहीं। उसे किसने मारा है। पर वह बिल्कुल मर चुका है।" अंधेरा हो गया था। सड़क पर पानी खड़ा था। रोशनियां

नहीं थीं। खिड़कियां टूट-फूट गई थीं। नावें सब ऊपर कस्बे में आ गई थीं। पेड़ उखड़ गए थे। सभी कुछ उड़ गया था। मैंने एक डोंगी ली और बाहर निकला और जहां अपनी नाव को छोड़ा था वहीं 'मैंगोकी' के अन्दर मैंने उसे पाया। वह ठीक थी। बस, पानी उसमें भर गया था। मैंने पानी को डोल से और पम्प आदि से बाहर निकाला। ऊपर चांद निकल आया था। बादल भी काफी थे। मौसम अब भी काफी बिगड़ा हुआ था। मैं उसे ले चला और जब दिन निकला, मैं ईस्टर्न हार्बर से आगे था।

भई, वह एक तूफान था। मेरी नाव ही थी जो सबसे पहले बाहर निकली थी। और उस जैसा पानी क्या देखने को कभी मिल सकता था! वह ऐसा सफेद था जैसे कि सज्जी का पीपा हो। ईस्टर्न हार्बर से साउथ वेस्ट की की ओर आए तो तट पहचान में नहीं आता था। किनारे के ठीक बीचोबीच एक बड़ी धारा बह उठी थी। पेड़ और सभी कुछ उखड़ा पड़ा था। एक रास्ता बीच में से फट पड़ा था। पानी चाक मिट्टी की तरह सफेद था। हर चीज़ उसपर तैर रही थी। शाखाएं और पूरे पेड़ और मरे पक्षी सभी कुछ वहां था। चौकियों के भीतर जैसे दुनिया के सारे ही पेलिकन पक्षी उमड़ उठे थे। सभी तरह की चिड़ियां उड़ रही थीं। जब उन्होंने समझा होगा कि तूफान आ रहा है, तभी वे अन्दर घुस गई होंगी।

दिन-भर मैं साउथ वेस्ट की पर पड़ा रहा और कोई मेरे पीछे नहीं आया। बाहर आने वाली सबसे पहली नाव मेरी थी। मैंने एक मस्तूल को तैरते हुए देखा। मैं समझ गया कि कोई जहाज़ टूटा है। उसे ढूंढ़ने के लिए मैं चल पड़ा। मैंने उसे पा भी लिया। यह एक तीन मस्तूलों वाली नौका थी। वह बहुत गहरे पानी के भीतर थी। उसके मस्तूलों के ठूंठ पानी के बस ज़रा-सा बाहर दीख पड़ रहे थे। मुझे उसमें से कुछ भी नहीं मिल पाया। इसलिए किसी और चीज़ की तलाश में मैं चल दिया। मैं उन सभीसे पहले निकल आया था। सोचता था कि जो कुछ भी वहां है, मुझे मिल जाना चाहिए। मैं रेत की दीवारों पर से होता हुआ बढ़ा और तीन मस्तूलों वाले

जहाज़ को मैंने पीछे छोड़ दिया। कोई चीज़ मुझे नहीं मिली और मैं दूर बढ़ा चला गया। मैं बहुत आगे बालुकच्छों की ओर बढ़ रहा था। कुछ भी मुझे नहीं मिला। इसलिए मैं बढ़ता ही चला गया। जब मैं रेबेका लाइट की रोशनी की परिधि में पहुंचा तभी सभी जातियों के पक्षियों को मैंने किसी चीज़ पर मंडराते देखा। यह देखने के लिए कि यह क्या है, मैं उसकी ओर बढ़ा। पक्षियों का एक भरा-पूरा बादल वहां घिर रहा था।

मस्तूल जैसा कुछ पानी के बाहर निकला दीख पड़ा। जब मैं उसके निकट पहुंचा तो सब पक्षी हवा में ऊपर उड़ गए और मेरे चारों ओर मंडराने लगे। वहां पानी एकदम साफ था और एक प्रकार का मस्तूल पानी के ठीक ऊपर उभर रहा था। जब मैं उसके पास आया तो मैंने देखा कि पानी के भीतर एक लम्बी छाया की तरह सब एकदम अंधेरा था। मैं ठीक उसके ऊपर आ गया। वहां पानी के नीचे एक जहाज था। पानी के भीतर पड़ा वह एक पूरी दुनिया जितना बड़ा लग रहा था। वह बगल के बल पड़ा था और उसका पृष्ठ-भाग गहरे भीतर धंसा था। झरोखे सब कसकर बन्द थे। पानी में चमकते शीशों को और उस पूरे जहाज़ को मैं देख पा रहा था। अपने जीवन में इतना बड़ा जहाज़ मैंने कभी नहीं देखा था। मैं उसकी पूरी लम्बाई तक तैर गया। तब मैं वापस आया और मैंने लंगर डाल दिया। डेक पर रबड़ की एक डोंगी मेरे पास थी। उसे मैंने नीचे पानी में उतार दिया और खेने लगा। और मेरे चारों ओर पक्षी मंडरा रहे थे।

मेरे पास एक यन्त्र था जिससे पानी के अन्दर देखा जा सकता था। वह वैसा ही था जैसा तली बीनते समय हम इस्तेमाल करते हैं। मेरा हाथ कांप रहा था और मैं कठिनाई से ही उसे थाम पा रहा था। जहाज़ को पूरा देख जाने के बाद पता लगा कि सभी झरोखे बन्द थे। लेकिन नीचे तली के पास कुछ ज़रूर खुला था क्योंकि वहां से चीजों के टुकड़े बह-बहकर लगातार उठ रहे थे। पर पहचान नहीं पड़ता था कि वे क्या हैं। थे टुकड़े

ही। पक्षी इन्हींके पीछे थे। इतने अधिक पक्षी देखने में कभी नहीं आते। वे सब मुझे घेरे थे और पागलों की तरह किलकार रहे थे।

मैं सभी कुछ प्रकट और साफ देख सकता था। मैं देख रहा था कि वह घूम गया है। पानी के अन्दर वह एक मील लम्बा प्रतीत हो रहा था। रेत के एक साफ, सफेद तह पर वह पड़ा था और बगल के बल इस तरह लेटा था कि पानी से बाहर तिरछा निकला मस्तूल एक प्रकार का आगे वाला मस्तूल या कोई औज़ार-सा मालूम पड़ता था। जहाज़ का आगा बहुत दूर गहरे नहीं था। उसके अग्रभाग पर खुदे उसके नाम के अक्षरों पर यदि मैं खड़ा हो जाता तो मेरा सिर पानी से बस ज़रा-सा बाहर निकला रहता। लेकिन निकटतम झरोखा बारह फुट नीचे था। मेरी मछली पकड़ने की कंटिया उस तक पहुंच सकती थी। उसीसे उसे तोड़ने की कोशिश भी मैंने की। पर वैसा कर नहीं सका। शीशा बहुत अधिक पक्का था। इसलिए मैं वापस नाव तक आया। एक रिंच लिया। उसे कंटिया के सिरे पर कस दिया। पर फिर भी मैं उसे तोड़ नहीं सका। शीशे में मैं जहाज़ के अन्दर देख रहा था। सब कुछ उसमें भरा था। पहला आदमी मैं ही था जो उस तक पहुंचा था। पर मैं उसमें प्रवेश नहीं कर पा रहा था। ज़रूर पचास लाख डालर का सामान उसमें था।

कितना कुछ उसमें होना ही चाहिए, यह सोचकर मैं अस्थिर हो उठा। झरोखे के ठीक नीचे एक कोठरी थी। कुछ उसमें दीख पड़ रहा था। लेकिन क्या था, यह उस यन्त्र में से पहचान नहीं पड़ रहा था। कंटिये से कुछ भी नहीं किया जा सका। मैंने अपने कपड़े उतारे। खड़ा हुआ। कुछ गहरी सांसें लीं और रिच हाथ में लेकर जहाज़ के पृष्ठ-भाग की ओर नीचे तैर गया। झरोखे के किनारे को पकड़कर एक पल मैं टिका रह सका और अन्दर देख सका। वहां मैंने एक स्त्री को देखा जिसके बाल पूरे खुलकर लहरा रहे थे। उसे तैरते हुए मैंने साफ देखा और दो बार रिच से शीशे पर

सख़्त चोट की। मेरे कानों ने 'कड़' की आवाज़ सुनी। लेकिन वह टूट नहीं सका और मुझे ऊपर था जाना पड़ा।

मैं डोंगी से लटक गया। मैंने सांस ली। तब मैं अन्दर चढ़ गया। कुछ सांसें मैंने भरी और फिर कूद गया। मैं तैरकर नीचे पहुंचा। झरोखे के किनारे को मैंने अपनी उंगलियों से थामा और पकड़े रखा और रिंच से जितने ज़ोर की चोट मैं कर सकता था की। शीशे में से पानी में तैरती उस स्त्री को मैं देख सकता था। उसके बाल कभी उसके सिर से सटकर बंधे होंगे पर अब पानी में पूरे फैलकर तैर रहे थे। उसके एक हाथ में अंगूठियां दीख रही थीं। वह झरोखे से सटी हुई थी। मैंने शीशे पर दो बार चोट की। पर मैं उसमें दरार तक न डाल सका। अब मैं ऊपर आ गया और सोचने लगा कि मैं अब तब तक सतह पर नहीं आऊंगा जब तक सांस ही लेने की ज़रूरत न पड़ जाए।

मैं एक बार फिर नीचे गया और शीशे को तड़का दिया। जब मैं ऊपर आया तो मेरी नाक से खून निकल रहा था। मैं अपने नंग पैरों से उस जहाज़ के अगले हिस्से पर उसके नाम के अक्षरों पर खड़ा हो गया। मेरा सिर-भर बाहर निकला रहा। मैंने वहां आराम किया। तब मैं डोंगी तक तैरकर गया और उचककर उसके अन्दर पहुंच गया। वहां बैठकर अपने सिर की पीड़ा रुकने की प्रतीक्षा करने लगा। साथ ही मैं उस यन्त्र में से नीचे देखता भी रहा। लेकिन खून इतना निकल रहा था कि यन्त्र के शीशे को पोंछना पड़ता था। तब मैं डोंगी में उलटा लेट गया और खून को रोकने के लिए अपना हाथ मैंने नाक के नीचे रख लिया। मैं वहां उलटा लेटा रहा और सिर को मोड़कर ऊपर की ओर देखता भी रहा। लाखों चिड़ियां मेरे चारों ओर मंडरा रही थीं।

जब खून निकलना बन्द हो गया तो यन्त्र में से मैंने फिर देखा। डोंगी खेकर मैं नाव तक पहुंचा कि शायद रिंच से भारी कोई चीज़ वहां मिल सके। पर मुझे वहां कुछ भी नहीं मिल सका। यहां तक कि तली बीनने

का कांटा भी नहीं। मैं वापस आ गया। पानी बहुत साफ था। और रेत के उस सफेद तट में से निकलकर जो कुछ भी ऊपर उठ रहा था, वह सब दीख पड़ने लगा। मैंने शार्क मछलियां ढूंढ़ीं। पर वहां एक भी नहीं थी। शार्क बहुत दूर आगे देखी जा सकती थी। पानी बहुत अधिक साफ था। और रेत सफेद था। डोंगी पर एक छोटा लंगर था। मैंने इसे अलग कर लिया। सिरे पर आया और इसके साथ पानी में उतर गया। यह मुझे ठीक नीचे ले गया। झरोखे के पास से मैं गुज़रा। मैंने उसे झपटकर पकड़ा पर कोई भी चीज़ हाथ में न रुक सकी। मैं जहाज़ की चापनुमा बगल के साथ-साथ नीचे ही नीचे धंसता चला गया। लंगर को मुझे छोड़ देना पड़ा। एक ज़ोर की आवाज़ मैंने सुनी। जितने समय में मैं पानी की सतह पर आ सका वह मुझे एक वर्ष जितना लगा। डोंगी ज्वार के साथ आगे को बह गई थी। मैं तैरकर उस तक पहुंचा। मेरी नाक से निकलकर खून पानी में मिल रहा था। और मुझे खुशी थी कि वहां शार्क नहीं थी। लेकिन मैं बहुत थक गया था।

मुझे लगा कि मेरा सिर फट जाएगा। मैं डोंगी में लेट गया और आराम करने लगा। और तब खेकर वापस नाव पर चला गया। अपराह्न हो रहा था। रिंच लेकर एक बार फिर मैं नीचे गया पर कोई लाभ नहीं हो सका। वह रिंच बहुत हल्का था। डुबकी लगाने का तब तक कोई लाभ नहीं था जब तक कोई बड़ा हथौड़ा या कुछ कर सकने वाली कोई भारी चीज़ पास न हो। तब रिंच को मैंने कंटिये के साथ फिर बांधा। यन्त्र में से मैंने देखा और शीशे पर चोटें कीं और तब तक ठकठकाता रहा जब तक रिच खुलकर अलग नहीं हो गया। मैंने साफ और प्रत्यक्ष उसे जहाज़ के साथ-साथ नीचे फिसलते देखा। वह तली के बालुकच्छ पर जा गिरा और अन्दर प्रवेश कर गया। अब मैं कुछ भी नहीं कर सकता था। रिंच जा चुका था।

लंगर मैंने पहले ही खोल दिया था। मैं वापस नाव की की ओर खे चला। मैं इतना थक गया था कि डोंगी को नाव पर खींच तक नहीं पाया। सूर्य भी काफी नीचे आ चुका था। पक्षी सब जहाज़ को छोड़कर भाग रहे थे। मैं भी डोंगी को खींचता हुआ साउथ वेस्ट की की ओर बढ़ा। पक्षी मेरे आगे और पीछे बढ़ रहे थे। मैं काफी थक गया था।

उस रात तूफान चल पड़ा और एक सप्ताह तक चलता रहा। ऐसे में उस जहाज तक नहीं पहुंचा जा सकता था। नगर से आए लोगों ने मुझे बताया कि जिस व्यक्ति को मुझे चाकू से काटना पड़ा था, अपनी बांह खो देने के अतिरिक्त वह अब बिल्कुल ठीक था। मैं नगर वापस गया। वहां मुझे पांच सौ डालर के मुचलके से रोक रखा गया। सब ठीक ही हो गया क्योंकि उनमें कुछ का, जो मेरे मित्र थे, कहना था कि वह कुल्हाड़ी लिए मेरी ताक में है। लेकिन जब तक हम जहाज़ तक वापिस लौट सके यूनानियों ने उसे तोड़ डाला था और साफ कर डाला था। तिजोरी को उन्होंने बारूद से उड़ाया था। कोई नहीं जानता, कितना उन्हें मिला। जहाज़ में सोना था। और वह सभी उन्हें मिल गया। उन्होंने उसे एकदम धो-पोंछ डाला। मैं उस तक पहुंचा। पर एक खोटा सिक्का भी उसमें से मुझे नहीं मिला।

वह एक भीषण दुर्घटना का शिकार बना था। लोग कहते हैं, हवाना बन्दरगाह से वह बाहर निकला ही था कि तूफान में फंस गया। वह अन्दर नहीं आ सका अथवा मालिकों ने कप्तान को मौका ही नहीं दिया कि वह अन्दर आ सके। लोग कहते हैं, वह कोशिश करना चाहता था। पर उसे तूफान के साथ आगे बढ़ना पड़ा। अंधेरे में वे बढ़े जा रहे थे और रेबेका और टार्टगास के बीच की खाड़ी में से निकल जाने का यत्न कर रहे थे। तभी वह बालुकच्छ से टकरा गया। हो सकता है कि पतवार टूट गई हों। हो सकता है, वे शायद खे ही न रहे हों। लेकिन कुछ भी हुआ हो, वे जान ही नहीं पाए कि यह बालुकच्छ है और जब वह टकराया होगा तो कप्तान

ने आदेश दिया होगा कि भरत के हौज़ों को खोल दिया जाए जिससे वह स्थिर होकर बैठ जाए। लेकिन जिससे वह टकराया था वह बालुकच्छ था और जब उन्होंने हौज़ों को खाली किया तो पृष्ठभाग पहले और उसके बाद उसके लंगर-दण्ड अन्दर धंस गए। उसमें साढ़े चार सौ यात्री और मल्लाह थे। जब मैंने उसे देखा था तब वे सभी उसमें होंगे। जैसे ही वह टकराया होगा उन्होंने हौज़ों को खोल डाला होगा और जिस क्षण वह नीचे बैठा होगा उसी क्षण बालुकच्छ ने उसे अपने में समेट लिया होगा। तब उसके बायलर फट गए होंगे और यही वह स्रोत था जहां से वे टुकड़े बह-बहकर आ रहे थे। मज़ेदार बात थी कि वहां कोई शार्क नहीं थी। वहां कोई भी मछली नहीं थी। होती तो उस साफ-सफेद रेती पर दीख पड़ती।

पर अब वहां बहुत काफी मछलियां थीं। सबसे बड़ी किस्म की ज्यूफिश थी। जहाज़ का बड़ा भाग रेत के अन्दर था लेकिन ये सबसे बड़ी किस्म की ज्यू मछलियां जहाज़ के अन्दर रह रही थीं। इनमें कुछ तीन से चार सौ पौंड तक भारी होती हैं। कभी-कभी हम जाते हैं और कुछेक पकड़ लाते हैं। जहां यह जहाज़ है वहां से रेबेका की रोशनी दीख पड़ती है। अब वहां उसपर एक तैराक पीपा भी मिल सकता है। बालुकच्छ के ठीक अन्त पर और खाड़ी के सिरे पर वह स्थित है। वहां सें वे निकल जाते, पर लगभग सौ गज़ की चूक हो गई। अंधेरे में और तूफान में वे बस चूक गए। पानी जिस तरह पड़ रहा था उसमें रेबेका को वे देख नहीं सके। फिर इस तरह की स्थिति की उन्हें आदत भी तो नहीं थी। जहाज़ के कप्तान को उस तरह खे ले जाने का अभ्यास नहीं होता। उनका निश्चित मार्ग होता है और लोग कहते हैं कि एक प्रकार का दिशा-दर्शन वे लगा लेते हैं और वह स्वतः खेता चला जाता है। जब तूफान में वे बढ़े तब शायद जान नहीं पाए होंगे कि वे कहां हैं। हो सकता है शायद पतवार ही बिगड़ गई हो। कुछ भी हो, यदि एक बार वे खाड़ी में पहुंच जाते तो मैक्सिको पहुंचने तक कोई भी चीज़ उन्हें ऐसी न मिलती जिससे वे टकरा जाते। जब उस आंधी पानी में

वे टकराए तब कुछ इस तरह ज़रूर हुआ होगा कि कप्तान ने उन्हें हौज़ खोल देने के लिए कहा होगा। कोई भी व्यक्ति उस आंधी-पानी में डेक पर नहीं हो सकता था। हर कोई नीचे ही रहा होगा। डेक पर कोई ठहर नहीं सकता था। आप जानते हैं, वह बहुत ही तेज़ी से धंसा। इसलिए अन्दर कुछ हड़बड़ी के दृश्य ज़रूर हुए होंगे। उस रिंच को रेत में गायब होते मैंने देखा था। जब तक कप्तान इधर के समुद्र से परिचित न हो वह जान भी नहीं सकता था कि यहां बालू-कच्छ है। वह सिर्फ यही जानता था कि चट्टान यहां नहीं है। अपने कक्ष में बैठे-बैठे ही उसने सब कुछ समाप्त पाया होगा। जब जहाज़ अन्दर धंसा होगा तभी वह जान पाया होगा कि यह क्या है। मुझे आश्चर्य होता है, कितनी तेज़ी से वह धंस गया होगा। क्या उसका सहायक भी वहां उसके साथ था? क्या सोचते हैं आप? वे कक्ष के अन्दर ही रह गए या लोग उन्हें बाहर निकाल लाए? कई लाशें तो किसीको कभी मिली नहीं। एक भी नहीं। कोई तैरती भी नहीं मिली। तैराक पेटियों के सहारे भी दूर-दूर तक तैरे। अन्दर रहकर ही उन्होंने वह सब झेला होगा। कुछ भी हुआ हो, यूनानी सब कुछ ले गए। सब कुछ वे बहुत तेज़ी से आए होंगे। वे उसकी सफाई कर गए। पहले पक्षी वहां आए। तब मैं आया। तब यूनानी आए। और पक्षी भी मेरी अपेक्षा उस जहाज़ में से कुछ ज़्यादा ही लूट ले गए।

दूसरे देश में

पतझड़ के मौसम में वहां हमेशा लड़ाई होती थी लेकिन अब हम वहां नहीं जाते थे। मिलान में पतझड़ में सर्दी पड़ती थी और अंधेरा बड़ी जल्दी हो जाता था। तब बिजली की बत्तियां जल उठती थीं और खिड़कियों के भीतर झांकते हुए सड़क पर चलना बड़ा अच्छा लगता था। दुकानों के बाहर अनेक प्रकार के शिकारी जानवरों की खालें लटकी रहती थीं और लोमड़ियों की समूर पर बर्फ जम जाती थी और हवा उनकी पूंछ हिलाती रहती थी। हिरन की खाल कड़ी, भारी और खोखली लटकी रहती थी और हवा के कारण छोटी-छोटी चिड़ियों से आवाज़ होती थी और उनके पंख घूमते थे। पतझड़ के उस मौसम में बड़ी सर्दी थी और हवा पहाड़ों की ओर से आती थी।

हर दोपहर के बाद हम सभी अस्पताल पहुंच जाते थे और शाम का अंधेरा हो जाने पर कई रास्तों से अस्पताल पहुंचा जा सकता था। दो रास्ते नहरों के किनारे-किनारे लेकिन लम्बे थे। हां, अस्पताल में प्रवेश करने के लिए एक न एक नहर के किसी न किसी पुल को ज़रूर पार करना पड़ता था। तीन पुलों में से किसी एक को चुनना पड़ता था। एक पर बैठी एक औरत भुने हुए अखरोट बेचा करती थी। उसकी कोयले की आग के सामने खड़े होने पर गर्मी महसूस होती थी और बाद में जेब में पड़े अखरोट गर्म लगते थे। अस्पताल बहुत पुराना और बड़ा खूबसूरत था और एक फाटक में से घुसकर एक सहन पार करके दूसरी तरफ के एक फाटक में जाना पड़ता था। पुराने अस्पताल के पीछे ईंटों के बने नये क्वार्टर थे

और वहीं हम सब हर अपराह्न में मिला करते थे और जो भी विषय होता उसमें बड़ी रुचि दिखलाते थे और नम्रता-पूर्वक व्यवहार करते थे और उन मशीनों में बैठा करते थे जिनके कारण ही यह अन्तर था।

जिस मशीन में मैं बैठा था, डाक्टर ने वहां आकर मुझसे कहा, "युद्ध के पहले तुम्हें कौन-सा काम सबसे ज़्यादा पसन्द था? क्या तुम कोई खेल खेलते थे?"

मैंने कहा, "हां, फुटबाल।"

"बहुत ठीक," उसने कहा, "तुम पहले से कहीं अच्छा फुटबाल खेलने लायक हो जाओगे।"

मेरा घुटना मुड़ता नहीं था। वह घुटने से टखने तक बिल्कुल सीधा था और पिंडली नहीं थी। मशीन मेरे घुटने को मोड़ने और हिलाने-डुलाने के लिए थी जैसे तीन पहियों वाली साइकिल में होता है। घुटना अभी तक मुड़ता नहीं था और जब मोड़ने का मौका आता तो मशीन स्वयं लचक जाती थी। डाक्टर ने कहा, "यह सब गुज़र जाएगा। तुम एक सौभाग्यशाली नौजवान हो। किसी चैम्पियन की तरह तुम फिर फुटवाल खेलने लगोगे।"

अगली मशीन में एक मेजर था और उसका एक हाथ बच्चों जैसा था। डाक्टर जिस वक्त उसके हाथ का निरीक्षण कर रहा था, वह कनखियों से मुझे इशारे कर रहा था। उसका हाथ दो चमड़े के पट्टों के बीच में था, जो ऊपर-नीचे होते थे और कड़ी उंगलियों की तरह आवाज़ करते थे। उसने डाक्टर से कहा, "क्या मैं भी फुटबाल खेल सकूंगा, कैप्टेन डाक्टर?" वह बहुत बड़ा तलवारबाज़ था और युद्ध के पहले तो इटली का सबसे बड़ा तलवारबाज़ था।

पीछे के कमरे में अपने आफिस में डाक्टर गया और एक फोटोग्राफ़ लेकर आया। फोटोग्राफ़ एक हाथ का था जो सूखकर मेजर के हाथ के बराबर ही रह गया था, लेकिन मशीन का कोर्स पूरा करने के बाद वह कुछ

बड़ा हो गया था। मेजर अपने अच्छे हाथ से फोटोग्राफ पकड़कर उसे बड़ी सावधानी से देखने लगा। "घाव?" उसने पूछा।

"कोई मशीन की दुर्घटना," डाक्टर ने कहा।

"बड़ी मज़ेदार, बड़ी मज़ेदार," मेजर बोला, और फोटोग्राफ डाक्टर को वापस कर दिया।

"तुम्हें भरोसा है?"

"नहीं।" मेजर ने कहा।

लगभग मेरी ही उम्र के तीन लड़के रोज़ वहां आया करते थे। तीनों ही मिलान के थे और एक ने वकील, एक ने चित्रकार और एक ने सैनिक बनने का निश्चय किया था। मशीनों का काम खत्म हो जाने के बाद कभी-कभी हम साथ-साथ स्काला की बगल में स्थित कैफ़े कोवा तक जाते थे। हम कम्युनिस्टों की बस्ती में होकर छोटे रास्ते से जाते थे, क्योंकि हम चार होते थे। लोग हमें घृणा करते थे, क्योंकि हम अफसर थे और हमारे गुज़रते समय गालियां देते थे। कभी-कभी एक और लड़का हमारे साथ हो जाता था और इस तरह हम पांच हो जाते थे। वह अपने चेहरे पर रेशम का काला रूमाल बांधे रहता था, क्योंकि उसके नाक नहीं थी और उसका चेहरा दुबारा बनाया जाना था। वह मिलिटरी अकादमी से सीधे मोर्चे पर भेज दिया गया था और पहली बार मोर्चे की पहली पंक्ति में पहुंचने के एक घंटे के भीतर ही घायल हो गया था। उसका चेहरा दुबारा बनाया गया, लेकिन वह किसी प्राचीन वंश का था और उसकी नाक बिल्कुल ठीक नहीं हो पाई। वह दक्षिणी अमेरिका जाकर बैंक में काम करने लगा। लेकिन यह बहुत समय पहले की बात है और हममें से कोई भी नहीं जानता था कि आगे क्या होगा। तब हम केवल इतना ही जानते थे कि युद्ध हमेशा होता रहता है, लेकिन अब हमें उसमें नहीं शामिल होना।

अपने चेहरे पर काली रेशम की पट्टी बांधने वाले नव-युवक को छोड़कर हम सभीके पास एक-से तमगे थे। मोर्चे पर वह इतने दिनों रहा

ही नहीं था कि तमगा पा सकता। पीले चेहरे वाला लम्बा युवक, जो वकील बनना चाहता था, आदिति का लेफ्टिनेंट था और उसके पास तीन तमगे थे जबकि हम लोगों के पास सिर्फ एक-एक था। वह मौत के बीच लम्बे अरसे तक रहा था और अब ज़िन्दगी से अलग-सा हो गया था। दरअसल हम सभी थोड़े-थोड़े अलग हो गए थे और इसके सिवा हमें जोड़ने वाली कोई चीज़ नहीं रह गई थी कि हर अपराह्न में हम अस्पताल में मिलते थे। शहर के गुंडागर्दी वाले हिस्से में से होकर अंधेरे में हम कोवा की ओर जाते थे। वहां शराब की दुकानों से रोशनी और गीतों के स्वर बाहर आया करते थे। कभी-कभी हमें सड़क पर ही चलना पड़ता था, क्योंकि फुटपाथ पर स्त्री-पुरुष इतनी तादाद में इकट्ठे हो जाते थे कि उन्हें धक्का देकर ही हमें आगे बढ़ना पड़ता। उस समय हमें महसूस होता कि हम एक हो गए हैं और कुछ ऐसा हो गया है कि लोग हमसे घृणा करते हैं, कि कुछ समझते नहीं।

जहां तक हम सबका सवाल है, हम सभी कोवा को खूब समझते थे। वहां आराम था, गर्मी थी, ज़्यादा रोशनी नहीं होती थी। दिन के विशेष घण्टों में वह आवाज़ों और धुएं से भरा रहता था। मेज़ों पर हमेशा लड़कियां बैठी रहती थीं और दीवार के सहारे रैक पर सचित्र अखबार रखे रहते थे। 'कोवा' की लड़कियां बडी देशभक्त थीं। और मैंने पाया कि इटली में सबसे ज्यादा देशभक्त कैफे की लड़कियां ही होती हैं—मुझे विश्वास है कि वे अब भी देशभक्त हैं।

शुरू-शुरू में वे मेरे तमगों के बारे में बड़ी शालीनता से पेश आते थे और पूछते थे कि उन्हें पाने के लिए मैंने क्या किया था। मैंने उन्हें काग़ज़ दिखाए जो बड़ी खूबसूरत भाषा में लिखे गए थे, लेकिन विशेषणों को निकाल देने पर उनमें सिर्फ यही लिखा था कि अमेरिकन होने के कारण मुझे तमगे दिए गए थे। इसके बाद मेरे प्रति उनका रवैया थोड़ा बदल गया, यद्यपि बाहर वालों के मुकाबले में मैं अब भी उनका दोस्त था। मैं

उनका दोस्त ज़रूर था, लेकिन मेरे काग़ज़ उनके द्वारा पढ़ लिए जाने के बाद मैं उनमें से एक नहीं रह गया था क्योंकि उनकी कहानी दूसरी थी और अपने तमगे पाने के लिए उन्होंने दूसरी ही तरह के काम किए थे। यह सच है कि मैं घायल हुआ था, लेकिन हम सभी जानते थे कि घायल होना कुल मिलाकर महज़ एक दुर्घटना है। फिर भी मुझे अपने फीतों पर कोई शर्म न थी और कभी-कभी शराब पीने के बाद मैं अपनी कल्पना में वही सब किया करता था जो उन लोगों ने अपने तमगे पाने के लिए किया था। लेकिन रात में जब ठंडी हवा चलती होती और दुकानों की खिड़कियां बन्द हो जातीं, सूनी सड़कों पर सड़क की बत्तियों के पास चलता हुआ मैं सोचता रहता था कि मैं कभी भी वैसे काम नहीं कर सकता था। मैं मरने से डरता था। मैं कभी-कभी रात में बिस्तर पर लेटा रहता था, मौत से डरता और सोचता हुआ कि अगर मुझे फिर से मोर्चे पर भेज दिया जाए तो मेरा क्या हाल होगा।

तमगे वाले तीनों युवक शिकारी बाज़ों जैसे थे; और मैं बाज़ नहीं था। यद्यपि जिन्होंने कभी शिकार नहीं किया उन्हें मैं भी बाज़ ही मालूम पड़ता था। वे तीनों इसे भली प्रकार जानते थे, इसलिए हम अलग हो गए। लेकिन उस नौजवान के साथ मेरी अच्छी दोस्ती बनी रही जो मोर्चे पर पहले दिन घायल हो गया था। अब कभी भी वह समझ नहीं पाएगा कि उसका क्या हश्र होता। इसलिए उसे कुछ भी नहीं समझा जा सकता था और मैं उसे पसन्द करता था क्योंकि मेरा विचार था कि वह बाज़ भी नहीं बन सकता था।

मेजर, जो कभी बड़े कुशल तलवारबाज़ थे, बहादुरी में विश्वास नहीं करते थे। जब हम मशीनों में बैठे होते थे तो अपना अधिकांश समय मेरी व्याकरण सुधारने में लगाते थे। वे मेरे इटालियन में बोलने की प्रशंसा करते थे और हममें बड़ी आसानी से बातें होती थीं। एक दिन मैंने कहा था कि इटालियन मुझे इतनी आसान भाषा मालूम होती है कि ज्यादा

मज़ा नहीं आता। इसमें सभी कुछ कहना इतना आसान है। "ओह, हां," मेजर बोले, "तो फिर तुम व्याकरण का प्रयोग क्यों नहीं सीखने लगते?" इसलिए हमने व्याकरण के प्रयोग का मसला उठाया और जल्दी ही इटालियन इतनी कठिन भाषा मालूम पड़ने लगी कि बिना ठीक से व्याकरण सीखे उनसे बातें करने में मुझे डर लगने लगा।

मेजर बड़ी नियमितता से अस्पताल आते थे। मैं नहीं सोचता कि किसी दिन वे नहीं आए होंगे, हालांकि मुझे विश्वास है कि उन्हें मशीनों पर भरोसा नहीं था। एक समय था जब हममें से कोई भी मशीनों पर विश्वास नहीं करता था और एक दिन मेजर ने कहा था कि यह सब बकवास है। मशीनें नई थीं और हमें ही उनकी उपयोगिता साबित करनी थी। यह एक मूर्खतापूर्ण विचार था। उनका कहना था, "किसी भी सिद्धान्त की तरह यह भी एक और सिद्धान्त है।" मैं व्याकरण नहीं सीख सका था और उनका कहना था कि मैं एक मूर्ख व्यक्ति हूं और मेरे साथ उन्होंने अपना समय बरबाद किया है। वे छोटे कद के आदमी थे और अपना हाथ मशीन में डाले अकड़कर बैठा करते थे और सीधे दीवार की ओर देखा करते थे। पट्टे, जिनमें उनकी अंगुलियां होती थीं, ऊपर-नीचे उठते-गिरते रहते थे।

"लड़ाई खत्म हो जाएगी। अगर हो गई तो तुम क्या करोगे?" उन्होंने पूछा, "व्याकरण के अनुसार बोलोगे?"

"अमेरिका लौट जाऊंगा।"

"तुम विवाहित हो?"

"नहीं, पर कर लूंगा।"

"भारी मूर्खता करोगे," वे बोले। वे बड़े क्रोधित मालूम होते थे। "पुरुष को कभी शादी नहीं करनी चाहिए।"

"क्यों, सिनारे मैगॉयर?"

"सिनारे मैगॉयर मत कहो मुझे।"

"पुरुष को शादी क्यों नहीं करनी चाहिए?"

"नहीं करनी चाहिए, नहीं करनी चाहिए," वे गुस्से से बोले, "वह अपना सब कुछ खो देता है इसलिए उसे स्वयं को खोने की स्थिति में नहीं रखना चाहिए। उसे स्वयं को खोने की स्थिति में नहीं रखना चाहिए। उसे ऐसी चीजें पानी चाहिए जिन्हें वह खो न सके।"

वह बड़े गुस्से और तिक्तता से बोल रहे थे और बोलते समय अपने सामने सीधे देख रहे थे।

"लेकिन क्या यह ज़रूरी है कि वह खोए ही?"

"वह खो देगा," मेजर ने कहा। वे दीवार की ओर देख रहे थे। तब उन्होंने मशीन को देखा और झटका देकर अपना हाथ पट्टों से बाहर निकाल लिया और अपनी जांघ पर ज़ोर से दे मारा। "वह खो देगा," वे लगभग चिल्ला पड़े, "मेरे साथ बहस मत करो!" तब उन्होंने मशीनें चलाने वाले नौकर को बुलाया, "यहां आकर इस बेकार चीज़ को बन्द करो।"

वे दूसरे कमरे में हल्के इलाज और मालिश के लिए चले गए। तब मैंने उन्हें डाक्टर से पूछते हुए सुना कि क्या वे उनका टेलीफोन इस्तेमाल कर सकते हैं। और तब दरवाज़ा बन्द हो गया। जब वे फिर कमरे में आए तो मैं दूसरी मशीन में बैठा था। वे अपना लबादा और टोपी पहने थे। वे सीधे मेरी मशीन के पास आए और मेरे कंधे पर हाथ रखकर खड़े हो गए।

"मुझे दुःख है," उन्होंने कहा और अपने ठीक हाथ से मेरा कंधा थपथपाया, "मैं ऐसा असभ्य व्यवहार नहीं करता। कुछ दिन पहले ही मेरी पत्नी की मृत्यु हुई है। मुझे माफ करो।"

"ओह," मैंने कहा। मुझे उनके लिए दुःख हुआ। "मुझे बहुत दुःख है।"

वे अपना निचला ओठ काटते खड़े रहे। "बड़ा मुश्किल है," उन्होंने कहा, "मैं अपने को समझा नहीं पाता।"

वे मेरे पार खिड़की के बाहर देख रहे थे। तब वे रोने लगे। "मैं किसी भी तरह अपने को समझा नहीं पाता।" उन्होंने कहा और उनका स्वर फंस

गया। फिर रोते हुए, सिर ऊपर उठाए पर कुछ भी न देखते हुए, सैनिक के समान तने, गालों पर आंसू बहाते और ओठ काटते वे मशीनों के पास से गुज़रते हुए दरवाज़े से बाहर चले गए।

डाक्टर ने मुझे बताया कि मेजर की पत्नी, जो बहुत कमसिन थी और जिसके साथ मेजर ने सेना से अन्तिम रूप से निकाले जाने के बाद ही विवाह किया था, निमोनिया की बलि चढ़ गई थी। वह सिर्फ कुछ दिन बीमार रही थी। उसकी मृत्यु की संभावना किसीको न थी। मेजर तीन दिन तक अस्पताल नहीं आए थे। इसके बाद वे ठीक समय पर आ पहुंचे। उनकी वर्दी की बांह पर एक काली पट्टी बंधी थी। जब वे लौटकर आए तो दीवारों पर चारों ओर फ्रेम किए हुए फोटोग्राफ लगे थे, जिनमें मशीनों से इलाज किए जाने के पहले और बाद के अनेक प्रकार के घावों की तस्वीरें थीं। जिस मशीन का प्रयोग मेजर करते थे उसके सामने उन्हींके हाथों जैसे हाथों के तीन फोटोग्राफ थे जो बिल्कुल ठीक हो गए थे। मैं नहीं जानता कि डाक्टर ने उन्हें कहां से प्राप्त किया। मैं हमेशा यही समझता था कि उन मशीनों का प्रयोग करने वाले हम पहले आदमी थे। फोटो-ग्राफों से मेजर पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता था, क्योंकि वे सिर्फ खिड़की से बाहर देखा करते थे।

अब ज़रा मैं सो लूं

उस रात हम कमरे में फर्श पर लेटे थे और मैं रेशम के कीड़ों को खाते हुए सुन रहा था। शहतूत के पत्तों से भरे चारा-दानों में रेशमी कीड़ों को खिलाया जा रहा था। रात भर उनके खाने और पत्तों में उनके बीट छोड़ने की आवाजें सुनी जा सकती थीं। सोना मैं स्वयं नहीं चाहता था। एक लम्बे समय से मेरे मन में यह बैठ गया था कि यदि कभी भी अंधेरे में मैंने आंखें बन्द कीं और स्वयं को नींद के हवाले किया तो मेरी रूह मेरे शरीर को छोड़कर चली जाएगी। एक लम्बे समय से—तभी से जब मैं रात के समय एक विस्फोट का शिकार हुआ था—मैं इस मनःस्थिति में था और रूह को अपने में से बाहर जाते, दूर चले जाते और फिर वापस आ जाते महसूस करता था। मैं कोशिश करता था कि इस बारे में कभी कुछ न सोचूं, लेकिन रातों में जैसे ही मैं सोने को होता यह निकलकर जाने लगती और बड़े प्रयास के बाद ही मैं इसे रोक पाता। इस प्रकार आज जहां मुझे निश्चय-सा है कि दरअसल यह निकलकर जाने वाली थी नहीं, वहां उस समय, उन गर्मियों में ऐसा प्रयोग करने के लिए मैं तैयार नहीं था।

जागते समय अपने को व्यस्त रखने के लिए मैं कितने ही तरीके अपनाता था। लड़कपन में एक ट्राउट मछलियों के सोते पर मैं मछलियां पकड़ा करता था। मैं उसके बारे में सोचता और मन ही मन बहुत ध्यानपूर्वक उसके पूरे लम्बे तट पर मछलियां पकड़ता। लकड़ी के सभी पुलों के नीचे तट के सभी मोड़ों पर, गहरे गढ़ों में और साफ छिछले विस्तारों पर मैं मछलियां पकड़ता। कभी तो मछलियां फंस जातीं और कभी वे निकल जातीं। दोपहर होने पर खाना खाने के लिए मैं शिकार बन्द कर देता।

कभी मैं सोते के ऊपर पड़े एक लट्ठे पर बैठकर खाता और कभी किसी ऊंचे तट पर पेड़ के नीचे बैठकर। पर सदा ही मैं खाना बहुत धीरे खाता और खाते-खाते अपने नीचे बहते सोते को देखता जाता। अक्सर चारा चुक जाता, क्योंकि चलते समय तम्बाकू के एक डिब्बे में सिर्फ दस कीड़े लेकर मैं चला करता था। जब मैं उन सबको निपटा चुकता तो मुझे और कीड़े ढूंढ़ने पड़ते। कभी-कभी सोते के तट पर जहां दियार के पेड़ धूप को रोके रखते थे, खोदना बहुत ही मुश्किल हो जाता था। वहां घास नहीं होती थी। बस, नंगी-गीली धरती ही रहती थी और अक्सर कीड़े नहीं मिल पाते थे। वैसे कोई न कोई चारा सदा मिल ही जाता था। पर एक बार दलदल में कोई कीड़ा मुझे न मिल सका और उसी समय पकड़ी एक मछली को ही मुझे काटना पड़ा और उसे चारे के रूप में इस्तेमाल करना पड़ा।

कभी-कभी घास के दलदली मैदानों में घांस के बीच या फर्न घास के नीचे कीड़े मुझे मिल जाते थे और मैं उनका इस्तेमाल कर लेता था। वहां गुबरैले थे, और घास के तिनकों जैसे पैरों वाले कीड़े थे। पुराने गले लट्ठों में से भी कुछ ग्रब कीड़े मिल जाते थे। ग्रब भूरे नुकीले सिरों वाले सफेद कीड़े होते हैं। ये कांटे पर टिक नहीं पाते थे और हवा में छूटकर ठंडे पानी पर गिर पड़ते थे। लट्ठों के नीचे चींचड़े मिल जाते थे और कभी-कभी केंचुए भी, जो लट्ठे के उठाए जाते ही धरती के भीतर सरक जाते थे। एक बार एक पुराने लट्ठे के नीचे मिली एक सरटक का इस्तेमाल मैंने किया था। सरटक बहुत छोटी और साफ और चुस्त और एक प्यारे रंग की थी। उसके नन्हे-नन्हे पैर थे जो कांटे से चिपके रहने की कोशिश करते थे। उस एक बार के बाद सरटक का प्रयोग मैंने कभी नहीं किया। वैसे वे अक्सर मुझे मिल जाती थीं। झींगुर कांटे के चारों ओर ऐसा नाच-सा करते थे कि मैं उनका भी प्रयोग नहीं करता था।

सोता कभी-कभी घास के खुले मैदान के बीच से होकर बहता। सूखी घास में मैं फतिंगे पकड़ता और चारे के रूप में उनका इस्तेमाल करता।

कभी-कभी मैं फतिंगों को पकड़ता और उन्हें पानी में उछाल देता और उन्हें सोते पर तैरते और बहते और धारा के बहाव के विरोध में सतह पर नाचते देखता और तभी देखता कि एक ट्राउट मछली झपटी और वह गायब हो गया। कभी-कभी रात में चार या पांच अलग-अलग सोतों पर मैं मछली पकड़ता। उनके उद्गम के निकट से निकट जहां तक मैं पहुंच सकता, वहीं से मैं प्रारम्भ करता और मछली पकड़ता हुआ नीचे की ओर बढ़ता। जब बहुत जल्द ही मैं अन्त तक पहुंच जाता और समय न बीतता तो मैं मछली पकड़ना फिर शुरू कर देता और जहां वह झील में गिर रहा होता वहां से प्रारम्भ करता। मछली पकड़ता हुआ मैं वापस उद्गम की ओर बढ़ता और जो मछलियां नीचे आते समय छूट गई थीं उन सबको पकड़ने की कोशिश करता। कुछ रातों में मैं काल्पनिक सोतों का निर्माण भी करता था और उनमें कुछ तो बड़े ही आकर्षक होते थे। तब ऐसा लगता था जैसे मैं जाग रहा हूं और सपना ले रहा हूं। उनमें से कुछ सोते मुझे अभी तक याद हैं और मैं समझता हूं कि मैंने उनमें से मछलियां पकड़ी हैं। मेरी जानकारी के असल सोतों के साथ वे रल-मिल गए हैं। उन सबके नाम भी मैंने रखे हैं और रेल पर चढ़कर और कभी-कभी मीलों पैदल चलकर मैं उन तक पहुंचा हूं।

पर कुछ रातों में मैं मछलियां न पकड़ सकता और उन रातों में मैं सुन्न जगा पड़ा रहता और बार-बार प्रार्थनाएं करता और जिन-जिन लोगों से कभी भी मैं परिचित रहा था उन सबके लिए प्रार्थनाएं करने की कोशिश करता। इसमें बहुत सारा समय लग जाता। जिनसे कभी भी आप परिचित रहे हैं उन सबको याद करने की कोशिश यदि आप करें और अपनी याद की सबसे पहली घटना तक वापस लौटें तो इसमें समय तो लगेगा ही। मेरे लिए सबसे पहली चीज़ थी उस घर का एक कोठा जिसमें मैं पैदा हुआ था और जहां मेरे माता-पिता की शादी का केक एक टीन के डिब्बे में रखा एक कड़ी से लटका हुआ था। वहीं कोठे में कुछ मर्तबान थे जिनमें सांप

और अन्य नमूने के जन्तु रखे थे जिन्हें लड़कपन में मेरे पिता ने इकट्ठा किया था और स्पिरिट में संरक्षित कर रखा था। इनमें कुछ मर्तबानों की स्पिरिट उड़ गई थी। इसलिए कुछ सांपों और जन्तुओं की पीठें खुली रहने के कारण सफेद पड़ गई थीं। अब यदि इतनी दूर पीछे तक आप सोचें तो बहुत सारे लोग आपको याद आ जाएंगे। और यदि इन सबके लिए आप प्रार्थनाएं करें और प्रत्येक के लिए कहें कि राम उन्हें सुखी रखें और श्याम उनका भला करें तो इसीमें एक लम्बा समय बीत जाएगा। और अन्त में दिन फूट आएगा। और तब यदि किसी ऐसी जगह आप हुए जहां दिन के प्रकाश में सोया जा सके तो आप भले ही सो भी जाएं।

उन रातों में, जो कुछ भी मेरे साथ बीता था, उस सबको याद करने की कोशिश मैं करता था। जब मैं लड़ाई पर गया था, उससे ठीक पहले से मैं शुरू करता था और याद करता हुआ एक से दूसरी चीज़ तक वापस बढ़ता चलता था। मैं देखता कि अपने दादा के घर के उस कोठे तक ही मैं अपनी याद को पहुंचा पाता था। तब मैं वहीं से फिर शुरू करता और याद करता हुआ इस ओर को बढ़ता और युद्ध तक पहुंच आता था।

मुझे याद है, जब मेरे दादा मर गए तो उस घर से एक नये घर में हम चले आए थे। उसका नक्शा मेरी मां ने तैयार किया था और उसीने उसे बनाया था। जिन्हें लाया नहीं जा सकता था ऐसी कितनी ही चीजें पीछे के आंगन में जला डाली गई थीं। मुझे याद है कि कोठे में से लाकर उन मर्तबानों को याग में फेंक दिया गया था। लपटों में वे धक् धक् जले थे और स्पिरिट में से आग की लपटें ऊंची उठी थीं। पिछवाड़े के आंगन में सांपों का आग में जलना मुझे याद है। लेकिन इस याद में आदमी नहीं थे, बस चीजें थीं। इन चीज़ों को किसने जलाया, मैं यह भी याद नहीं कर पाता था। और मैं तब तक याद करता जाता था जब तक लोग छू न जाते थे। तब मैं रुक जाता था और उनके लिए प्रार्थना करने लगता था।

नये घर के बारे में मुझे याद है कि मेरी मां सदा ही चीज़ों को बाहर फेंकती रहती थी और खूब सफाई करती रहती थी। एक बार मेरे पिता शिकार पर गए हुए थे। मां ने तहखाने की पूरी सफाई कर डाली और जो कुछ वहां रखा जाना नहीं चाहिए था, उसे जला डाला। जब मेरे पिता लौटे और अपनी बग्घी से उतरे और घोड़े को उन्होंने रोका तो घर के साथ वाली सड़क के बीचोंबीच आग अब भी जल रही थी। मैं उनकी ओर भागकर गया। उन्होंने अपनी बन्दूक मुझे पकड़ा दी और आग पर नज़र डाली। "यह क्या है?" उन्होंने पूछा।

"मैं ज़रा तहखाने को साफ कर रही थी।" मेरी मां ने दालान में से उत्तर दिया। वह वहां खड़ी मुस्कराकर उनका स्वागत कर रही थी। मेरे पिता ने आग की ओर देखा और किसी चीज़ को पैर से ठोका। तब वे उसपर झुक गए और उन्होंने कोई चीज़ राख में से उठा ली। "निक, एक हेंगा लाओ।" उन्होंने मुझसे कहा। मैं तहखाने में गया और एक हेंगा ले आया। मेरे पिता ने राख को बहुत ध्यान-पूर्वक कुरेदा। पत्थर की कुल्हाड़ियां, खाल अलग करने के लिए पत्थर के बने चाकू, तीरों की नोकें बनाने वाले औज़ार और मिट्टी के बर्तन और तीरों के कितने ही फलक उन्होंने बाहर खींच लिए। ये सब चीजें जलने के कारण काली पड़ गई थीं और टूट-फूट गई थीं। इन सबको उन्होंने बहुत ध्यान-पूर्वक हेंगे से बाहर निकाला और सड़क के साथ घास पर फैला दिया। चमड़े के केस में लिपटी उनकी बन्दूक और शिकार के थैले अब भी वहीं घास पर रखे थे जहां बग्घी से नीचे उतरते हुए वे छोड़ आए थे।

"बन्दूक और ये थैले अन्दर ले जाओ, और निक, एक काग़ज़ ले आओ," उन्होंने कहा। मेरी मां घर के अन्दर जा चुकी थी। मैंने बन्दूक उठाई। वह बहुत भारी थी और मेरी टांगों पर लगती थी। मैंने शिकार के दोनों थैले उठाए और घर की ओर चला। "इन्हें एक-एक करके ले जाओ।" मेरे पिता ने कहा, "एक बार में इतना ज़्यादा ले जाने की

कोशिश मत करो।" थैले मैंने नीचे रख दिए और बन्दूक को ले चला। अपने पिता के दफ्तर में रखे अखबारों के ढेर में से एक मैं निकाल लाया। काले पड़ गए और चटख गए पत्थर के उन सभी औज़ारों को मेरे पिता ने उस कागज़ पर रखा और लपेट दिया। "कितने बढ़िया तीर, सब नष्ट हो गए," उन्होंने कहा। कागज़ का वह बंडल लिए वे अन्दर चले गए और मैं बाहर घास पर शिकार के दोनों थैलों के पास ठहर गया। कुछ देर बाद मैं उन्हें भी अन्दर उठा ले गया। यह सब याद करते समय सिर्फ दो ही व्यक्ति उभरते थे और उन दोनों के लिए मैं प्रार्थना करता था।

किन्हीं रातों में, अपनी प्रार्थना के शब्दों को भी मैं याद न रख पाता। मैं सिर्फ यहीं तक पहुंच पाता, "जैसे स्वर्ग में वैसे ही धरती पर..." और तब मुझे नये सिरे से शुरू करना पड़ता। पर उससे आगे बढ़ सकने में मैं असमर्थ ही रहता। तब मुझे यह समझ लेना पड़ता कि मैं याद नहीं कर सकता। उस रात मुझे प्रार्थना करना त्याग देना पड़ता और मैं किसी और चीज़ को आज़माता। कुछ रातों में मैं दुनिया के सभी पशुओं को नाम ले-लेकर याद करने की कोशिश करता। उसके बाद चिड़ियों और मछलियों को और उसके बाद देशों को और शहरों को और भोजन की किस्मों को और शिकागो की जितनी सड़कों के नाम मैं याद कर सकता उन सबको मैं याद करता और जब मैं आगे कुछ भी याद कर ही न पाता तब मैं बस, सुनता। और ऐसी एक भी रात मुझे याद नहीं है जब कुछ न कुछ आप सुन न पाते हों। अगर रोशनी मिल सकती तो सोने में मुझे डर न लगता क्योंकि मैं जानता था कि रूह सिर्फ तभी निकलकर जाएगी जब अंधेरा होगा। कितनी ही रातों में मैं ऐसी जगहों पर होता जहां मुझे रोशनी मिल सकती। तब मैं सो जाता क्योंकि मैं लगभग सदा ही थका होता था और अक्सर बहुत निंदियाया रहता था। मुझे निश्चय है कि कितनी ही बार मैं बिना जाने ही सो गया था। पर जानते हुए मैं कभी भी नहीं सोया। और इस रात मैं रेशम के कीड़ों को खाते सुनता रहा। रात के समय रेशम के

कीड़ों को खाते हुए बहुत ही साफ सुना जा सकता है। मैं अपनी आंखें खोले पड़ा था और सुन रहा था।

कमरे में सिर्फ एक आदमी और था और वह भी जगा हुआ था। एक लम्बे समय से उसका जगा रहना मेरे कानों में पड़ रहा था। जितनी खामोशी से मैं पड़ा रह सकता था, वह नहीं रह सकता था। शायद जागते रहने का उतना अधिक अभ्यास उसे नहीं था। सूखी घास पर कम्बल बिछाए हम लेटे थे और जब वह हरकत करता तो घास चरचराती थी। लेकिन रेशम के कीड़े हमारे द्वारा किए गए किसी भी शोर से भयभीत नहीं थे और स्थिरतापूर्वक खाए जा रहे थे। बाहर, लाइनों से लगभग सात किलोमीटर पीछे से रात का शोर आ रहा था। लेकिन वह शोर यहां अंधेरे कमरे के इस हलके शोर से बहुत भिन्न था। कमरे के उस दूसरे आदमी ने चुप-चाप पड़े रहने की कोशिश की। तब वह फिर हिला-जुला। मैं भी हिला जिससे वह जान जाए कि मैं भी जाग रहा हूं। वह शिकागो में दस वर्षों तक रहा था। 1914 में जब अपने परिवार से मिलने आया तब उसे सिपाही भर्ती कर लिया गया था। उसे एक अर्दली के रूप में मुझे सौंपा गया था। क्योंकि वह अंग्रेज़ी बोल सकता था। मैंने महसूस किया कि वह सुन रहा है। इसलिए कम्बलों में मैं फिर कसमसाया।

"श्री टिण्टे, क्या आपको नींद नहीं आ रही है?" उसने पूछा।

"नहीं।"

"नींद मुझे भी नहीं आ रही है।"

"बात क्या है?"

"पता नहीं, मैं सो नहीं पा रहा हूं।"

"तबीयत ठीक है न?"

"एकदम। मैं एकदम ठीक हूं। बस, सो ही नहीं पा रहा हूं।" "तुम कुछ देर बात करना चाहते हो?" मैंने पूछा।

"ज़रूर। लेकिन इस बेहूदा जगह बात की भी क्या जा सकती है?"

"जगह तो यह काफी अच्छी है।" मैंने कहा।

"हां, हां।" वह बोला, "ठीक ही है।"

"कुछ शिकागो के बारे में बताओ।" मैंने कहा।

"वाह!" वह बोला, "सभी कुछ तो एक बार बता चुका हूं।"

"बताओ, तुम्हारी शादी कैसे हुई थी।"

"बताया तो था।"

"सोमवार को जो चिट्ठी तुम्हें मिली थी, वह उसीकी थी?"

"और क्या। वह मुझे लगातार लिखती है। उस जगह से वह अच्छा पैसा कमा रही है।"

"लौटोगे तो एक बढ़िया जगह तुम्हारे पास होगी।"

"निस्सन्देह। वह उसे खूब चला रही है। उससे वह खासा पैसा बना रही है।"

"क्यों, बात करके उन लोगों को तो हम नहीं जगा देंगे?"

मैंने पूछा।

"नहीं, वे नहीं सुन सकते। फिर वे सुअरों की-सी गहरी नींद सोते हैं। मैं उनसे भिन्न हूं।" उसने कहा।" मैं हड़बड़ा उठता हूँ।"

"धीमे बात करो।" मैंने कहा, "सिगरेट पिओगे?"

हमने चतुराई के साथ अंधेरे में धूम्रपान किया।

"श्री टिण्टे, आप ज्यादा तो नहीं पीते?"

"नहीं, पीना मैंने अभी कम किया है।"

"ठीक।" वह बोला, "फिर इससे कोई फायदा भी तो नहीं है। मैं समझता हूं क्योंकि आपको मिलती है इसलिए इसकी कमी आप महसूस नहीं करते। क्या कभी आपने उस अंधे आदमी के बारे में सुना है जो इसलिए नहीं पीता था क्योंकि वह धुएं को निकलते देख नहीं सकता था।"

"मुझे विश्वास नहीं होता।"

"मैं स्वयं भी इसे बकवास ही मानता हूं।" उसने कहा, "यह बात मैंने कहीं सुनी थी। आप जानते हैं, बातें कानों में पड़ ही जाती हैं।"

हम दोनों खामोश हो गए और मैं रेशम के कीड़ों की आवाजें सुनने लगा।

"आप इन कम्बख्त रेशम के कीड़ों की आवाजें सुन रहे हैं।" उसने पूछा, "आप इन्हें चबाते तक सुन सकते हैं।"

"मज़ेदार बात है।" मैंने कहा।

"श्री टिण्टे, क्या सचमुच ही कोई बात है जिससे आप सो नहीं पा रहे हैं? सोते मैंने आपको कभी भी तो नहीं देखा है। जब से मैं आपके साथ हूं, किसी रात भी आप सोए नहीं हैं।"

"जान, मैं कुछ कह नहीं सकता।" मैं बोला, "पिछले बसंत के शुरू में मैं काफी चक्कर में पड़ गया था और रात में वही कुछ मुझे परेशान करता है।"

"ठीक मेरी तरह ही।" उसने कहा, "इस लड़ाई में मुझे फंसना ही नहीं चाहिए था। मैं बहुत घबरा जाने वाला आदमी हूं।"

"हो सकता है, हालत बेहतर हो जाए।"

"अच्छा श्री टिण्टे, आप इस लड़ाई में भला किसलिए शामिल हुए थे? यों ही?"

"मुझे पता नहीं, जान, उस समय मैं शायद चाहता था।"

"चाहते थे?" वह बोला, "यह तो एक बड़ा अजीब कारण है।"

"हमें इतनी ज़ोर से बातें नहीं करनी चाहिए।"

"वे तो ठीक सुअरों की तरह सोते हैं।" वह कह उठा।" फिर अंग्रेज़ी वे समझ नहीं सकते। उन्हें कुछ भी तो पता नहीं है। जब लड़ाई खत्म हो जाएगी और हम वापस अमेरिका चले जाएंगे तब आप क्या काम करेंगे?"

"मुझे एक अखबार में जगह मिल जाएगी।"

"शिकागो में?"

"शायद।"

"कभी आप पढ़ते हैं, यह भला आदमी ब्रिसबेन क्या लिखता है। मेरी पत्नी उसे कतर लेती है और मुझे भेज देती है।"

"बहुत खूब।"

"क्या आप कभी उससे मिले हैं?"

"नहीं, पर मैंने उसे देखा है।"

"मैं उससे मिलना चाहूंगा। वह बढ़िया लिखता है। मेरी पत्नी अंग्रेज़ी नहीं पढ़ सकती पर अखबार ऐसे लेती है जैसे कि मैं घर पर ही हूं। सम्पादकीय का और खेलों का पृष्ठ वह काट लेती है और मुझे भेज देती है।"

"तुम्हारे बच्चे कैसे हैं?"

"एकदम ठीक हैं। एक लड़की तो अब चौथी कक्षा में है। जानते हो श्री टिण्टे, यदि ये बच्चे न होते तो मैं इस समय आपका अर्दली न होता। अधिकारी मुझे पूरे समय मोर्चे पर ही रखते।"

"मुझे खुशी है कि बच्चे हैं।"

"मुझे भी है। बहुत ही अच्छे बच्चे हैं वे। लेकिन मैं एक लड़का चाहता हूं। तीन लड़कियां और लड़का एक भी नहीं। बड़ा ही बुरा लगता है।"

"तुम सोने की कोशिश क्यों नहीं करते?"

"नहीं, अब मैं सो नहीं सकता, श्री टिण्टे। अब मेरी नींद उचट गई है। फिर मैं सोचता हूं आप भी तो सो नहीं रहे हैं।"

"सब ठीक हो जाएगा, जान।"

"ज़रा सोचिए, आप जैसे जवान आदमी को भला नींद क्यों न आए।"

"मैं ठीक हो जाऊंगा। ज़रा देर तो लगती ही है।"

"आपको ठीक होना होगा। जो व्यक्ति सो नहीं सकता वह ठीक नहीं हो सकता। क्या आपको किसी बात की चिन्ता है? क्या आपके मन पर कोई बोझ है?"

"नहीं जान, ऐसी तो कोई बात नहीं है।"

"श्री टिण्टे, आपको शादी कर लेनी चाहिए। तब आप चिन्ता नहीं करेंगे।"

"कह नहीं सकता।"

"शादी आपको कर लेनी चाहिए। कोई अच्छे पैसे वाली, बढ़िया-सी इतालवी लड़की ही क्यों नहीं चुन लेते! जिसे चाहो वही आपको मिल सकती है। आप जवान हैं, अच्छे तमगे आपको मिले हैं और आप शानदार लगते हैं। कितनी ही बार आप घायल भी हुए हैं।"

"मैं यह भाषा अच्छी तरह नहीं बोल सकता।"

"अच्छी तो बोल लेते हो। फिर, भाषा बोलने को मारो गोली। उनसे कोई बातें थोड़े ही करनी हैं। करनी तो शादी है।"

"मैं इस बारे में सोचूंगा।"

"कुछ लड़कियों को आप जानते तो हैं न?"

"हां-हां।"

"तो ठीक है। जिसके पास सबसे ज़्यादा पैसा हो, उससे शादी कर डालिए। इनका पालन-पोषण इधर जिस ढंग से किया जाता है, उससे ये सभी अच्छी पत्नी सिद्ध होंगी।"

"मैं इस बारे में सोचूंगा।"

"सोचो मत श्री टिण्टे, कर डालो।"

"ठीक है।"

"आदमी की शादी हो ही जानी चाहिए। आपको कभी इसका पछतावा नहीं होगा। हर आदमी को शादी कर लेनी ही चाहिए।"

"अच्छा-अच्छा।" मैंने कहा, "अब हम थोड़ा सोने की कोशिश करें।"

"अच्छा, श्री टिण्टे। मैं फिर कोशिश करता हूं। पर मैंने जो कहा है, उसे याद रखिए।"

"मैं याद रखूंगा।" मैंने कहा, "अच्छा जान, अब थोड़ा सो लेना चाहिए।"

"हां, श्री टिण्टे" वह बोला, "मैं उम्मीद करता हूं आपको नींद आ जाएगी।"

मैंने उसे घास के ऊपर अपने कम्बलों में लुढ़कते सुना। अब वह शान्त था और नियमित रूप में सांसें लेते मैंने उसे सुना। फिर उसने खर्राटे लेना शुरू कर दिया। मैं लम्बे समय तक उसके खर्राटों को सुनता रहा। तब मैंने उन्हें सुनना बन्द कर दिया और रेशम के कीड़ों को खाते सुनना शुरू कर दिया। वे स्थिरतापूर्वक खाए जा रहे थे और पत्तों में बीट कर रहे थे। अब सोचने के लिए एक नया विषय मुझे मिल गया था। अंधेरे में अपनी आंखें खोले मैं पड़ा रहा और जिन लड़कियों से मैं कभी भी परिचित रहा था, उनके बारे में सोचता रहा कि कौन किस किस्म की पत्नी बन सकती है। सोचने के लिए यह बड़ा ही रोचक विषय था। कुछ देर के लिए ट्राउट मछलियां पकड़ना छूट गया और मेरी प्रार्थनाएं भी रुक गई। लेकिन अन्त में मैं ट्राउट मछलियों के शिकार पर फिर लौट गया। मुझे लगा कि मैं सभी सोतों को याद कर सकता हूं। फिर इन सोतों में सदा ही एक नयापन रहता है, जबकि कुछेक बार सोच लेने के बाद लड़कियों के चित्र धुंधला जाते हैं। बाद में तो मैं उन्हें अपनी स्मृति में ला ही न पाता। अन्ततः वे सभी धुंधला गईं और लगभग एक जैसी बन गईं और उनके बारे में सोचना मैंने एकदम बन्द कर दिया। लेकिन अपनी प्रार्थनाएं मैंने जारी रखीं। रातों में अक्सर मैं जान के लिए प्रार्थना करता। अक्तूबर के हमले से पहले ही उसका वर्ग मोर्चे की सेवा से हटा दिया गया। मुझे खुशी हुई कि वह वहां नहीं रहा क्योंकि रहता तो मेरे लिए वह एक भारी चिन्ता का विषय बन जाता। कुछ महीने बाद मिलान के हस्पताल में वह मुझे देखने आया और उसे बड़ी निराशा हुई कि मैंने अभी तक शादी नहीं की है। मैं जानता हूं, यदि उसे पता लग जाए कि मैंने अभी तक भी शादी नहीं की है तो उसे बहुत ही बुरा महसूस होगा। वह वापस अमेरिका जा रहा था। मेरी शादी के बारे में उसे पूरा निश्चय था। वह समझता था कि सब कुछ किसी भी क्षण तय हो जाएगा।

बर्फ से ढके मैदान

रज्जु-रेल एक बार और भड़की और रुक गई। और आगे वह बढ़ नहीं सकती थी। पटरियों के आर-पार बर्फ ठोस बनकर जम गई थी। आंधी पहाड़ की खुली सतह को रौंद रही थी और रगड़-रगड़कर बर्फीली सतह को उसने एक सख्त तख्ते के रूप में परिवर्तित कर दिया था। निक ने सामान के डिब्बे में से 'स्की' निकाली और अपने जूते उसके लोहे के पंजों में डाल दिए और क्लिप को कसकर बन्द कर दिया। गाड़ी में से वह बगल की सख्त सतह पर कूद गया। उछलकर उसने एक मोड़ लिया और दबककर अपनी छड़ियों से टेक लेता हुआ ढलान पर तेज़ी से फिसल चला।

नीचे श्वेत सतह पर जार्ज डुबकियां ले रहा था। वह उठ रहा था और डुबककर आंखों से ओझल हो रहा था। जैसे ही निक पहाड़ की एक ओर के सीधे ढलान पर तेज़ी से फिसला, वेग और आकस्मिक झोंक ने उसके होश गुम कर दिए। एक शानदार उड़ान और गिरने से शरीर में पैदा हुई सिहरन ही बस बाकी रही। एक हल्के से उभार पर वह ऊपर उठा और तब वह फिर नीचे की ओर ढल चला और उस अन्तिम लम्बे खड़े ढलान पर अधिकाधिक वेग से नीचे जाते हुए उसे लगा जैसे उसके पैरों के नीचे से बर्फ ही गायब हो रही हो। वह इतना दबका हुआ था जैसे अपनी स्की पर लगभग बैठ ही गया हो। वह गुरुत्वाकर्षण केन्द्र को थामे रखने की कोशिश कर रहा था। बर्फ रेत की आंधी की तरह छूट रही थी। वह समझ रहा था कि गति बहुत अधिक तेज़ है। पर वह टिका रहा। उसने तय

किया, वह डिगेगा नहीं, और गिरेगा नहीं। तभी कुछ मुलायम बर्फ पर, जो हवा के बावजूद एक गढ़े में ज्यों की त्यों पड़ी रह गई थी, वह उलट गया और कलाबाजियां खाता गया। उसके स्की टकरा-टकराकर बजती गई। वह गोली खाए खरगोश की तरह महसूस कर उठा। उसकी टांगें परस्पर उलझ गई। उसकी स्की सीधे ऊपर तनी रही और उसकी नाक और कानों में बर्फ भर गई।

जार्ज थोड़ा आगे ढलान के नीचे खड़ा था और ज़ोर-ज़ोर से झटककर अपनी जाकट पर से बर्फ झाड़ रहा था।

"माइक, तुम बहुत ही बढ़िया ढंग से फिसले हो।" उसने निक को पुकारकर कहा, "क्या बेहूदा मुलायम बर्फ है! इसने इसी तरह मुझे भी पटकी खिलाई थी।"

"खड्ड पर यह कैसी बर्फ है?" निक ने अपनी स्की को झटका और कमर के बल मुड़कर खड़ा हो गया।

"तुम्हें अपने बायें रहना होगा। आगे काफी खड़ा ढलान है और तली पर लगी बाड़ के साथ-साथ क्रिस्टी की झाड़ियां लगी हैं।"

"एक सैकिण्ड ठहरो, हम साथ ही चलेंगे।"

"नहीं, तुम आओ और आगे-आगे चलो। मैं तुम्हें इन खड्डों को पार करते हुए देखना चाहता हूं।"

निक ऐडम्स जार्ज के पास से गुज़रा। उसकी भारी कमर और सुनहरे बालों वाला सिर अभी तक हलकी बर्फ से सना था। तब उसकी स्की फिर किनारे पर फिसलने लगी और वह नीचे लुढ़क चला। पारदर्शी, महीन सफेद बर्फ में हिस्स् की सी आवाज़ हुई। लगा जैसे वह ऊपर-नीचे होता हुआ तैर रहा हो और लहरों जैसे खड्डों पंर उठ-गिर रहा हो। वह बाईं ओर जमा रहा। अन्त में जब वह बाढ़ के निकट पहुंचा तो उसने अपने घुटनों को सटाकर कस लिया और एक कसते पेंच की तरह अपने शरीर को मरोड़ा और बर्फ के एक दमघोंट झोंके के बीच स्की को घुमाकर तेज़ी से

दाईं ओर ले आया। पहाड़ी और तार की बाढ़ के समानान्तर उसकी गति धीमी पड़कर रुक गई।

उसने पहाड़ी की ओर देखा। जार्ज 'टेली मार्क' मोड़ लेने की स्थिति में झुका हुआ नीचे की ओर बढ़ा या रहा था। एक टांग आगे निकली और मुड़ी हुई थी। दूसरी उसके पीछे घिसट रही थी। उसकी छड़ियां किसी मच्छर की पतली टांगों की तरह लटकी थीं और जब वह सतह को छूतीं तो बर्फ के गोलों को बिखराती थीं। अंतत: झुकी हुई, फिसलती हुई उसकी पूरी आकृति एक सुन्दर लम्ब-कोण बनाती उतरी आ रही थी। वह सिकुड़ा हुआ था। उसकी टांगें आगे और पीछे को फैलती-सिकुड़ती थीं। शरीर झोंक के विरुद्ध पीछे की ओर तन रहा था। छड़ियां प्रकाश-चिह्नों की तरह ढलान पर टेक लगा रही थीं और यह सब बर्फ के एक व्यग्र बादल के बीच घट रहा था।

"मैं तो क्रिस्टी की बाढ़ से डर रहा था।" जार्ज ने कहा, "बर्फ बहुत गहरी थी और तुमने बहुत ही खूबसूरती से काम लिया।"

"मैं अपनी टांगों से सहसा मोड़ (टेली मार्क मोड़) नहीं ले सकता।" निक ने कहा।

निक ने अपनी स्की से तारों की बाड़ के सबसे ऊपरी तार को दबा लिया। जार्ज उसे पार कर गया। निक उसके पीछे-पीछे सड़क तक पहुंच गया। सड़क के साथ-साथ झुके घुटनों से वे एक चीड़ के जंगल में बढ़ चले। लट्ठों के घिसराये जाने से सड़क पर की बर्फ धब्बेदार नारंगी और तम्बाकू जैसे पीले रंग से पालिश की हुई सी बन गई थी। स्की वाले बगल की बर्फ की पट्टी पर दौड़ते थे। सड़क एक सोते तक सीधी ढलकर आगे पहाड़ी के खड़े उभार पर चढ़ रही थी। एक लम्बा, झुके व लीकों वाला ऋतु-जर्जर भवन जंगल में से दीख पड़ रहा था। पेड़ों के बीच से यह उड़े पीले रंग का लग रहा था। खिड़कियों के चौखटों पर हरा रोगन किया गया था। रोगन छूट रहा था। निक ने अपनी एक छड़ी से स्की के बकसुए को ढीला किया और स्की को झटककर उतार दिया।

"हम इन्हें उठाकर ले जा सकते हैं।" उसने कहा।

स्की अपने कंधे पर रखकर जूतों की कीलों से बर्फ को ठकठकाता हुआ वह खड़ी सड़क पर चढ़ चला। उसने सुना, उसके ठीक पीछे जार्ज भी जूतों को ठकठकाता और ज़ोर-ज़ोर की सांस लेता हुआ चला आ रहा था। उन्होंने स्की सराय की दीवार के साथ टिका दी और एक-दूसरे की पतलूनों पर से बर्फ को झाड़ा, पटक-पटककर अपने जूतों को साफ किया और अन्दर चले गए।

अन्दर बिल्कुल अंधेरा था। एक बड़ा चीनी मिट्टी का चूल्हा कमरे के कोने में जल रहा था। छत नीची थी। काली शराब के धब्बों से भरी मेज़ों के पीछे चिकनी बेंचें कमरे की हर दीवार के साथ लगी थीं। दो स्विस बैठे पाइप पी रहे थे। चूल्हे के साथ बादली रंग की नई शराब के दो पीपे रखे थे। लड़कों ने अपनी जाकेटें उतारीं और चूल्हे के दूसरी ओर दीवार से कमर लगाकर बैठ गए। अगले कमरे में एक आवाज़ गाते-गाते रुक गई और एक लड़की नीला एप्रन पहने दरवाज़े में से अन्दर यह देखने के लिए आई कि कौन शराब मांग रहा है।

"एक बोतल सिमन," निक बोला, "क्यों ग़िज, ठीक है न?"

"बिल्कुल।" जार्ज ने कहा, "शराब के बारे में तुम मेरे से अधिक जानते हो। मुझे तो कोई भी पसन्द आ जाती है।"

लड़की चली गई।

"सचमुच कोई भी चीज़ बर्फ पर फिसलने का मुकाबला नहीं कर सकती। कर सकती है?" निक ने कहा, "जब हम लम्बी यात्रा पर चल पड़ते हैं तब कितना अच्छा महसूस होता है!"

"उफ," जार्ज ने कहा, "इतना अच्छा कि कुछ कहा नहीं जा सकता।"

लड़की शराब ले आई। डाट खोलने में उन्हें कुछ दिक्कत हुई। अन्त में निक ने उसे खोल ही डाला। लड़की चली गई। उन्होंने सुना, अगले कमरे में वह जर्मन भाषा में गा रही थी।

"डाट के ये टुकड़े इसमें मिल गए हैं। पर कोई फर्क नहीं पड़ता।" निक ने कहा।

"पता नहीं, इसके पास केक भी है या नहीं।"

"पूछ लेते हैं।"

लड़की अन्दर आई और निक ने देखा कि उसका एप्रन उसके उभरते पेट को ढांपे था। वह सोचने लगा, जब यह पहली बार आई थी, तब यह बात मैं क्यों नहीं देख पाया।

"तुम क्या गा रही थीं?" उसने उससे पूछा।

"आपेरा, जर्मन आपेरा।" इस विषय पर अधिक बात करने की परवाह उसने नहीं की। "अगर आप चाहें तो थोड़ा सेब का मुरब्बा हमारे पास है।"

"यह विनीत नहीं है। क्यों?" जार्ज बोला।

"अरे ठीक है। वह हमसे परिचित नहीं है। और फिर हो सकता है उसने सोचा हो कि गाने को लेकर ये मुझे छेड़ेंगे। यह पहाड़ों की है। वहां शायद जर्मन बोली जाती है। और यहां होने के कारण यह कुछ तुनकी-सी है। फिर शादी के बिना ही यह बच्चा इसे होने वाला है। इसलिए भी यह चिड़चिड़ी हो रही है।"

"तुम कैसे जानते हो कि इसकी शादी नहीं हुई है।"

"अंगूठी कहां है? इस तरफ गर्भ ठहर जाने से पहले लड़कियां शादी करती ही नहीं हैं।"

दरवाज़ा खुला और लकड़हारों का एक दल अपने जूतों को पटकता और भाप निकालता हुआ सड़क पर से अन्दर कमरे में आ गया। लड़की उस दल के लिए तीन लिटर नई शराब ले आई और वे धुम्रां उड़ाते हुए चुपचाप दो मेज़ों पर बैठ गए। उन्होंने टोप उतार दिए और पीठ दीवार से

सटाकर या मेज़ पर सामने की ओर झुककर बैठ गए। बाहर लकड़ी की बर्फ-गाड़ियों से जुते उनके घोड़े जब-तब अपने सिरों को झटकते थे और उनकी घंटियां तेजी से बज उठती थीं।

जार्ज और निक खुश थे। वे एक-दूसरे से स्नेह करते थे। वे जानते थे कि अभी वापस घर तक का लम्बा मार्ग उन्हें तय करना है।

"तुम वापस स्कूल कब जा रहे हो?" निक ने पूछा।

"आज रात।" जार्ज ने उत्तर दिया, "मुझे दस-चालीस वाली गाड़ी माण्ट्रे से पकड़नी है।"

"मैं चाहता था, तुम ठहर जाते और कल हम इकट्ठे डेण्ट डू लीज़ में भाग ले सकते।"

"मुझे पढ़ाई करनी है।" जार्ज ने कहा। "क्यों माइक, क्या तुम नहीं चाहते कि हम इकट्ठे घूम-फिर सकते? अपने स्की लेकर रेल द्वारा कहीं भी ऐसी जगह जा सकते जहां फिसलने योग्य बढ़िया भूमि हो? तब हम शराबघर में टिक जाते। फिर आगे ओबरलैंड के ठीक पार और वैले तक और इंगडीन में हम बढ़े चले जाते। मरम्मत का सामान और कुछ फालतू स्वेटर और पाजामे अपने थैलों में साथ रखते और किसी भी स्कूल या किसी भी चीज़ की कोई चिन्ता हमें न होती।"

"हां, इसी तरह हम श्वार्जबाल्ड तक चले जाते। वाह, कितने बढ़िया स्थान हैं ये सब!"

"पिछली गर्मियों में मछलियां पकड़ने तुम वहीं तो गए थे न? क्यों?"

"हां।"

उन्होंने मुरब्बा खा लिया और बाकी की शराब पी ली।

जार्ज दीवार से पीठ लगाकर लेट गया और उसने आंखें बंद कर लीं।

"शराब पीकर मैं हमेशा ऐसा ही महसूस करता हूं।" वह बोला।

"क्या बुरा लग रहा है?" निक ने पूछा।

"नहीं, अच्छा लगता है। पर अजीब-सा।"

"मैं जानता हूं।" निक बोला।

"हां।" जार्ज ने कहा।

"क्या एक और बोतल मंगा लें?" निक ने पूछा।

"मेरे लिए तो नहीं।"

वे वहां बैठे रहे। निक अपनी कुहनियां मेज़ पर झुकाए टिका रहा और जार्ज पीछे दीवार की ओर दबका रहा।

"क्या हैलन को बच्चा होने वाला है?" दीवार से मेज़ की ओर आते हुए जार्ज ने पूछा।

"हां।"

"कब?"

"आगामी गर्मियों के अन्त में।"

"तुम खुश हो?"

"हां, अब हूं।"

"क्या तुम वापस अमेरिका जाओगे?"

"सोचता हूं, शायद।"

"जाना चाहते हो तुम"

"नहीं।"

"हैलन चाहती है?"

"नहीं।"

जार्ज चुप बैठ गया। उसने खाली बोतल और खाली गिलासों की ओर देखा।

"क्या बकवास है, है न?" उसने कहा।

"नहीं, ऐसा तो नहीं है।" निक बोला।

"क्यों नहीं है?"

"मुझे नहीं मालूम।" निक ने कहा।

"क्या अमेरिका में तुम कभी इकट्ठे स्की पर फिसलने जाओगे?" जार्ज ने पूछा।

"कह नहीं सकता।" निक ने कहा।

"वहां पहाड़ अधिक नहीं हैं।" जार्ज ने कहा।

"नहीं," निक बोला, "पर वे बहुत चट्टानी हैं। वहां पेड़ भी बहुत हैं और पहाड़ बहुत दूर-दूर भी हैं।"

"हां।" जार्ज ने कहा, "केलिफोर्निया में तो ऐसा ही है।"

"हां।" निक बोला, "जहां कहीं भी मैं गया हूं, ऐसा ही मिला है।"

"सच।" जार्ज ने कहा, "ऐसा ही है।"

स्विस लोग उठ गए और पैसे देकर बाहर चले गए।

"मैं सोचता हूं हम स्विस होते।" जार्ज बोल उठा।

"इन सबको गलगण्ड होते हैं।" निक ने कहा।

"मैं नहीं मानता।" जार्ज ने कहा।

"मानता तो मैं भी नहीं।" निक बोला।

वे हंस पड़े।

"निक, हो सकता है अब हम फिसलने के लिए कभी न जा सकें।" जार्ज ने कहा।

"हमें जाना होगा।" निक बोला, "न जा सकें तो फिर बात ही क्या हुई?"

"तो ठीक है। हम जाएंगे।"

"हमें जाना ही होगा।" निक ने सहमति प्रकट की।

"मैं चाहता था, हम इसका वायदा कर सकते।" जार्ज ने कहा।

निक खड़ा हो गया। उसने अपनी जाकेट कसकर बन्द की। फिर जार्ज के ऊपर झुककर अपनी दोनों स्की-छड़ियां, जो दीवार से लगी खड़ी थीं, उठा लीं। एक छड़ी को फर्श पर मारा।

"वायदा करने में कोई अच्छाई नहीं है।"

उन्होंने दरवाज़ा खोला। बाहर निकल आए। ठंड बहुत थी। बर्फ जमकर सख्त पड़ गई थी। सड़क चीड़ के पेड़ों में होती हुई पहाड़ी पर चढ़ रही थी।

सराय की दीवार के साथ अपनी स्की वे छोड़ आए थे। वहां से उन्होंने उन्हें वापस लिया। निक ने अपने दस्ताने पहने। जार्ज पहले ही सड़क पर बढ़ गया था। उसकी स्की उसके कन्धे पर थी। अब वे इकट्ठे घर वापस जा रहे थे।

उसे दौरा पड़ता था

आक्रमण करते हुए वे मैदान के पार तक पहुंच गए थे। यहां निचली सड़क और कृषि-गृहों के एक समूह से मशीनगनों द्वारा उन्हें रोका गया था। कस्बे के भीतर उनका कोई विरोध नहीं किया गया और वे नदी के तट तक पहुंच गए। निकोलस ऐदम्स सड़क से साइकिल पर चला आ रहा था। जहां सड़क की सतह बहुत टूटी-फूटी मिलती, वहां उतरकर वह साइकिल को धकेल ले चलता। मृतकों की स्थिति से उसने जांचा कि वहां क्या हो गुज़रा है।

मृतक मैदान की ऊंची घास में और सड़क के साथ-साथ अकेले अथवा समूहों में पड़े थे। उनकी जेबें बाहर निकली थीं। उनपर मक्खियां भिनभिना रही थीं। हर शव या शव-समूह के चारों ओर कागज़ बिखरे हुए थे।

सड़क की बगल में, घास पर, पत्थरों पर, और कुछ जगह सड़क पर भी बहुत-सी चीजें फैली पड़ी थीं—लड़ाई के योग्य रसोई के उपकरण जो यहां उस समय लाए गए होंगे जब सब ठीक चल रहा होगा; बछड़े की खाल के थैले; लम्बोतरे बम; लोहे के टोप; राइफलें; खाई खोदने के औज़ार; गोला-बारूद के बक्से; हवा में फटने वाली गोलियां छोड़ने की पिस्तौलें; चारों ओर बिखरे उनके खोल; दवा-दारू के थैले; गैस से बचाव करने वाले नकाब; इन नकाबों के खाली कनस्तर; खाली खोलों के ढेर के बीच पड़ी एक छोटी, भारी, तिपहिया मशीनगन; डिब्बों में से उझकती बड़ी पेटियां, खाली और बगल के बल पड़े पानी ठंडा करने वाले कनस्तर

जिनकी डाटें गायब थीं। लोग बड़ी अजीब स्थितियों में पड़े थे। और भी अधिक कागज़ात उनके चारों ओर घास पर बिखरे थे।

सामूहिक प्रार्थना की पुस्तकें थीं। मशीनगन की टुकड़ी के सामूहिक फोटो थे। टुकड़ी पदानुसार और हर्ष से उत्फुल्ल ऐसी खड़ी थी जैसे किसी कालेज के उत्सव के लिए फुटबाल टीम की तस्वीर ली गई हो। अब ये तस्वीरें मुड़ी-तुड़ी और फूली हुई घास में पड़ी थीं। प्रचार के पोस्टकार्ड थे जिनमें आस्ट्रियाई वर्दी पहने एक सिपाही दिखाया गया था, जो एक स्त्री को बिस्तर के ऊपर पीछे की ओर लिटा रहा था। आकृतियां प्रभाववादी शैली में खिची थीं। चित्र बड़े ही आकर्षक ढंग से चित्रित थे और सामान्य बलात्कार का कोई अंश उनमें नहीं था। सामान्यतः स्त्री के स्कर्ट को सिर के ऊपर उलट दिया जाता है जिससे उसे काबू किया जा सके और कभी-कभी एक अन्य साथी उसके सिर को थामकर बैठ जाता है। इस तरह के कितने ही उत्तेजक कार्ड वहां पड़े थे, जो स्पष्ट ही, हमले से ठीक पहले वहां फैलाए गए थे। अब वे अन्य भद्दे-अश्लील पोस्टकार्डों और फोटुओं के साथ मिले-बिखरे थे। गांव के फोटोग्राफरों द्वारा खींचे गए गांव की लड़कियों के फोटो, बच्चों की जब-तक की तसवीरें और चिट्ठियां, चिट्ठियां, चिट्ठियां। मृतकों के आसपास हर कहीं कागज़ ही कागज़ थे और इस आक्रमण से बने खंडहर भी इसके अपवाद नहीं थे।

ये सब नये मृतक थे और किसीने भी इनकी जेबों के सिवाय किसी और बात की चिन्ता नहीं की थी। निक ने देखा, हमारे अपने मृतक अथवा जिन्हें वह अभी तक अपने मृतक के रूप में ही देखता था, आश्चर्यजनक रूप में कम थे। उनके भी कोट खोल डाले गए थे। जेबें बाहर निकली हुई थीं। वे अपनी स्थितियों से आक्रमण के तरीके और उसकी कुशलता का पता दे रहे थे। मौसम की गर्मी ने राष्ट्रीयता की चिन्ता न करते हुए सभीको एकसाथ फुला दिया था।

स्पष्ट ही अंततः नगर की निचली सड़क पर से मुकाबला किया गया था और बहुत थोड़े ही प्रथवा कोई भी आस्ट्रियाई नगर में वापस नहीं घुस

पाए थे। सड़क पर केवल तीन शव थे। लगता था, उन्हें भागते हुए धर लिया गया था। गोला-बारी से नगर के घर टूट-फूट गए थे और पलस्तर और ईंट-गारे के ढेर सड़क पर पड़े थे। टूटी हुई कड़ियां, टूटे हुए टाइल और इनमें बहुत-से छेद थे, जिनके किनारे गैस के कारण पीले पड़ गए थे। ढेर में गोलों के खोलों के कितने ही टुकड़े और फटने वाली गोलियां बिखरी थीं। नगर में एक भी व्यक्ति नहीं था।

निक ऐडम्स जब से फोरनाकी से गया था, वह किसीसे भी नहीं मिला था। वैसे, सड़क परच लते हुए घनी वनस्पति से ढके प्रदेश में से गुज़रते हुए सड़क की बायीं ओर उसने शहतूत के पत्तों के पर्दों में छुपी तोपों को देखा था। पत्तों के ऊपर हवा में वर्तमान गर्म लहर धातु पर पड़कर चमक उठती थी। इसीसे वह उन्हें देख पाता था। अब वह नगर के बीच से चला जा रहा था। उसे आश्चर्य था कि वह सुनसान पड़ा था। अब वह नदी तट वाली निचली सड़क पर निकल आया था। नगर से निकलते ही एक खाली खुली जगह थी जहां सड़क नीचे को ढल रही थी। वहां से नदी का शान्त तट और दूसरे तट का हलका घुमाव और धूप से सूखा सफेद पड़ा कीचड़ देखा जा सकता था। आस्ट्रियाइयों ने यहीं खाइयां खोदी थीं। जब अन्तिम बार उसने इसे देखा था तब की अपेक्षा यह अत्यधिक घना और अतिरिक्त हरियाला था और ऐतिहासिक महत्त्व की बन जाने पर भी इस निचली नदी में कोई परिवर्तन नहीं आया था।

बटालियन बायीं ओर को तट के साथ पड़ी थी। तट के उभरे हुए हिस्से में खोखलों का एक क्रम था जिनमें कितने ही आदमी थे। निक ने देखा कि मशीनगनों को और संकेतक राकेटों को उनके रैकों में कहां-कहां रखा गया है। तट की बगल वाले खोखलों के आदमी सो रहे थे। किसीने उसे चेतावनी नहीं दी। वह चलता गया और जैसे ही कीचड़-भरे तट में पड़े एक घुमाव पर पहुंचा, वैसे ही एक जवान सैकिण्ड लेफ्टिनेण्ट

ने उसपर अपनी पिस्तौल तान दी। उसकी दाढ़ी कटी-छंटी हुई थी और किनारों पर से लाल थी और आंखों से खून-सा चू रहा था।

"कौन हो तुम?"

निक ने उसे बताया।

"मैं इसे कैसे ठीक मानूं?"

निक ने अपना परिचय-पत्र दिखाया। उसपर फोटो और पहचान थी और तीसरी सेना की मुहर थी। उसने इसे ले लिया।

"इसे मैं रखूंगा।"

"तुम इसे नहीं रखोगे।" निक बोला, "कार्ड मुझे वापस दो और अपनी पिस्तोल परे हटा लो। इसे इसके खोल में रख लो।"

"मैं कैसे जानूं कि तुम कौन हो?"

"परिचय-पत्र सब बता रहा है।"

"और यदि यह परिचय-पत्र जाली हो? यह कार्ड मुझे दे दो।"

"बेवकूफ मत बनो।" निक ने खुशी-खुशी कहा, "मुझे अपने कम्पनी-कमाण्डर के पास ले चलो।"

"मुझे तुम्हें बटालियन के केन्द्रीय दफ्तर भेज देना चाहिए।"

"तो ठीक है।" निक ने कहा, "सुनो, क्या तुम कप्तान पराविचिनी को जानते हो? वह लम्बा व्यक्ति, जिसकी छोटी मूछें हैं, जो एक वास्तुकार था और अंग्रेज़ी बोलता है।"

"तुम उसे जानते हो?"

"थोड़ा-सा।"

"वह किस कम्पनी का कमाण्डर है?"

"दूसरी का।"

"बटालियन की कमान उसीके हाथ में तो है।"

"बहुत बढ़िया।" निक ने कहा। यह जानकर कि परा एकदम ठीक है, उसका मन हलका हुआ, "चलो बटालियन चलें।"

जैसे ही निक नगर के सिरे से आगे बढ़ा था, तीन विस्फोटक गोलियां ऊंचाई पर और टूटे हुए घरों में से एक के दायें फटी थीं। तब से कोई गोलाबारी नहीं हुई थी, लेकिन इस अफसर का चेहरा ऐसा बना था जैसाकि बमबारी के बीच किसी आदमी का होता है। उसपर वैसा ही कसाव था और आवाज़ भी स्वाभाविक नहीं लगती थी। उसकी पिस्तौल से निक को परेशानी हो रही थी।

"इसे हटा लो।" उसने कहा, "उनके और तुम्हारे बीच पूरी नदी पड़ी है।"

"अगर मुझे लगा कि तुम जासूस हो तो मैं तुम्हें यहीं गोली मार दूंगा।" सैकिण्ड लेफ्टिनेण्ट ने कहा।

"चले आओ।" निक बोला, "चलो, बटालियन चलो।" यह अफसर उसे बहुत ही अस्थिर किए दे रहा था।

अस्थायी मेजर, कप्तान पराविचिनी पहले से भी अधिक पतला और अंग्रेज़ जैसा लग रहा था। बटालियन के दफ्तर, उस तहखाने में पहुंचकर जब निक ने मेज़ के पीछे से सलाम किया तो वह उठकर खड़ा हो गया।

"हैलो!" वह बोला, "मैंने तुम्हें पहचाना ही नहीं। इस वर्दी में तुम क्या कर रहे हो?"

"यह मुझे पहना दी गई है।"

"निकोलो, तुमसे मिलकर बहुत ही खुशी हुई है।"

"धन्यवाद, तुम स्वस्थ दीखते हो। हमला कैसा रहा?"

"हमने बहुत ही बढ़िया हमला किया। सचमुच बहुत ही बढ़िया हमला। मैं तुम्हें बताता हूं, देखो।"

उसने नक्शे की सहायता से समझाया कि हमला किस तरह चला था।

"मैं फोरनाकी से होकर आया हूं।" निक ने कहा, "मैंने देखा है कि वह कैसा रहा। वह बहुत ही सफल रहा है।"

"वह असाधारण रहा, एकदम असाधारण। क्या तुम रेजीमेण्ट से सम्बद्ध हो?"

"नहीं, मुझे इधर-उधर घूमना है और इस वर्दी को उन्हें देखने देना है।"

"कैसी अजीब बात है!"

"यदि वे एक अमेरिकी वर्दी को देख लें तो समझा जाता है कि वे सोचेंगे कि और अमेरिकी चले आ रहे हैं।"

"लेकिन वे कैसे जानेंगे कि यह वर्दी अमेरिकी है?"

"यह तुम उन्हें बताओगे।"

"अच्छा! हां। अब मैं समझा। तुम्हारे साथ मैं एक कारपोरल को भेजूंगा। वह तुम्हें यहां-वहां की जगह दिखाएगा और तुम मोर्चों का दौरा करोगे।"

"एक कुटिल राजनीतिज्ञ की तरह।" निक बोला।

"नागरिक कपड़ों में व्यक्ति और भी अधिक प्रतिष्ठित लगता है। असल में प्रतिष्ठित तो वे ही हैं।"

"हैम्बर्ग हैट पहनकर।" निक बोला।

"या घने फर वाला फेडोरा पहनकर?"

"अपनी जेबें मुझे सिगरेटों, पोस्टकार्डों और ऐसी ही चीज़ों से भरी रखनी चाहिए।" निक ने कहा, "चाकलेट से भरा एक थैला भी होना चाहिए। इन्हें मीठी बातों के साथ और पीठ पर थपकियां दे-देकर मुझे बांटना चाहिए। लेकिन न सिगरेटें हैं न पोस्टकार्ड और न चाकलेट। इसलिए किसी भी तरह बस, खबर फैलाने को कहा गया है।"

"मुझे निश्चय है कि तुम्हारा आना सैनिकों के उत्साह को बढ़ाएगा।"

"मैं चाहता हूं तुम मुझे बनाओ नहीं।" निक ने कहा, "जैसा भी यह है, मुझे यह सब काफी अजीब लग रहा है। सिद्धान्ततः तुम्हारे लिए मुझे ब्राण्डी की एक बोतल लानी चाहिए थी।"

"सिद्धान्ततः।" परा ने कहा और अपने पीले दांत दिखाता हुआ पहली बार मुस्कराया, "कितना सुन्दर शब्द है! क्या थोड़ी ग्रप्पा तुम पसन्द करोगे?"

"नहीं, धन्यवाद।" निक बोला।

"इसमें कोई जान तो होती ही नहीं।"

"फिर भी इसका स्वाद तो मैं ले ही सकता हूं।"

"तुम जानते हो, मैं तब तक तुम्हें पिए हुए नहीं समझ पाया था जब तक वापस तोपगाड़ी में आकर तुमने बातें करना नहीं शुरू कर दिया था।"

"हर हमले में मैं खूब पिए हुए था।" निक ने कहा।

"मैं ऐसा नहीं कर सकता।" परा बोला, "मैंने पहले हमले में एकदम पहले हमले में पी थी और इससे मैं बहुत ही अस्तव्यस्त हो उठा था और मुझे भीषण प्यास लग आई थी।"

"तुम्हें उसकी ज़रूरत ही नहीं है।"

"हमले के बीच तुम मेरी अपेक्षा अधिक बहादुर रहते हो।"

"नहीं," निक ने कहा, "मैं जानता हूं मैं क्या हूं और मैं पी लेना पसन्द करता हूं। मुझे इसपर शर्म नहीं आती।"

"मैंने कभी तुम्हें धुत नहीं देखा।"

"नहीं?" निक ने कहा, "कभी नहीं। उस रात भी नहीं, जब हम मेस्त्रे से पोर्टोग्रैण्डे तक साइकल पर गए थे और मैंने सोना चाहा था और कम्बल के स्थान पर बाइसिकल का प्रयोग किया था और उसे अपनी ठुड्डी तक खींच लिया था।"

"यह मोर्चे पर नहीं हुआ था।"

"मैं कैसे हूं इस बारे में बात न करो।" निक ने कहा, "यह ऐसा विषय है जिसके बारे में मैं इतना अधिक जानता हूं कि और अधिक ज़रा भी सोचना नहीं चाहता।"

"चाहो तो यहां कुछ देर ठहर लो।" पराविचिनी बोला, "चाहो तो एक झपकी ले लो। बमबारी से इसे अधिक नुकसान नहीं पहुंचा है। बाहर जाने के लिए अभी बहुत अधिक गर्मी है।"

"मैं समझता हूं। कोई जल्दी नहीं है।"

"तुम सचमुच कैसे हो?"

"मैं ठीक हूं। मैं पूरी तरह ठीक हूं।"

"नहीं, मेरा मतलब है, सचमुच।"

"मैं एकदम ठीक हूं। अब बस इतना ही है कि बिना किसी तरह की रोशनी के मैं सो नहीं सकता।"

"मैं कहता हूं, इसके लिए खोपड़ी में पंचर होना चाहिए था। डाक्टर मैं नहीं हूं, पर इतना मैं जानता हूं।"

"खैर, उन्होंने सोचा कि इसका अन्दर घुल जाना ही अच्छा है और वही मुझे मिला। बात क्या है? क्या मुझमें कुछ सनक तुम्हें दीख पड़ रही है?"

"तुम तो बहुत शानदार अवस्था में हो।"

"यदि एक बार सनकी होने का प्रमाण-पत्र मिल जाए तो बड़ा ही गड़बड़ हो जाता है।" निक ने कहा, "फिर कोई भी उस व्यक्ति में विश्वास रखने को तैयार नहीं होता।"

"निकोलो, मैं तो एक नींद लूंगा।" पराविचिनी बोला, "हमारी जानकारी जैसा बटालियन दफ्तर तो यह नहीं है। हम यहां से उखड़ने के इन्तज़ार में हैं। अब इस गर्मी में तो तुम्हें बाहर निकलना चाहिए नहीं। ऐसा करना मूर्खतापूर्ण होगा। वह बिस्तर तुम ले लो।"

"मैं भी ज़रा लेट लूं।"

निक बिस्तर पर लेट गया। उसे बड़ी ही निराशा कि वह ऐसा महसूस कर रहा है। और भी अधिक निराशा उसे इसलिए हुई कि कप्तान पराविचिनी यह बात इतनी प्रकट रूप में जानता है। यह खाई उतनी बडी

नहीं थी, जितनी वह थी, जिसमें 1899 के समय की पलटन मोर्चे पर थी और हमले से पहले बमबारी के बीच उसपर उन्माद का दौरा-सा आ गया था। परा ने उसे आदेश दिया था कि वह दो-दो करके उन्हें बाहर ले जाए और दिखाए कि कुछ नहीं होगा। वह अपनी ठुड्डी का फीता मुंह पर सख्त कसे था, जिससे ओठ स्थिर बने रहें। वह जानता था, वे जानेंगे तो संभाल नहीं पाएंगे। वह जानता था, यह सब बकवास ही है। यदि वह चिल्लाना बन्द नहीं कर सकता तो उसकी नाक तोड़ दो, जिससे सोचने के लिए उसे कुछ और मसाला मिल जाए। मैं एक-आध को गोली मार देता पर बहुत अधिक देर हो चुकी थी। वे सब और बिगड़ जाएंगे। उसकी नाक तोड़ दो। उन्होंने समय हटाकर पांच-बीस कर दिया है। हमारे पास कुल चार मिनट बाकी हैं। उस दूसरे बदमाश की नाक तोड़ो और उसका भेजा बाहर निकाल डालो। क्या तुम समझते हो वे बढ़ पाएंगे? अगर वे नहीं बढ़ते तो दो को गोली से उड़ा दो और दूसरों को किसी भी तरह बाहर ले जाओ। सार्जेण्ट, उनके पीछे रहो। आगे-आगे चलने का कोई लाभ नहीं। जब तुम देखते हो कि पीछे कोई भी नहीं आ रहा है, उन्हें अपने साथ-साथ निकालो। कैसी जड़ता है! सब ठीक है। ठीक है। तब घड़ी की ओर देखते हुए शान्त लहजे में बोल उठा। "सवोया।" उसे दिमाग को काबू करना था। वैसा करने का समय नहीं था। दिमाग घूम जाने के बाद वह अपने को काबू में नहीं रख पाता था। एक पूरा कोना ढह गया था। यही तो उन्हें चौंकाता था। उस ढलान पर दिमाग को काबू में रखना बस, इसी बार यह काम उसने बिना शराब पिए किया था। उनके चले जाने के बाद बिजली से चलने वाली तार-गाड़ी का स्टेशन लगता है, जला दिया गया था और घायलों में से कुछ चार दिन बाद नीचे उतरे थे। कुछ नीचे नहीं उतरे थे। बल्कि हम ऊपर गए थे और नीचे उतरे थे-हम हमेशा ही नीचे उतरे थे। अजीब बात है कि वहां गेबी-डेलिस भी था। वह उत्साह में था। तुमने मुझे एक वर्ष पहले गुड्डा कहकर पुकारा था। तुमने मुझे नन्हा सा बच्चा कहा

था। तुमने कहा था कि एक जोशीले बच्चे से परिचित होना अच्छा लगता है। गेबी महान और मेरा नाम हैरी पिल्चर है। जब पहाड़ी पर चढ़ते हुए चढ़ाई खड़ी हो जाती थी तो हम टैक्सी के सुदूर कोने से बाहर निकल आते थे। हर रात जब वह सैक्रे-कूर को सपने में देखता था तो पहाड़ी साबुन के बुलबुले की तरह सफेद दीख पड़ती थी। कभी-कभी उसकी प्रेमिका भी वहां होती थी और कभी-कभी वह किसी और के साथ होती थी। यह बात वह समझ नहीं पाता था। पर ये रातें वे होती थीं जब नदी इतनी चौड़ी और शान्त होकर बहती थी जितनी उसे होना नहीं चाहिए था। फोसाल्टा के बाहर हरे रंग से रंगा एक नीचा घर था, जिसके चारों ओर झाड़ियां थीं और एक नीचा अस्तबल था। वहां एक नहर थी। वह वहां हजारों बार गया था, पर उसे उसने कभी नहीं देखा था। पर हर रात नहर वहां होती थी। उतनी ही प्रकट जितनी वह पहाड़ी थी। सिर्फ वह उसे डराती थी। वह घर उसके लिए किसी भी और चीज़ से अधिक अर्थपूर्ण था और हर रात वह वहां जाता था पर नहर उसे डराती थी। विशेषकर तब जब नाव शान्तिपूर्वक झाड़ियों के बीच नहर पर पड़ी होती थी पर उसके तट इस नदी जैसे नहीं थे। वे सब नीचे थे जैसे कि पोर्टोग्रेण्डे में थे, जहां उन्हें उन्होंने बाढ़ के पार पानी में चलकर आते देखा था। वे तब तक अपनी राइफलें ऊंची उठाए रहे थे जब तक पानी में गिर नहीं गए। इसका प्रदेश किसने दिया था? यदि यह सब इतना गड्मगड् न हुआ होता तो वह ठीक उसका अनुसरण कर सकता था। इसी कारण वह हर चीज़ को इतनी बारीकी से देखता था जिससे उसे साफ याद रख सके और समझ सके कि वह किस जगह है। पर अब की तरह अचानक ही सब कुछ गड़बड़ा जाता था। अब वह बटालियन के दफ्तर में एक बिस्तर पर पड़ा है। परा एक बटालियन का नेतृत्व कर रहा है और वह इस कम्बख्त अमेरिकी वर्दी में है। वह उठकर बैठ गया और चारों ओर देखा। वे सब उसे ही देख रहे थे। परा बाहर चला गया था। वह फिर लेट गया।

पेरिस वाला हिस्सा उससे पहले का है और वह उससे डरा हुआ नहीं था, सिवाय तब के जब वह किसी और के साथ चली गई थी। डर यह था कि वे उसी ड्राइवर को दो बार न ले लें। उस बारे में बस, यही चीज़ उसे डराती थी। मोर्चे से वह कभी नहीं डरा। उसे मोर्चे का सपना अब कभी नहीं आता था। लेकिन जो चीज़ उसे इतना डराए डालती थी कि वह उससे पीछा छुड़ा नहीं पाता था, वह तो वह लम्बा पीला घर और नदी की बदलती चौड़ाई थी। अब वह यहां नदी पर वापस आ गया है। उसी नगर के बीच से वह गुज़रा है और वह घर तो वहां नहीं था। नदी भी उस दिशा में नहीं थी। तब हर रात वह कहां जाता रहा था? और खतरा क्या था? वह क्यों जाग उठता था? क्यों पसीने से नहा उठता था? क्यों इतना डर उठता था जितना कभी बमबारी के बीच भी नहीं डरा था? क्या सिर्फ एक घर और एक लम्बे अस्तबल और एक नहर के कारण ही?

वह उठकर बैठ गया। उसने सावधानी से अपनी टांगें नीचे झुलाईं। जब भी कुछ देर तक उन्हें सीधा रखा जाता था, वे अकड़ जाती थीं। उसने एड्‌जुटेण्ट और सिगनलरों और दरवाज़ों के साथ खड़े दो धावकों के घूरने का उत्तर दिया और कपड़े से मढ़ा, खाइयों में पहना जाने वाला अपना लोहे का टोप ओढ लिया।

"मुझे दुःख है कि चाकलेट, पोस्टकार्ड और सिगरटें मेरे पास नहीं हैं।" वह बोला, "पर मैं वर्दी तो पहने हूं।"

"मेजर फौरन ही वापस आने वाले हैं।" एड्‌जुटेण्ट ने कहा। उस सेना में एड्‌जुटेण्ट कमीशन अफसर नहीं होता।

"वर्दी बहुत सही नहीं है।" निक ने उन्हें बताया, "लेकिन एक रूपरेखा इससे मिल जाती है। कुछ ही देर में कई लाख अमेरिकी यहां होंगे।"

"तुम्हारा ख्याल है कि अमेरिकी यहां भेजे जाएंगे?" एड्‌जुटेण्ट ने पूछा।

"अरे, एकदम! मेरे से दुगने बड़े अमेरिकी—स्वस्थ, साफ दिलों वाले, जो रात में सोते हैं, जो कभी घायल नहीं हुए हैं, जिनके दिमाग कभी घूमे नहीं हैं, जिनके मस्तिष्क कभी बैठ नहीं गए हैं, जो कभी डरे नहीं हैं, जो शराब नहीं पीते, जो वफादार लड़कियों को पीछे छोड़ आए हैं, जिनमें कितनों ने ही केकड़े कभी नहीं खाए हैं—वे अद्भुत लोग हैं। आप देखेंगे।"

"क्या तुम इटली के हो?" एड्जुटेण्ट ने पूछा।

"नहीं, अमेरिकी। इस वर्दी को देखो। इसे स्पैग-नालिनी ने बनाया है। पर यह एकदम सही नहीं है।"

"उत्तरी या दक्षिणी अमेरिकी?"

"उत्तरी," निक ने कहा। अब उसने उसे आता महसूस किया। अब वह चुप हो जाएगा।

"लेकिन तुम इतालवी बोलते हो?"

"हां। मेरे इतालवी बोलने पर आपको ऐतराज़ है? क्या मुझे इतालवी बोलने का अधिकार नहीं है?"

"तुम्हारे पास इतालवी पदक भी हैं?"

"ये फीते और पत्र हैं। पदक तो बाद की चीजें हैं। पदक इसलिए दिया जाता है कि लोग उन्हें रखें पर लोग मर जाते हैं या पदक सामान के साथ खो जाते हैं। आप कितने ही पदक मिलान में खरीद सकते हैं। पत्र महत्त्व की चीज़ हैं। उनके बारे में गलत नहीं सोचना चाहिए। यदि मोर्चे पर आप लम्बे समय तक ठहरेंगे तो आपको भी पत्र मिलेंगे।"

"मैं इरीट्रिया के युद्ध का एक कुशल सिपाही हूं।"

एड्जुटेण्ट ने सख्ती से कहा, "मैं त्रिपोली में लड़ा था।"

"आपसे मिलना तो एक महत्त्व की बात है।" निक ने अपना हाथ बढ़ाया, "वे सचमुच ही कठिन दिन रहे होंगे। रिबन तो मैंने देखे थे। क्या कार्सो में मौजूद होने का मौका भी आपको मिला था?"

"इस लड़ाई में मैं अभी बुलाया गया हूं। मेरा वर्ग बहुत पुराना था।"

"कभी मैं आयु की सीमा के भीतर ही था।" निक ने कहा, "पर युद्ध ने अब मुझे नया ही रूप दे डाला है।"

"लेकिन इस समय यहां तुम किसलिए हो?"

"मैं अमेरिकी वर्दी का प्रदर्शन कर रहा हूं।" निक ने कहा, "आपके ख्याल में क्या यह बहुत विशिष्ट नहीं है? कालर पर यह थोड़ा कसी है पर जल्द ही आप देखेंगे कि यही वर्दी पहने लाखों-लाखों अमेरिकी टिड्डियों की तरह घिर आएंगे। आप फतिंगे को जानते हैं। अमेरिका में जिसे हम फतिंगा कहते हैं, वह वास्तव में टिड्डी ही है। सच्चा फतिंगा छोटा और हरा और तुलना में कमज़ोर होता है। आपको सात-साला टिड्डी अथवा पतंगे में भ्रम नहीं करना चाहिए। फतिंगा एक विशेष प्रकार की स्थिर आवाज़ निकालता है जिसे इस क्षण मैं याद नहीं कर पा रहा हूं। मैं उसे याद करने की कोशिश करता हूं पर वह याद नहीं आती। मैं उसे कुछ-कुछ सुन पाता हूं और तब वह एकदम डूब जाती है। आप माफ करेंगे यदि मैं इस बातचीत को यहीं खत्म कर दूं।"

"मेजर मिल जाएं तो उन्हें खोजकर लाओ।" एड्जुटेण्ट ने दोनों धावकों में से एक से कहा।" मैं देखता हूं कि तुम्हें घाव लगे हैं।" वह निक से बोला।

"कितनी ही जगहों पर।" निक ने कहा। "यदि आप घावों के निशानों में रुचि रखते हैं तो मैं कितने ही रोचक निशान आपको दिखा सकता हूं। लेकिन मैं फतिंगों के बारे में बातें करना चाहूंगा। हम फतिंगे किन्हें कहते हैं? और वास्तविक टिड्डे क्या हैं? किसी समय इन कीड़ों ने मेरे जीवन में एक महत्वपूर्ण भाग अदा किया था। शायद इसमें आप रुचि ले सकें। मैं बोल रहा हूं और इस बीच वर्दी को आप देखते रह सकते हैं।"

एड़जुटेण्ट ने हाथ से दूसरे धावक को इशारा किया और वह भी चला गया।

"अपनी आंखें वर्दी पर जमाइए। आप जानते हैं, स्पैगनालिनी ने इसे बनाया था। आप भी इसे देख सकते हैं।" निक ने सिगनलरों से कहा। "वस्तुतः मेरे पास कोई पद नहीं है। हम अमेरिकी सलाहकार से सम्बद्ध हैं। यह उचित है कि आप इसे देखें। आप चाहें तो इसकी ओर घूर भी सकते हैं। मैं आपको अमेरिकी टिड्डियों के बारे में बताऊंगा। हम सदा ही हल्की भूरी टिड्डियों को पसन्द करते थे। पानी में वे बहुत देर तक ठहर सकती हैं। मछलियां उन्हें बहुत चाहती हैं। इनसे बड़ी वाली टिड्डियां उड़ते हुए एक आवाज़-सी करती हैं जो रैटिलस्नेक (घूं-घूं करने वाला एक अमेरिकी सांप) की घूं-घूं की तरह एक बहुत ही रूखी आवाज़ होती है। इनके पर स्पष्ट गहरे रंग के होते हैं। कुछ तेज़ लाल, अन्य काली धारियों के साथ पीले। लेकिन पानी में पड़ते ही इनके पर टूट जाते हैं और इनका चारा बड़ा ही बेकार-सा सिद्ध होता है। बीच के भूरे टिड्डे मोटे, ठोस और भरे-भरे होते हैं। यदि कोई किसी चीज़ की सिफारिश करना चाहे तो मैं इसकी सिफारिश कर सकता हूं और ऐसी चीज़ शायद आपको कहीं नहीं मिलेगी। लेकिन मैं कहूंगा कि दिन-भर मछली पकड़ने के लिए यदि इन कीड़ों की पर्याप्त मात्रा आप इकट्ठी करना चाहें, तो हाथों से या बल्ले से मारकर आप नहीं कर सकेंगे। ऐसा करना एकदम व्यर्थ होगा और समय गंवाना होगा। मित्रो, मैं फिर कहूंगा कि इस प्रकार आप कहीं नहीं पहुंच पाएंगे। सही तरीका जिसे, यदि मेरी बात सुनी जाए, तो सभी युवक अफसरों को छोटे हथियारों के प्रशिक्षण के बीच सिखाया जाना चाहिए, यह है कि सामान्य मच्छरदानी की जाली से बना एक बड़ा जाल इस्तेमाल में लाया जाए। इस जाल के विरोधी सिरों को दो अफसर पकड़ लें अथवा प्रत्येक सिरे को एक-एक पकड़ ले और झुककर एक हाथ में सिरे के निचले कोने को और दूसरे में उसके ऊपर के कोने को थाम ले और इस प्रकार वे हवा में दौड़ें। हवा में उड़ते हुए फतिंगे जाल के विस्तार से टकराएंगे और उसकी सलवटों में फंस जाएंगे। वास्तव में इसे फतिंगे को बहुत बड़ी मात्रा में पकड़ने वाला जाल नहीं कहा जा सकता। मेरी राय में कोई भी अफसर

फतिंगों को पकड़ने वाला ऐसा जाल बना सकने योग्य मच्छरदानी के एक लम्बे टुकड़े के बिना रहना नहीं चाहिए। मुझे आशा है मित्रो! अपनी बात मैंने समझाकर कह दी है। क्या कोई प्रश्न है? यदि कोई बात समझ में न आई हो तो कृपया प्रश्न पूछें। बोलिए। कोई नहीं? तो मैं इस प्रसंग को समाप्त करना चाहूंगा। उस महान सैनिक और श्रीमन्त सर हेनरी विल्सन के शब्दों में, सज्जनो, या तो आपको शासन करना चाहिए या शासित होना चाहिए। मैं इस बात को दोहराता हूं। सज्जनो, एक बात है, जिसे मैं चाहूंगा आप याद रखें। एक चीज़ है जिसे मैं चाहूंगा इस कमरे से जाते समय आप अपने साथ ले जाएं। सज्जनो, या तो आपको शासन करना चाहिए या फिर शासित होना चाहिए। बस सज्जनो, नमस्कार।"

उसने लोहे के टोप पर पड़ा कपड़ा हटाया। उसे फिर वहीं रख लिया और झुककर खाई के छोटे दरवाज़े से बाहर निकल गया। दोनों धावकों के साथ परा निचली सड़क पर से इधर ही चला आ रहा था। धूप बहुत तेज़ थी। निक ने अपना टोप उतार लिया।

"इन चीज़ों को भिगोने का एक तरीका होना चाहिए।" उसने कहा, "मैं इसे नदी पर भिगोऊंगा।" वह किनारे की ओर चल दिया।

"निकोलो," पराविचिनी ने पुकारा। "निकोलो, तुम कहां जा रहे हो?"

"मुझे जाने की ज़रूरत ही नहीं।" अपने टोप को हाथों में थामे निक ढलान से नीचे उतर गया। "गीले हों या सूखे, ये एक मुसीबत ही हैं। क्या तुम इसे हर समय पहने रहते हो?"

"हर समय।" परा ने कहा, "इससे मैं गंजा हुआ जाता। अन्दर आओ।"

अन्दर परा ने उसे बैठ जाने को कहा।

"तुम जानते ही हो ये एकदम किसी काम के नहीं हैं।" निक बोला, "मुझे याद है जब ये पहली बार हमें मिले थे तब ये आराम की चीज़ थे। लेकिन इतनी अधिक बार इनके नीचे उबलते मस्तिष्क मैं देख चुका हूं।"

"निकोलो," परा ने कहा, "मैं समझता हूं तुम्हें वापस तुम मोर्चे चले जाना चाहिए। अधिक अच्छा यही होगा कि पर तब तक न लौटो जब तक सब सामान तुम्हारे पास न हो। तुम्हारे करने के लिए यहां कुछ भी नहीं है। यदि देने योग्य कुछ पास लेकर भी तुम इधर-उधर घूमे तो लोग इकट्ठे हो जाएंगे। इससे दुश्मन गोले बरसाएगा। मैं ऐसा नहीं होने दूंगा।"

"मैं जानता हूं कि यह मूर्खतापूर्ण है।" निक ने कहा, "मेरा विचार ऐसा नहीं था। मैंने सुना था कि ब्रिगेड यहां है। इसलिए मैंने सोचा कि मैं तुमसे या किसी और जानकार से मिल लूं। मैं ज़ेन्ज़न या सानडोना जा सकता था। पुल को फिर देखने के लिए मैं सानडोना जाना चाहूंगा।"

"मैं तुम्हारा बिना मतलब इधर-उधर घूमना पसन्द नहीं करूंगा।" कप्तान पराविचिनी बोला।

"ठीक है।" निक ने कहा। उसने उसका आना फिर महसूस किया।

"तुम समझे?"

"क्यों नहीं?" निक ने कहा। वह उसे थामने की कोशिश कर रहा था।

"ऐसी कोई भी चीज़ रात में की जानी चाहिए।"

"ठीक है।" निक बोला। वह जानता था, वह उसे अब रोक नहीं सकता।

"तुम देखते हो, मैं इस बटालियन का नेतृत्व कर रहा हूं।" परा ने कहा।

"और करो भी क्यों नहीं।" निक ने कहा और अब वह आ चुका था। "तुम पढ़ सकते हो और लिख सकते हो। है न?"

"हां" परा धीमे से बोला।

"पर मुसीबत यह है कि तुम्हारे पास यह कम्बख्त छोटी-सी बटालियन है और जैसे यह बढ़कर ताकत पकड़ेगी, तुम्हें तुम्हारी कम्पनी वापस दे दी जाएगी। मृतकों को दफना क्यों नहीं दिया जाता? मैं उन्हें देख चुका हूं।

उन्हें दुबारा देखना मैं नहीं चाहूंगा। जहां तक मेरा सम्बन्ध है उन्हें किसी भी समय दफनाया जा सकता है। तुम सबके लिए तो यह अच्छा ही होगा। तुम सब सख्त बीमार पड़ जाओगे।"

"अपनी साइकल तुमने कहां छोड़ी थी?"

"आखिरी घर के अन्दर।"

"क्या वह सही-सलामत होगी?"

"चिन्ता न करो।" निक ने कहा। "मैं अभी चला जाऊंगा।"

"निकोलो, कुछ देर लेट लो।"

"ठीक है।"

उसने अपनी आंखें बन्द कीं और दाढ़ी वाले उस आदमी की जगह, जो सफेद चमक और गदा जैसी चोट से आहत होकर चुपचाप घुटनों के बल गिर जाने और जब वे उसके पास से गुज़र रहे हों तो दमघोंट पसीने से नहाकर चट्टान पर उलटी करने से पहले राइफल की नालियों के ऊपर से उसकी ओर देख रहा था, उसे नीचे अस्तबल वाला एक लम्बा पीला घर और एक नदी दीख पड़ी जो पहले से अधिक चौड़ी और स्थिर थी।

"हे भगवान!" उसने कहा, "मुझे अब चलना चाहिए।"

वह उठ खड़ा हुआ।

"परा, मैं जा रहा हूं।" उसने कहा। "इस तीसरे पहर मैं साइकल पर जा सकूंगा। यदि सामान आ गया होगा तो मैं उसे आज रात ले आऊंगा। यदि नहीं तो जब लाने के लिए कुछ होगा, तभी रात के समय मैं आऊंगा।"

"साइकल पर जाने के लिए अभी बहुत धूप है।" कप्तान पराविचिनी ने कहा।

"चिन्ता की ज़रूरत नहीं है।" निक बोला। "काफी समय से मैं अब बिल्कुल ठीक हूं। एक दौरा तब मुझे पड़ा था पर वह सरल था। अब स्थिति

अधिक अच्छी होती जा रही है। मैं बहुत अधिक बोलता हूं, इसलिए मैं बता सकता हूं कि दौरा कब पड़ने वाला है।"

"मैं एक धावक तुम्हारे साथ भेज दूंगा।"

"कोई ज़रूरत नहीं।"

"तुम जल्द ही लौटोगे?"

"निश्चय ही।"

"मैं किसीको भेजूं?"

"नहीं।" निक ने कहा।

"अच्छा तो प्रणाम।"

"प्रणाम।" निक ने कहा। वह निचली सड़क पर से वापस उस ओर बढ़ा जहां वह साइकल छोड़ आया था। दोपहर बाद का समय है और जैसे ही वह नहर को पीछे छोड़ जाएगा, छायादार सड़क मिलेगी। उससे आगे दोनों ओर पेड़ हैं जो किसी गोले से झुलसे नहीं हैं। इसी टुकड़े पर एक बार वे मार्च करते हुए टेरजा सवोया घुड़सवार पलटन के पास से गुज़रे थे जो अपने भाले लिए बर्फ में चल रही थी। घोड़ों की सांसों से ठंडी हवा में कलगियां बन रही थीं। नहीं, यह कहीं और हुआ था। कहां हुआ था?

"अच्छा हो मैं उस कम्बख्त साइकल तक पहुंच जाऊं।" निक ने अपने से कहा, "मैं फोरनाकी के रास्ते को भूलना नहीं चाहता।"

पिकनिक

गाड़ी पटरी पर बढ़ती गई और जले हुए पेड़ों से ढकी पहाड़ी पर घूमकर आंखों से ओझल हो गई। निक, माल के डिब्बे में से चौकीदार द्वारा नीचे फेंके गए अपने कैनवस के बंडल और बिस्तर पर बैठ गया। यहां कोई नगर नहीं था। बस, रेल की पटरियां थीं और जला पड़ा प्रदेश था। सीनी की एक गली में स्थित कतारबन्द तेरह दुकानों का निशान भी बाकी नहीं बचा था। मैनशन हाउस होटल की नींवें धरती के बाहर उभरी थीं। आग ने पत्थर को चटखा दिया था और उसकी चिप्पियां उड़ा दी थीं। सीनी नगर का बस यही अवशेष बाकी बचा था। यहां तक कि सतह तक जलकर धरती भी टूट गई थी।

जहां निक ने नगर के छितरे-बिखरे घरों को देखने की आशा की थी, वहां बस पहाड़ी का यह भस्मसात् विस्तार ही उसे दीख पड़ा। रेल की पटरी पर चलकर वह नदी के पुल की ओर बढ़ा। नदी बह रही थी। पुल की लट्ठों की छड़ों से वह टकरा रही थी। निक ने साफ, भूरे और पथरीली तली से ही रंगे पानी में झांका और ट्राउट मछलियों को हिलते पंखों के सहारे स्वयं को धारा में स्थिर रखते हुए देखा। उसके देखते-देखते द्रुत-कोण बनाती हुई वे अपनी स्थितियों को इसलिए बदल रही थीं कि तेज़ पानी में स्वयं को थामे रख सकें। निक बहुत देर तक उन्हें देखता रहा।

बहुत-सी ट्राउट मछलियां गहराई में तेज़ चलती धारा में स्वयं को अपनी नाकों के सहारे रोके थीं और उन्हें वह जब जल-कुण्ड की शीशे-जैसी, बीच में से उभरी सतह में से देखता था तो वे उसे थोड़ा अपरूप-

सी लग उठती थीं। नदी की सतह लकड़ी के लट्ठों के ढेर से बने पुल के अवरोध के विरुद्ध फूलकर तेज़ बह रही थी और उसे धकिया रही थी। जल-कुण्ड की तली में बड़ी-बड़ी ट्राउट मछलियां थीं। पहले तो निक उन्हें देख नहीं पाया। तब कुंड की तली में उसे वे बाद में दीख पड़ीं। धारा के आकस्मिक प्रवाहों के द्वारा उठाए गए रेत और बजरी के विभिन्न झोंकों के बीच भी पथरीली तली पर वे स्वयं को थामे थीं।

निक ने पुल पर से उस जल-कुंड में झांका। दिन गर्म था। एक रामचिरैया सोते पर से होकर उड़ी। बहुत समय पहले निक ने किसी सोते में झांका था और ट्राउट मछलियों को देखा था। ये बहुत सन्तोषजनक थीं। जैसे ही राम-चिरैया की छाया सोते पर से सरकी, एक बड़ी ट्राउट मछली एक लम्बा कोण बनाती हुई सतह के ऊपर को लपकी। पहले सिर्फ उसकी छाया ही कोण को चिह्नित कर रही थी। पर जैसे ही वह पानी की सतह में से ऊपर छूटी, उसकी छाया ख़त्म हो गई क्योंकि अब वह धूप में आ गई थी। फिर जैसे ही वह सतह के नीचे धारा में वापस पहुंची, उसकी छाया सोते के भीतर धारा के साथ-साथ बिना रुके, पुल के नीचे अपने थान की ओर बहती दीखने लगी। यहां पहुंचकर वह तन गई और धारा का मुकाबला-सा करने लगी।

निक का हृदय ट्राउट को चलते देखकर कस-सा आया। पुराने सब भाव उसने फिर महसूस किए।

वह मुड़ा और उसने सोते में झांका। वह दूर तक फैला था। पथरीली तली पर छिछले स्थल उसमें थे। बड़े-बड़े ढ़ोंके भी थे और एक चट्टान के पैरों में, गोलाई में को घूमते समय एक गहरा कुंड-सा उसमें बन रहा था।

निक पटरी पर वापस लौटा। यहीं रेल लाइन की बराबर फैली राख में उसका सामान पड़ा था। वह खुश था। उसने पेटी को गट्ठर के चारों ओर ठीक किया। उसे खींचकर अच्छी तरह कसा और बोझ को अपनी पीठ पर उठा लिया। अपनी बांहों को उसने कन्धे वाली पट्टियों में से निकाला और

माथे पर आई चौड़ी पट्टी पर जोर डालकर और उसे सामने की ओर दबाकर कन्धों पर का भार कुछ कम कर लिया। गट्ठर अब भी बहुत भारी था। बहुत अधिक भारी था। बंसी का चमड़े का खोल उसके हाथ में था। गट्ठर के बोझ को कन्धों पर ऊंचे थामे रखने के लिए सामने की ओर झुका हुआ वह रेल की पटरी के समानान्तर चलती सड़क पर चला जा रहा था। जला हुआ नगर पीछे छूट रहा था। अब वह एक पहाड़ी के चतुर्दिक घूम गया जिसके दोनों ओर एक-एक अग्नि-चिह्नित पहाड़ी खड़ी थी और उस सड़क हो लिया जो वापस देहात में जा रही थी। भारी गट्ठर के बोझ से वह दर्द महसूस कर रहा था और सड़क पर बढ़ा चल रहा था। सड़क स्थिरतापूर्वक ऊंची हो रही थी। पहाड़ी पर चढ़ना एक कठिन काम होता है। उसके पट्ठे कसकने लगे। दिन गर्म था। पर निक खुशी महसूस कर रहा था। वह महसूस कर रहा था कि वह सब कुछ पीछे छोड़ आया है—सोचने की ज़रूरत, लिखने की ज़रूरत और दूसरी ज़रूरतें। वह सभी कुछ पीछे छोड़ आया है।

जिस समय से वह गाड़ी से नीचे उतरा था और माल के चौकीदार ने खुले डिब्बे के दरवाज़े से उसका गट्ठर बाहर फेंक दिया था, सभी कुछ बदल गया था। सीनी नगर जल चुका था। देहात जला पड़ा था और बदला हुआ था। पर इससे कोई अन्तर नहीं पड़ता। सभी कुछ तो जल नहीं सकता, इतना वह जानता था। सड़क पर पैदल ही वह बढ़ता गया। धूप में पसीना आता गया और पहाड़ियों की उस श्रेणी को पार करने के लिए वह चढ़ता गया जो रेल लाइन को चीड़ के मैदानों से अलग कर रही थी।

सड़क बढ़ी जा रही थी। जब-तब वह नीचे दबती थी पर अधिकतर ऊपर चढ़ती जाती थी। निक चढ़ता चला गया। अन्ततः जले हुए पहाड़ी प्रदेश में समानान्तर बढ़ती सड़क शिखर पर पहुंच गई। निक एक ठूंठ से लगकर सीधा हो गया और गट्ठर के फन्दे में से बाहर निकल आया। उसके सामने जहां तक भी वह देख सकता था, चीड़ का मैदान ही मैदान दीख पड़ता था। जला हुआ प्रदेश पहाड़ियों की श्रेणी के साथ बायें ही रुक गया

था। आगे मैदान में घने चीड़ के द्वीप अलग उभरे दीख पड़ रहे थे। बहुत दूर बायीं ओर नदी की रेखा थी। निक की दृष्टि वहां तक पहुंची और उसने धूप में झलकते पानी को देखा।

उसके सामने चीड़ के मैदान के सिवाय और कुछ नहीं था। बस, बहुत दूर पर नीली पहाड़ियां थीं जो लेक सुपीरियर के ऊंचे प्रदेश का सीमांकन कर रही थीं। मैदान के ऊपर पड़ती तेज़ धूप में वे धुंधली और सुदूर थीं, और कठिनाई से ही दीख पड़ रही थीं। जब वह बहुत स्थिरतापूर्वक देखता तो वे गायब दीखतीं, पर जब ज़रा आधा ही देखता तो उस ऊंचे प्रदेश की वे सुदूरस्थ पहाड़ियां साफ दीख पड़ जाती थीं।

निक उस जले हुए ठूंठ के सहारे बैठ गया और सिगरेट पीने लगा। उसका गट्ठर ठूंठ के ऊपर टिका था। पट्टा लटका था और पीठ पर कसे रहने के कारण उसमें एक खोखल बन गया था। निक बैठा सिगरेट पी रहा था और सामने की भूमि की ओर देख रहा था। अपना नक्शा निकालने की उसे ज़रूरत नहीं थी। नदी की स्थिति से वह समझ रहा था कि वह कहां है।

सिगरेट पीते-पीते उसकी टांगें सामने की ओर फैल गईं। एक फतिंगे को उसने ज़मीन पर चलते और अपनी ऊनी जुराब पर चढ़ते हुए देखा। फतिंगा काला था। जब वह सड़क पर चल रहा था तब चढ़ते हुए धूल में पड़े कितने ही फतिंगों को उसने चौंकाया था। वे सभी काले थे। पीले और काले या लाल और काले परों वाले बड़े फतिंगे वे नहीं थे जो अपने काले परों के आवरण में से फरफराते हुए निकलकर ऊपर उड़ जाया करते हैं। ये तो बस मामूली फतिंगे थे। पर सभी का रंग गहरा काला था। जब वह चल रहा था तो उनके बारे में सचमुच ही कुछ सोचे बिना भी उनपर उसने आश्चर्य किया था। अब वह उस काले फतिंगे को देख रहा था जो अपने चौकोर होंठ से उसके ऊनी जुराब को कुरक रहा था। उसने महसूस किया कि इस जली हुई धरती पर रहने के कारण ही यह सब काले पड़ गए हैं। उसने महसूस किया कि आग पिछले वर्ष लगी होगी पर फतिंगे अब काले पड़े हैं। वह सोचने लगा, ऐसे ये कब तक रहेंगे।

उसका हाथ सतर्कतापूर्वक नीचे उतरा और उसने फतिंगे को परों से थाम लिया। उसने उसे उलटा कर दिया। अब उसकी सभी टांगें हवा में चल रही थीं। उसने उसके जुड़े हुए पेट को देखा। हां, यह भी काला है और जहां पीट और सिर धूल के रंग के हैं वहां बहुरंगा है।

"फतिंगे, जाओ।" पहली बार जोर से बोलते हुए निक ने कहा, "कहीं उड़ जाओ।"

उसने फतिंगे को हवा में उछाल दिया और उसे तैरकर सड़क के पार कोयले के एक ठूंठ की ओर जाते देखा।

निक उठ खड़ा हुआ। ठूंठ पर सीधे रखे अपने गट्ठर के बोझ के नीचे अपनी कमर उसने झुककर लगाई और कन्धे के पट्टे में अपनी बाहें डाल लीं। वह गट्ठर को पीठ पर लेकर पहाड़ी के शिखर पर खड़ा हो गया और उस प्रदेश के पार सुदूर नदी की ओर देखने लगा। तब वह सड़क से हटकर पहाड़ी की बगल पर उतर चला। अभी उसे बहुत काफी चलना था। ढलान पर 200 गज़ नीचे जला हुआ क्षेत्र समाप्त हो जाता था। यहां से टखनों जितनी ऊंची मीठी फर्न घास उगी थी। उसके और छोटे चीड़ के गल्मों के बीच से उसे चलना पड़ा। यह एक लम्बी, ऊंची-नीची भूमि थी जिसमें बार-बार उतार-चढ़ाव आते थे। पैरों के नीचे ज़मीन रेतीली थी और वह हिस्सा जीवन से पूर्ण था।

दिशा का ध्यान निक सूर्य के सहारे रख रहा था। वह जानता था किस स्थल पर उसे नदी को छना है। चीड़ के जंगल के बीच वह चलता गया। छोटी-छोटी चढ़ाइयों पर वह चढ़ता और अन्य चढ़ाइयां उसे अपने सामने दीखतीं। कभी-कभी एक टीले के सिर पर से अपने दायें या बायें चीड़ का कोई विशाल ठोस द्वीप उसे दीख पड़ता। उसने एरिका झाड़ी के मीठे फर्न की कुछ टहनियां तोड़ लीं और उन्हें अपने गट्ठर की पट्टियों के नीचे रख लिया। रगड़ से वे कुचल गईं और चलते-चलते वह उनकी गन्ध लेता गया।

ऊंचे-नीचे छायाहीन चीड़ के क्षेत्र में चलते-चलते वह थक गया और बहुत गर्मा उठा। वह जानता था कि किसी भी क्षण बायीं ओर मुड़कर वह नदी पर पहुंच सकता है। नदी एक मील से अधिक दूर नहीं हो सकती। पर वह उत्तर की ओर चलता गया। एक दिन-भर चलकर नदी के मुहाने की ओर जितनी दूर तक भी वह जा सकता था, वह जाना चाहता था।

चलते-चलते कुछ देर से निक चीड़ के बड़े द्वीपों में से उस एक को देख रहा था जो उसी ऊंची गोलाकार ज़मीन पर एक ओर, जिसे इस समय वह पार कर रहा था, खड़ा था। वह नीचे को दबा और तब जैसे ही धीमे-धीमे टीले की चोटी पर पहुंचा, वह मुड़ा और चीड़ के पेड़ों की ओर बढ़ गया।

चीड़ के पेड़ों के इस द्वीप पर छोटी घास-पतवार नहीं थी। पेड़ों के तने सीधे ऊपर उठे थे या टेढ़े होकर एक-दूसरे की ओर बढ़ गए थे। तने सीधे, भूरे और शाखा-विहीन थे। शाखाएं बहुत ऊंचाई पर थीं। वे परस्पर कुछ ऐसी उलझी थीं कि जंगल के भूरे फर्श पर गहरी छाया डाल रही थीं। पेड़ों के इस गुल्म के चारों ओर एक खाली पट्टी थी। निक इसपर चला। यह भूरी और पैरों के नीचे मुलायम थी। ऊंची शाखाओं के घेरे के पार चीड़ के फूल-पत्तों से बना यह एक अतिरिक्त फर्श था। पेड़ बहुत लम्बे उगे थे। शाखाएं बहुत ऊंची हो उठी थीं और इस खाली जगह को, जिसपर कभी उन्होंने छाया की थी, अब खुली धूप में छोड़ दिया था। जंगल के फर्श के इस बढ़ाव के ठीक किनारे से ही मीठी फर्न शुरू हो जाती थी।

निक ने अपना गट्ठर नीचे लुढ़का दिया और छाया में लेट गया। वह पीठ के बल लेटा और चीड़ के पेड़ों में से ऊपर देखने लगा। उसने स्वयं को फैला लिया और उसकी गर्दन और पीठ और कमर के पिछले भाग को आराम मिलने लगा। पीठ से लगी ज़मीन भली महसूस हो रही थी। शाखाओं के बीच से उसने आकाश की ओर देखा और अपनी आंखें बन्द कर लीं। फिर उन्हें खोला और फिर ऊपर देखा। शाखाओं में ऊंचाई पर हवा चल रही थी। उसने फिर आंखें बन्द कीं और सो गया।

निक जगा तो अकड़ा और सिकुड़ा हुआ था। सूर्य लगभग डूब रहा था। उसने गट्ठर उठाया तो वह भारी लगा। पट्टियां पीड़ा देने लगीं। गट्ठर को लिए वह आगे को झुक आया। बंसी का चमड़े का खोल उसने उठा लिया और चीड़ के पेड़ों से निकलकर मीठी फर्न घास को पार करता नदी की ओर चल पड़ा। वह जानता था कि नदी मील-भर से अधिक दूर नहीं हो सकती।

ठूंठों से ढके एक ढलान से नीचे उतरकर वह एक घास के मैदान में आ गया। मैदान के किनारे पर ही नदी बह रही थी। नदी पर पहुंचकर निक को खुशी हुई। मैदान के बीच से वह नदी के साथ-साथ बढ़ चला। चलते-चलते उसकी पतलून ओस से तर हो गई। दिन-भर की गर्मी के बाद ओस तेज़ी से और भारी मात्रा में गिरी थी। नदी कोई आवाज़ नहीं कर रही थी। वह बहुत तेज़ और समतल थी। घास के मैदान के किनारे पहुंचकर तम्बू गाड़ने के लिए एक ऊंचे भूखण्ड पर चढ़ने से पहले निक ने नीचे नदी में ट्राउट मछलियों का उछलना देखा। ये उन कीड़ों को पकड़ने के लिए उछल रही थीं जो सूर्य छिपने के बाद सोते के दूसरी ओर की दलदल में से आ रहे थे। इन्हें पकड़ने के लिए ट्राउट पानी के बाहर उछलती थीं। जब निक सोते के साथ-साथ मैदान के छोटे-से टुकड़े को पार कर रहा था तो एक ट्राउट पानी से बाहर ऊंची उछली थी। अब उसने नदी की ओर देखा तो उसे लगा कि कीड़े अब सतह पर बैठ गए होंगे, क्योंकि ट्राउट पूरे सोते पर उन्हें अविराम पकड़ रही थीं। जितनी दूर लम्बाई तक भी वह देख सकता था ट्राउट उछल रही थीं और पानी की सतह पर घेरे बना रही थीं। लगता था, जैसे वर्षा हो रही हो।

पेडों से ढकी रेतीली ऊंची ज़मीन पर से घास का मैदान, नदी का फैलाव और दलदल सभी कुछ दीख पड़ रहा था। निक ने अपना गट्ठर और बंसी का खोल नीचे गिरा दिया और ज़मीन के एक समतल टुकड़े की खोज करने लगा। वह बहुत भूखा था और खाना पकाने से पहले अपना तम्बू लगा लेना चाहता था। दो छोटे चीड़ों के बीच ज़मीन एकदम चौरस थी। गट्ठर में से

उसने कुल्हाड़ी निकाली और बाहर निकली दो जड़ों को काट फेंका। इससे ज़मीन का इतना काफी टुकड़ा एकसार हो गया कि उसपर सोया जा सके। रेतीली मिट्टी को उसने हाथ से फैला दिया और मीठी फर्न के गुच्छों को जड़ से उखाड़ फेंका। मीठी फर्न के स्पर्श से उसके हाथ मीठी गन्ध देने लगे थे। उखड़ी ज़मीन को उसने फिर चौरस किया। वह नहीं चाहता था कि कोई भी चीज़ बिस्तर के नीचे गांठ बनकर चुभे। जब ज़मीन ठीक हो गई तो उसने अपने तीनों कम्बल उसपर बिछा दिए। ज़मीन के ऊपर वाले कम्बल को उसने दुहरा कर दिया। दूसरे दोनों उसके ऊपर बिछा दिए।

कुल्हाड़ी से एक ठूंठ में से चीड़ का एक बढ़िया टुकड़ा उसने काट लिया और उससे तम्बू के लिए खूंटियां बना लीं। वह लम्बी और ठोस खूंटियां चाहता था जो ज़मीन में थमी रहें। तम्बू उसने खोल लिया और उसे ज़मीन पर बिछा लिया। एक चीड़ से टिका गट्ठर अब बहुत छोटा लग रहा था। तम्बू की घन्नी का काम देने वाली रस्सी को निक ने चीड़ के पेड़ों में से एक के तने से बांध दिया और रस्सी के दूसरे सिरे से तम्बू को ज़मीन के ऊपर खींचकर उसे एक दूसरे चीड़ से कस दिया। रस्सी पर लटका तम्बू अलगनी पर फैले कैनवस के कम्बल जैसा लग रहा था। निक ने अभी-अभी काटे एक बांस को कैनवस के बीच की चोटी में पिरो दिया और तब बगलों को खूंटियों से दबाकर उसे तम्बू का रूप दे डाला। बगलों को उसने तानकर कसा और खूंटियों को गहरा गाड़ दिया। फिर कुल्हाड़ी के पिछवाड़े से उन्हें ज़मीन में तब तक ठोकता गया जब तक रस्सी के फन्दे भी अन्दर न गड़ गए और कैनवस ढोल की तरह कस न गया।

तम्बू के खुले द्वार पर निक ने एक झीना कपड़ा लटका दिया जिससे मच्छर दूर रहें। गट्ठर में से कितनी चीजें वह इस मच्छरदानी के नीचे से रेंगकर अन्दर ले गया और उन्हें कैनवस के कोण की जड़ में बिस्तर के सिरहाने रख दिया। भरे कैनवस में से छनकर रोशनी तम्ब के अन्दर आ रही थी। कैनवस सुहानी गन्ध दे रहा था। अभी से कुछ रहस्यमय और घरेलू वातावरण वहां पैदा हो गया था। तम्ब के भीतर रेंगते हुए निक बहुत

खुश था। पूरे दिन भी वह नाखुश नहीं रहा था। हां, यह खुशी भिन्न थी। अब काम सब किए जा चुके थे। जो भी करना था वह किया जा चुका था। यात्रा कठिन नहीं थी। वह बहुत थका था। पर अब सब बीत चुका था। उसने तम्बू लगा लिया था। वह टिक गया था। कोई चीज़ उसे छू नहीं सकती थी। तम्बू के लिए यह बहुत बढ़िया जगह थी। वह यहां काफी अच्छी जगह में था। वह उस घर में था जिसे स्वयं उसने ही बनाया था।

मच्छरदानी के नीचे से रेंगकर वह बाहर निकला। बाहर एकदम अंधेरा था। तम्बू के अन्दर अधिक चांदना था।

निक गट्ठर के पास गया और उंगलियों से टटोलकर गट्ठर की तली में पड़े कागज़ के थैले में रखी कीलों में से एक लम्बी कील उसने निकाली। इसे उसने चीड़ के पेड़ में गाड़ दिया। इसे कसकर पकड़कर कुल्हाड़ी के पिछवाड़े से उसपर धीमी-धीमी चोट की। इस कील पर उसने गट्ठर लटका दिया। उसका सब सामान इस गट्ठर में ही था। जो अब ज़मीन से ऊपर और सुरक्षित था।

निक भूखा था। उसे लगता था कि इससे अधिक भूखा वह कभी नहीं रहा। सुअर के गोश्त और सेमों की एक कनस्तरी उसने खोली और कड़ाही में उलट दी। साथ ही मैदे के लच्छे का एक डिब्बा भी उसमें उलट दिया।

"यदि इस तरह की चीज़ों को ढोने के लिए मैं तैयार हूं तो इन्हें खाने का भी मुझे अधिकार है।" निक ने कहा। अंधेरे होते जंगल में उसकी आवाज़ बड़ी ही अजीब बनकर गूंज उठी। दुबारा वह नहीं बोला।

कुल्हाड़ी से एक ठूंठ को काटकर चीड़ की छिपटियों से उसने आग जलाई। आग के ऊपर तारों से बनी एक झंझरी उसने रख दी और उसकी चारों टांगों को बूट से ज़मीन के अन्दर धंसा दिया। निक ने कड़ाही को झंझरी पर लपटों के ऊपर रख दिया। वह बहुत भूखा था। सेम और लच्छे गर्म हो गए। निक ने उन्हें हिलाया और परस्पर मिला दिया। वे उबलने लगे। छोटे-छोटे बुलबुले बनने लगे और रुक-रुककर सतह तक पहुंचने लगे।

बड़ी अच्छी गन्ध उठ रही थी। निक ने टमाटर की चटनी की एक बोतल निकाली और डबल रोटी के चार टुकड़े काट लिए। छोटे बुलबुले अब और अधिक तेज़ी से उठ रहे थे। निक आग के पास बैठ गया और कड़ाही को उसने उतार दिया। उसमें से लगभग आधा उसने टीन की तश्तरी में उलट लिया। वह धीरे-धीरे तश्तरी पर फैल गया। निक जानता था, वह बहुत गर्म है। थोड़ी टमाटर की चटनी उसने उसपर डाल ली। वह जानता था, सेम और लच्छे अभी तक भी बहुत अधिक गर्म हैं। उसने आग की ओर देखा। फिर तम्बू की ओर देखा। अपनी जीभ जलाकर इस सारे मज़े को वह खराब नहीं करेगा। वर्षों से उसने भने हुए केलों का आनन्द नहीं लिया है क्योंकि उनके ठंडा होने की प्रतीक्षा वह नहीं कर सका है। उसकी जीभ बहुत संवेदनशील है। वह बहुत भूखा था। नदी के पार लगभग अंधेरे में दलदल में से एक कुहरे को उठते उसने देखा। एक बार फिर उसने तम्बू पर दृष्टि डाली। सब ठीक है। तश्तरी में से एक चम्मच भरकर उसने मुंह में डाल लिया।

"वाह!" निक बोला, "बहुत बढ़िया।" उसने खुशी से कहा।

डबल रोटी की याद आने तक पूरी तश्तरी वह साफ कर गया। दूसरी तश्तरी उसने रोटी के साथ खत्म की। तश्तरी को उसने पोंछकर चमका दिया। सेंट इग्रेस में स्टेशन के रेस्तरां में रान की एक सैंडविच और एक कप काफी के बाद से उसने कुछ नहीं खाया था। भूख इससे पहले भी उसे लगी थी, पर वह उसे तृप्त नहीं कर सका था। अगर वह चाहता तो तम्बू घण्टों पहले लगा लेता। तम्बू के लिए कितने ही बढ़िया स्थान नदी पर थे। पर सबसे अच्छा यही था।

चीड़ की दो बड़ी छिपटियां निक ने अंगीठी के नीचे डाल दीं। आग फिर जल उठी। काफी के लिए पानी लाना वह भूल गया था। गट्ठर में से कैनवस की एक मुड़ी-तुड़ी बाल्टी वह निकाल लाया और टीले से उतरकर घास के मैदान के साथ बहते सोते की ओर बढ़ा। दूसरा किनारा सफेद कुहरे से ढका था। घास गीली और ठंडी थी। वह किनारे पर झुका और कैनवस

की बाल्टी को सोते में डुबो दिया। यह पानी से भर गई और धारा के साथ खिंचने लगी। पानी बर्फ जैसा ठंडा था। निक ने बाल्टी निकाल ली और उसे पूरी भरकर तम्बू की ओर चल पड़ा। सोते से ऊपर इतना ठंडा नहीं था।

एक दूसरी बड़ी कील उसने गाड़ी और पानी से भरी बाल्टी को उसपर लटका दिया। काफी के बर्तन को डुबोकर आधा भरा। कुछ और छिपटियां अंगीठी के नीचे आग में डालीं और बर्तन ऊपर रख दिया। उसे याद नहीं आ रहा था कि काफी वह किस ढंग से बनाया करता था। बाद में याद आया कि इस बारे में एक बार हापकिन्स से बहस हो गई थी। पर उसने क्या पक्ष लिया था यह वह सोच नहीं पा रहा था। उसने तय किया कि पानी को उबाल लिया जाए। उसे अब याद आया यह तो हापकिन्स वाला तरीका है। एक बार हर चीज़ के बारे में हापकिन्स से उसने बहस की थी। काफी के उबलने के इन्तज़ार के बीच उसने खूबानियों की एक छोटी कनस्तरी खोली। कनस्तरियां खोलना उसे अच्छा लगता था। टीन के एक प्याले में उसने खूबानियों को उलट लिया। आग पर रखी काफी को वह देखता रहा। साथ ही साथ खूबानियों के रस को पीता रहा। शुरू में उसने ध्यान रखा कि रस बिखर न जाए। तब किसी सोच में डूबे-डूबे वह खूबानियों को चूसने लगा। ताज़ी खूबानियों से भी ये बढ़िया थीं।

उसके देखते-देखते काफी उबल गई। ढक्कन उछलने लगा और काफी और झाग बरतन से नीचे बहने लगा। निक ने उसे अंगीठी पर से उतार लिया। यह हापकिन्स की ही विजय थी। खूबानियों के खाली प्याले में उसने चीनी डाल ली और कुछ काफी ठंडी होने के लिए उसमें उंडेल ली। यह इतनी गर्म थी कि हाथ से उलटी नहीं जा सकती थी। काफी के बरतन के मुट्ठे को पकड़ने के लिए उसने अपने हैट का इस्तेमाल किया। वह प्याले को बर्तन में डुबोएगा नहीं। पहले प्याले को भी नहीं। सब कुछ एकदम हापकिन्स के तरीके से ही होना चाहिए। हाप इसका हकदार है। वह बड़ा ही गहरा, काफी पीने वाला था। निक की अब तक की जानकारी में वह गम्भीरतम व्यक्ति था। भारी नहीं, गम्भीर। बहुत समय पहले की बात है।

हापकिन्स बिना अपने होंठ हिलाए बोलता था। उसने पोलो भी खेली थी। टेक्सास में उसने लाखों डालर कमाए थे। जब उसे तार मिला कि उसका पहला बड़ा कुआं फूट आया है तो शिकागो जाने के लिए उसने कार का किराया उधार मांगा। वह पैसे के लिए तार दे सकता था। पर इससे अधिक देर ही लगती। लोग हाप की प्रेमिका को ब्लाण्ड वीनस कहा करते थे। हाप इसका बुरा नहीं मानता था क्योंकि वह उसकी असली प्रेमिका नहीं थी। हापकिन्स को पूरा विश्वास था कि कोई भी उसकी असली प्रेमिका का मज़ाक नहीं उड़ाएगा। यह यही था। तार आते ही हापकिन्स चला गया। यह ब्लैक रीवर की बात है। तार उस तक पहुंचने में आठ दिन लग गए थे। हापकिन्स ने अपनी की स्वयं-चालित काल्ट पिस्तौल निक को दे दी थी। अपना कैमरा उसने विल को दे दिया। इसलिए दिया कि उसे हमेशा याद रखा जाए। अगली गर्मियों में वे मछलियां पकड़ने जाने वाले थे। हाप अमीर बन गया था। वह एक बढ़िया नौका ले सकता था। वे सब लेक सुपीरियर के उत्तरी तट पर लंगर डालेंगे। वह जोश में था। पर गम्भीर था। उन्होंने उसे विदा दी और सभीने दुःख महसूस किया। सैर की योजना यहीं समाप्त हो गई। हापकिन्स इसके बाद कभी नहीं दीख पड़ा। यह सब बहुत समय पहले ब्लैक रीवर में गुज़रा था।

निक ने काफी पी। काफी, जो हापकिन्स के अनुसार तैयार की गई थी। निक हंसा। इससे कहानी का एक बढ़िया अन्त हो गया। उसका दिमाग हरकत में आ रहा था। वह जानता था, वह उसे घोंट सकता है, क्योंकि वह काफी थक चुका है। उसने काफी को बरतन से बाहर बिखरा दिया और तलछट को आग में फेंक दिया। एक सिगरेट उसने जला ली और तम्बू के अन्दर चला गया। कम्बलों पर बैठकर जूते और पतलून उसने उतारे और जूतों को पतलून में लपेटकर, तकिया बनाकर कम्बलों के बीच रख लिया।

तम्बू के दरवाज़े में से आग की चमक दीख पड़ रही थी। जब-तब रात की हवा उसे भड़का देती थी। रात शान्त थी। दलदल पर भी पूरी शान्ति

थी। निक आराम से कम्बल के अन्दर फैल गया। एक मच्छर उसके कान के पास भन-भनाया। निक उठा और उसने एक माचिस जलाई। मच्छर उसके सिर के ऊपर कैनवस पर था। निक तीली को जल्दी से उस तक ले गया। मच्छर लौ में जल गया। माचिस बुझ गई। निक फिर कम्बल में लिपटकर लेट गया। उसने करवट ली और आंखें बन्द कर लीं। उसे झपकी आ रही थी। नींद को उसने आते हुए महसूस किया। कम्बल के नीचे वह गुड़ी-मुड़ी हो गया और सो गया।

सुबह सूर्य उठ आया था और तम्बू गर्म होने लगा था। निक मच्छरदानी के नीचे रेंगकर तम्बू के दरवाज़े के पार फैला और प्रभात को देखने लगा। वह बाहर सरका तो उसके हाथ ओस से गीली घास पर पड़े। उसकी पतलून और जूते उसके हाथों में थे। सूर्य ठीक पहाड़ी के ऊपर था। सामने घास का मैदान था, नदी थी और दलदल थी। नदी के उस पार दलदल की हरियाली के बीच भोज के वृक्ष खड़े थे।

सुबह के समय नदी साफ थी और तेज़ी से बह रही थी। लगभग 200 गज़ नीचे सोते की पूरी चौड़ाई पर तीन लट्ठे पड़े थे। उनके ऊपर जल सपाट और गहरा था। निक के देखते-देखते एक ऊदबिलाव ने लट्ठों पर से नदी को पार किया और दलदल में घुस गया। निक उत्साह में था। प्रभात ने और नदी ने उसमें उत्तेजना भर दी थी। दरअसल नाश्ता कर लेने की उसे बहुत अधिक जल्दी हो उठी थी। पर वह जानता था कि जल्दी उसे करनी ही चाहिए। उसने थोड़ी-सी आग जलाई और काफी का बरतन उसपर रख दिया।

जब बरतन में पानी गर्म हो रहा था तो उसने एक खाली बोतल ली और नीचे उतरकर ऊंची भूमि की सीमा के पार घास के मैदान में घुस गया। मैदान ओस से गीला था और निक धूप से घास के सूख जाने से पहले ही चारे के लिए कुछ फतिंगे पकड़ लेना चाहता था। बढ़िया फतिंगे

बहुत काफी उसे मिल गए। वे घास की डण्ठलों की जड़ों में थे। कभी-कभी वे घास की डंठलों से चिपटे मिलते थे। ओस से गीले हो रहे थे और ठंड के कारण सिकुड़े थे। जब तक धूप उनमें गर्मी न ला दे, वे कूद नहीं सकते थे। निक ने उन्हें उठाया। सिर्फ बीच के आकार के भूरे फतिंगे ही उसने लिए और उन्हें उसने बोतल में रख लिया। जैसे ही उसने एक लट्ठे को उलटा, उसके नीचे सैकड़ों फतिंगे उसे दीख पड़े। यह फतिंगों का एक आवासगृह था। निक ने बीच के आकार के लगभग पचास भूरे फतिंगे बोतल में रख लिए। जब वह फतिंगों को उठा रहा था तो अन्य कुछ धूप से गर्माने लगे थे और उन्होंने फुदकना शुरू कर दिया था। जब वे फुदकते थे, तो उड़ते भी थे। पहले-पहले वे एक उड़ान भरते और जब धरती पर उतरते तो ऐंठकर ऐसे स्थिर हो रहते जैसे कि मर चुके हों।

निक जानता था, जैसे ही वह नाश्ते से निपटेगा, वे सदा की तरह जीवन से पूर्ण हो चुकेंगे। घास पर यदि ओस न होती तो बोतल-भर अच्छे फतिंगों को पकड़ने में उसे पूरा दिन लग जाता। और जब वह अपने हैट से उन्हें नीचे पटकता तो कितने ही कुचले जाते। सोते पर उसने अपने हाथ धोए। सोते के निकट आने पर उसमें एक स्फुरण पैदा हुआ। वह अपने तम्बू की ओर लौट आया। घास में फतिंगे अभी से कुछ तने-तने-से फुदकने लगे थे। बोतल में धूप से गर्माकर वे एकसाथ फुदक रहे थे। चीड़ की एक लकड़ी को निक ने डाट की तरह जड़ दिया। इससे बोतल का मुंह इतना काफी बन्द हो गया कि फतिंगे बाहर निकल न सकें और उन्हें काफी हवा भी मिल जाए।

लट्ठे को उसने वापस उलट दिया। वह जानता था कि यहां से हर सुबह फतिंगे उसे मिल सकते हैं।

फुदकते फतिंगों से भरी बोतल को उसने चीड़ के तने से टिका दिया। जल्दी से उसने मोथी का थोड़ा-सा आटा लिया और उसमें पानी मिलाकर उसे अच्छी तरह गूंथ लिया। एक प्याला आटा और एक प्याला पानी उसने मिलाया। अब उसने मुट्ठी भर काफी बर्तन में डाल दी और एक कनस्तरी

में से लेकर चर्बी की एक डली को चटचटाने के लिए गर्म पतीली में छोड़ दिया। धुआं देती पतीली में मोथी का आटा उसने इकसार ढंग से डाल दिया। यह लावे की तरह फैल गया। चर्बी तेज़ी से चटचटा उठी। मोथी के आटे का केक किनारों के पास सख्त पड़ने लगा। तब वह भूरी हो आई और कुरकुरी हो गई। सतह पर धीमे-धीमे बुलबुले उठ रहे थे और झिंझरियां डाल रहे थे। निक ने भूरी पड़ी निचली सतह को चीड़ की एक ताज़ी छिपटी से उचेटा। पतीली को उसने दोनों ओर को हिलाया और केक सतह पर ढीला हो आया। अब इसे और सेंककर नष्ट नहीं होने दूंगा। साफ लकड़ी की छिपटी को उसने केक के नीचे पूरी दूरी तक डाल दिया और उसे उलट दिया। वह पतीली में चटचटाने लगा।

जब निक उसे पका चुका तो पतीली पर उसने फिर चर्बी लगाई। सारा का सारा आटा उसने गूंथ लिया। इससे एक और बड़ा और एक छोटा पुआ तैयार हो गया।

निक ने सेब की चटनी लगाकर एक बड़ा और एक छोटा पुआ खा लिया। उसने तीसरे पुए पर भी सेब की चटनी लगाई। उसे चौहरा मोड़ा और तेलिये कागज़ में लपेटकर अपनी कमीज़ की जेब में रख लिया। सेब की चटनी के बर्तन को उसने वापस गट्ठर में रख दिया और दो सैंडविचें बनाने के लिए रोटी काटी।

गट्ठर में एक बड़ा प्याज़ उसे मिल गया। उसने इसके दो टुकड़े किए। बाहरी रेशमी पर्त को छीलकर फेंक दिया। तब एक अद्धे के उसने चन्दे काटे और प्याज़ के सैंडविच बनाए। उन्हें भी उसने तेलिये कागज़ में लपेट लिया और अपनी खाकी कमीज़ की दूसरी जेब में रखकर बटन बन्द कर लिए। उसने पतीली को झिंझरी पर ऊपर-नीचे हिलाया और कण्डेन्स्ड दूध से पीली भूरी बनी मीठी काफी को पिया। तम्बू को उसने ठीक-ठाक किया। यह एक बढ़िया तम्बू था।

निक ने अपनी बंसी को चमड़े के खोल में से बाहर निकाला। उसे जोड़ा और खोल को तम्बू में वापस उछाल दिया। उसने उसपर घिरनी जमाई और छल्लों में से डोरी को पिरोया। पिरोते समय डोरी को उसे एक हाथ से दूसरे हाथ तक थामे रहना पड़ा क्योंकि अपने बोझ के कारण वह पीछे फिसल-फिसल जाती थी। यह भारी और दुहरी मंजी डोरी थी। बहुत समय पहले निक ने इसे आठ डालर में खरीदा था। इसे भारी इसलिए बनाया गया था कि इसे हवा में उछाला जा सके और यह सपाट और भारी और सीधी बनकर वापस नीचे आ सके जिससे उस मक्खी को फेंका जा सके जिसमें कोई बोझ नहीं होता। निक ने तांतों का अल्यूमिनियम का डिब्बा खोला। फलालेन की गीली गद्दियों के बीच तांत बल खाए पड़े थे। निक ने सेंट इग्नेस में गाड़ी के कूलर से पानी लेकर गद्दियों को गीला कर लिया था। गद्दियों के बीच रहकर तांत मुलायम पड़ गए थे। निक ने उनमें से एक को खोला और भारी डोरी के सिरे से उसे गांठ लगाकर बांध दिया। तांत के सिरे पर उसने हुक फंसा दिया। यह एक छोटा-सा बहुत पतला और लचकदार हुक था।

जब निक बंसी को गोदी पर रखे बैठा था, उसी समय वह हुक उसने बटुवे में से निकाला था। डोरी को ज़ोर से खींचकर उसने गांठ और बंसी के स्प्रिंग की परीक्षा कर ली। उसे ठीक महसूस हुआ। उसने ध्यान रखा कि कहीं हुक उसकी उंगली में न चुभ जाए।

अब वह सोते की ओर चला। बंसी उसके हाथ में थी। एक तस्मे का आधा फंदा फतिंगों की बोतल की गर्दन पर कसा था और बोतल उसकी गर्दन से लटकी थी। मछली रखने का जाल एक हुक के सहारे उसकी पेटी से लटका था। उसके कन्धे से आटे का एक लम्बा बोरा झूल रहा था, जिसके दोनों कोनों के कानों को डोरी से कस दिया गया था। डोरी उसके कन्धे पर थी और बोरा टांगों पर फड़फड़ा रहा था।

सारा सामान अपने शरीर से लटकाए निक अजीब महसूस कर रहा था। पर इस कारोबारी रूप में वह खुश था। फतिंगों की बोतल उसकी छाती से टकरा रही थी। उसकी कमीज़ की सामने की जेबें खाने की चीज़ों और मक्खियों से बटुए-सी फूल रही थीं।

उसने सोते के अन्दर पैर रखा। उसे एक धक्का-सा लगा। उसकी पतलून कसकर उसकी टांगों से चिमट गई। उसके जूतों ने तली की कंकरीट को महसूस किया। पानी के सम्पर्क से एक ठंडी सिहरन ऊपर चढ़ी जा रही थी।

तेज़ बहती धारा उसकी टांगों से टकरा रही थी। जहां उसने पैर रखा था पानी घुटनों से ऊपर था। वह बहाव के साथ-साथ पानी में बढ़ा। कंकरीट उसके जूतों के नीचे फिसली। अपने हर कदम के नीचे तेज़ लहर के रूप में फिसलते पानी को उसने देखा और एक फतिंगा निकालने के लिए बोतल को खोला।

पहले फतिंगे ने बोतल की गर्दन में आकर एक फुदकी ली और पानी में कूद गया। निक की दायीं टांग के पास गिरकर वह एक भंवर के साथ नीचे चला गया और बहाव के साथ थोड़ा-सा आगे फिर सतह पर आ गया। वह बहुत तेज़ी से बहा और फड़फड़ाया। एक शीघ्र बनते घेरे के रूप में पानी की सतह के सपाटपन को उसने भंग किया और गायब हो गया। एक ट्राउट उसे ले गई थी।

दूसरे फतिंगे ने अपना चेहरा बोतल से बाहर निकाला। उसका सींग सिहरा। वह कूद जाने के लिए अपनी सामने की टांगों को बोतल से बाहर निकाल रहा था। निक ने उसे सिर से पकड़ा और पतले कांटे को उसकी ठुड्डी के नीचे से सीने और पेट के अन्तिम हिस्सों तक पिरो दिया। इस बीच उसे वह अच्छी तरह पकड़े रहा। फतिंगे ने कांटे को अपने सामने के पैरों से पकड़ लिया और उसपर तम्बाकू के रंग का रस उगलने लगा। निक ने उसे पानी में डाल दिया।

दायें हाथ से वह बंसी पकड़े था। धारा में पड़े फतिंगे के खिचाव के साथ-साथ वह डोरी छोड़ता गया। बायें हाथ से वह रील पर से डोरी उतार रहा था और उसे छोड़ रहा था। धारा की नन्हीं लहरों पर फतिंगा उसे दीख पड़ रहा था। तभी वह आंखों से ओझल हो गया।

डोरी पर एक झटका लगा। निक ने कस उठी डोरी को खींचा। यह उसकी पहली मछली थी। मछली-सहित बंसी को वह धारा के पार ऊपर थामे रहा। बायें हाथ से उसने बोरी को लपेटा। बंसी झटके खाती हुई झुकी। ट्राउट धारा के विरुद्ध फड़क रही थी। निक जानता था कि यह छोटी मछली है। निक ने बंसी को सीधा ऊपर उठा लिया। खिंचाव से वह झुक आई।

ट्राउट अपने सिर और शरीर से झटके दे-देकर फड़फड़ा उठी थी क्योंकि सोते पर पड़ी डोरी का कोण बदल रहा था।

निक ने डोरी को अपने बायें हाथ में लिया और धारा के विरुद्ध फड़फड़ाती थकी ट्राउट को सतह पर खींच लिया। उसकी पीठ कंकरीट के ऊपर बहते पानी के रंग-सी साफ चित्तीदार थी और उसकी बगल धूप में चमक रही थी। बंसी निक की दायीं बांह के नीचे थी। वह झुका। दायें हाथ को उसने धारा में डुबोया। निरन्तर स्थिर ट्राउट को उसने अपने गीले दायें हाथ से पकड़ा। कांटे को उसके मुंह से निकाला और सोते में वापस डाल दिया।

वह अस्थिरतापूर्वक धारा में अटकी रही और फिर एक पत्थर की बराबर में तली में बैठ गई। निक ने उसे छूने के लिए अपना हाथ नीचे डाला। कुहनी तक उसकी बांहें पानी में डूब गईं। ट्राउट चलती धारा में एक पत्थर की बगल में कंकरीट पर स्थिर पड़ी थी। जैसे ही निक की उंगलियों ने उसे छुआ, उसके नीचे को चिकने ठंडे पानी को छुआ, वह जा चुकी थी। वह सोते की तली में, पार, एक छायादार जगह में चली गई थी।

निक ने सोचा वह ठीक है। बस, थक गई है।

ट्राउट को छूने से पहले उसने अपना हाथ गीला कर लिया था। इस प्रकार ट्राउट पर चढ़ा कोमल चेप अस्त-व्यस्त नहीं हुआ होगा। यदि ट्राउट को सूखे हाथ से छुआ जाए तो सफेद फफूंद अरक्षित जगह पर

चिपक जाता है। बरसों पहले जब वह भीड़-भाड़ भरे सोतों पर मछली पकड़ा करता था, जब बंसियां लिए मछली मार उसके आगे और पीछे खड़े मिलते थे, तब बार-बार सफेद फफूंद वाली मृत ट्राउट मछलियां कभी किसी चट्टान से अटकीं, कभी किसी कुंड में पेट ऊपर किए बहती उसे मिल जाया करती थीं। निक को दूसरे आदमियों के साथ नदी पर मछली पकड़ना अच्छा नहीं लगता था। जब तक लोग अपने ही दल के न हों, वे सब गड़बड़ कर देते थे।

सोते के पार तक फैले लट्ठों के ढेर के ऊपर पचास गज़ के छिछले पानी में से घुटनों तक के जल में वह बहाव के साथ-साथ चला। कांटे पर उसने और चारा नहीं लगाया और पानी में चलते-चलते उसे हाथ में थामे रखा। उसे निश्चय था कि छिछले पानी में छोटी ट्राउट वह पकड़ सकता है। पर उन्हें वह चाहता नहीं था। दिन के उस समय छिछले पानी में बड़ी ट्राउट मिल ही नहीं सकती थी।

अब तेज़ और ठंडा पानी उसकी जांघ के ऊपर तक पहुंच रहा था। आगे लट्ठों के बांध पर रुके जल का समतल बहाव था। पानी सपाट और मैला था। बाईं ओर घास के मैदान का निचला कोना था और दाईं ओर दलदल थी।

निक ने बहाव के विरुद्ध झुककर बोतल में से एक फतिंगा निकाला। फतिंगे को उसने कांटे में पिरोया और भाग्य को अच्छा बनाने के लिए उसपर थूका। तब घिरनी पर से उसने कितनी ही गज़ डोरी खींच ली और फतिंगे को उस तेज़ धुंधले पानी पर आगे उछाल दिया। वह लट्ठों की ओर बहने लगा। तब डोरी के भार ने फतिंगे को सतह से नीचे खींच लिया। निक ने बंसी को दायें हाथ में थामा और डोरी को अपनी उंगलियों में से होकर छूटने दिया।

एक लम्बा तनाव आया। निक ने झटका दिया झौर मछली सहित बंसी खतरनाक रूप में दुहरी हो उठी। पानी से बाहर निकली डोरी तनी हुई थी और एक स्थिर, बोझीले और खतरनाक खिंचाव के कारण कसी हुई

थी। निक ने वह क्षण महसूस किया जब यदि ज़ोर बढ़ गया तो डोरी टूट जाएगी। उसने डोरी को खुलने दिया।

जैसे ही डोरी वेग के साथ खुली, घिरनी के यन्त्र में से एक चीज़ सी निकली। निक उसे रोक नहीं सका। डोरी तेज़ी से निकल रही थी और जैसे-जैसे डोरी खुलती थी, घिरनी की आवाज़ बढ़ती जाती थी।

जैसे-जैसे रील की तली उघड़ने लगी, घबराहट के कारण उसके हृदय की धड़कन रुकने-सी लगी। बहाव के विरुद्ध वह पीछे को झुका था और बर्फ का सा ठंडा पानी उसकी जांघ से भी ऊपर चढ़ रहा था। अपने दायें हाथ के अंगूठे से निक ने रील को कसकर रखा। अपने अंगूठे को चलती रील के बीच डालना बड़ा ही खतरनाक था।

जब वह दबाव डाल रहा था तो डोरी अचानक ही सख्त पड़कर कस गई और लट्ठों से परे एक बहुत बड़ी ट्राउट पानी के बाहर उछली। जैसे ही वह उछली, निक ने बंसी के सिरे को नीचे झुका दिया। लेकिन जैसे ही दबाव कम करने के लिए सिरे को उसने झुकाया, दबाव के अधिकतम होने के क्षण और बहुत अधिक कसाव की सख्ती को उसने महसूस किया। यह महसूस करना गलत नहीं था क्योंकि डोरी की सारी लचक खत्म हो गई थी और वह रूखी और सख्त पड़ गई थी। इसके बाद वह ढीली पड़ गई।

सूखे मुंह और डूबते दिल के साथ निक ने डोरी को लपेट लिया। उसने इतनी बड़ी ट्राउट कभी नहीं देखी थी। उसमें एक भारीपन था, एक ताकत थी जिसे बांधा नहीं जा सकता था। जब वह कूदी थी, उसका आकार कितना बड़ा दीखा था। वह सामन मछली जितनी चौड़ी थी।

निक का हाथ कांप रहा था। वह धीरे-धीरे डोरी लपेट रहा था। उसका उद्वेग कुछ अधिक बढ़ गया था। वह कुछ अस्पष्ट-सी गिरावट-सी महसूस कर रहा था, जैसे बैठ जाना ही अच्छा हो।

जहां तांत हुक से कसी थी, वहीं से वह टूट गया था। निक ने उसे अपने हाथ में लिया। उसने सोचा, ट्राउट कहीं तली में होगी। बहुत नीचे, रोशनी से दूर, लट्ठों के तले, कंकरीट पर वह स्वयं को संभाल रही होगी।

कांटा उसके जबड़े में फंसा होगा। निक जानता था कि ट्राउट के दांत कांटे की नोक को काट देंगे। नोक उसके जबड़े में जड़ी रह जाएगी। शर्तिया, ट्राउट बहुत नाराज होगी। उसके आकार की किसी भी मछली को नाराज़ होना ही चाहिए, फिर वह तो ट्राउट है। कांटा उसमें बहुत पक्के रूप में फंस गया है, चट्टान जैसे पक्के रूप में। वहां से चल देने से पहले उसने भी एक चट्टान की तरह महसूस किया। ईश्वर की कसम, वह एक बड़ी मछली थी। ईश्वर की कसम, इतनी बड़ी ट्राउट के बारे में उसने कभी सुना तक नहीं था।

निक पानी से घास के मैदान पर निकला और खड़ा हो गया। उसकी पतलून में से निचुड़कर, और जूतों में से निकल-कर पानी नीचे को बह रहा था। उसके जूते भीगकर ढीले हो गए थे। वह चलकर लट्ठों पर बैठ गया। वह अपने उद्वेग को बढ़ने नहीं देना चाहता था।

उसने अपने जूतों के भीतर पानी में अपने पंजों को ऐंठा और अपनी आगे की जेब से एक सिगरेट निकाली। उसने उसे जलाया और लट्ठों से नीचे के तेज़ पानी में तीली को फेंक दिया। जैसे ही तीली ने तेज़ धार में चक्कर खाया एक छोटी-सी ट्राउट उसपर झपटी। निक हंसा। उसने सिगरेट ख़त्म कर लेने का निश्चय किया।

धूप में कपड़े सुखाता और सिगरेट पीता वह लट्ठों पर बैठा था। गर्म धूप उसकी पीठ पर पड़ रही थी। नदी का छिछला हिस्सा आगे जंगल में प्रवेश कर रहा था और जंगल के भीतर घुमाव खा रहा था। छिछला जल और पानी से चिकनी बनी चट्टानें चमक रही थीं। तट के साथ-साथ देवदार और सफेद बेंत के पेड़ थे। लट्ठे धूप में गर्मा रहे थे और छाल से रहित होने से चिकने और बैठने योग्य बन गए थे और छूने पर भूरे घोड़े-से लगते थे। धीरे-धीरे उसका निराशा का भाव समाप्त हो गया। उस रोमांच के बाद निराशा की जो भावना तेज़ी से आई थी जिसके कारण उसके कंधे दर्द करने लगे थे, अब धीमे-धीमे चली गई थी। अब सब कुछ ठीक था।

उसकी बंसी लट्ठों पर पड़ी थी। निक ने तांत को एक नये हुक से बांधा और उसे खींचकर इतना कसा कि वह एक सख्त गांठ बन गई।

उसने चारा लगाया। फिर बंसी उठाई और लट्ठों के सुदूर सिरे तक चलकर गया। वहां पानी अधिक गहरा नहीं था। यहीं वह पानी में घुसा। लट्ठों के नीचे और उनके पार एक गहरा जलकुण्ड था। निक दलदल वाले किनारे के पास की छिछली पट्टी पर से घूमकर सोते के उथले फैलाव पर आ गया।

बायीं ओर जहां घास का मैदान समाप्त हो रहा था और जंगल शुरू हो रहा था, एक देवदार का विशाल पेड़ उखड़ा पड़ा था। यह किसी आंधी में उखड़ गया था और जंगल की ओर ही गिर पड़ा था। उसकी जड़ों में मिट्टी भरी थी और उनमें घास उग आई थी। सोते के साथ एक ठोस तट के रूप में यह ऊंचा उठा था। नदी इस उखड़े पेड़ से लगकर बहती थी। जहां निक खड़ा था, वहां धारा के बहाव के कारण सोते की उथली तली में गहरी नालियां-सी, लीकें-सी कटी उसे दीख पड़ रही थीं। जहां वह खड़ा था, वहां पथरीला था और उससे आगे भी पत्थर थे और बड़ी शिलाएं थीं। जहां धारा पेड़ की जड़ों के पास से घूम रही थी, वहां सोते की तली चिकनी मिट्टी की थी और गहरे पानी से भरी नालियों के बीच हरी घास उग आई थी। यह पर्णा घास धार में हिल रही थी।

निक ने बंसी को अपने कंधे पर से पीछे और फिर सामने की ओर झुलाया और सामने की ओर टेढ़ी लपलपाती डोरी को और फतिंगे को पानी की घास के बीच एक गहरी नाली पर छोड़ दिया। एक ट्राउट ने मुंह चलाया और निक ने उसे फंसा लिया।

बंसी को दूर उखड़े पेड़ की ओर तानते और पीछे धारा की ओर झटके देते हुए निक ने डुबकियां लेती और बंसी को दुहरा करती ट्राउट मछली को घास के ख़तरे में से खुली नदी में खींच लिया। धारा में फड़फड़ाती जीवित मछली समेत बंसी को उसने ऊपर उठाया और ट्राउट को खींच लाया। वह भागती, पर हमेशा लौट आती। बंसी का स्प्रिंग खिंचाव के

साथ झुक जाता। कभी-कभी वह पानी के भीतर भी लचक-लचक जाता था। पर मछली को वह सदा ही वापस खींच लाता था। बहाव के साथ झटके हलके पड़ गए। निक ने बंसी को सिर से ऊपर उठा लिया और ट्राउट को जाल के ऊपर ले आया।

ट्राउट जाल में भारी बनकर लटक गई। जाल में उसकी पीठ रंग-बिरंगी और बगल सफेद लग रही थी। निक ने उसका कांटा निकाला। उसकी बगलें भारी थीं। उन्हें अच्छी तरह पकड़ा जा सकता था। उसका जबड़ा बड़ा और चिकना था। निक ने उस हांफती मछली को अपने कन्धे से लटकते और पानी में पड़े लम्बे बोरे में डाल लिया।

निक ने बोरे के मुंह को धार के साथ खोल दिया और पानी भरकर उसे भारी हो जाने दिया। उसने उसे ऊपर उठाए रखा। उसका तला सोते के अन्दर था। उसकी बाजुओं में से पानी निकल रहा था। नीचे तली में बड़ी ट्राउट पानी में जीवित पड़ी थी।

निक बहाव के साथ-साथ आगे बढ़ा। पानी में डूबा भारी बोरा उसके आगे-आगे बह रहा था और उसके कन्धों को खींच रहा था।

धूप में गर्मी बढ़ रही थी और गर्म धूप उसकी गर्दन के पृष्ठ पर पड़ रही थी।

निक को एक बढ़िया ट्राउट मिल गई थी। बहुत-सी ट्राउट पकड़ने की उसकी इच्छा नहीं थी। सोता यहां छिछला और चौड़ा था। दोनों तटों पर पेड़ खड़े थे। बायें तट के पेड़ सुबह की धूप में धारा पर संक्षिप्त छायाएं डाल रहे थे। निक जानता था, हर छाया में ट्राउट है। दोपहर बाद जब सूर्य पहाड़ियों की ओर चला जाएगा तब ट्राउट सोते के दूसरी ओर ठंडी छायाओं में चली जाएंगी।

उनमें सबसे बड़ी वाली, तट से सटकर पड़ी होंगी। वहां उन्हें सदा ही पकड़ा जा सकता है। जब सूर्य छुप जाएगा तब वे सब धारा के बीच पहुंच जाएंगी। छुपने से पहले जब सूर्य पानी में एक चौंधिया देने वाली चमक भर देता है, उस समय धारा की किसी भी जगह से बड़ी ट्राउट मछली

पकड़ी जा सकती है। पर उस समय मछली पकड़ना लगभग असम्भव होता है क्योंकि धूप के कारण पानी की सतह शीशे की तरह चौंधियाती है। बहाव से उलट मछली निश्चय ही पकड़ी जा सकती है। लेकिन इस जैसे सोते में बहाव के विरुद्ध चलकर ऐसी गहरी जगह जाना पड़ता है जहां डुबान पानी हो। ऐसी धार के बीच बहाव के विरुद्ध मछली पकड़ना कोई मज़ाक नहीं है।

छिछले फैलाव में को होता हुआ निक तट में खुदे गहरे खोखलों को ढूंढ़ रहा था। नदी के किनारे एक सफेदे का पेड़ उगा था। उसकी शाखाएं पानी के अन्दर तक लटकी थीं। सोता पेड़ की छाया के नीचे से गुज़रकर बह रहा था। ऐसी जगह ट्राउट सदा ही मिल जाया करती हैं।

निक ने उस खोखल में मछली पकड़नी नहीं चाही। उसे निश्चय था कि बंसी शाखाओं में अटककर रह जाएगी।

पर वहां काफी गहरा दीख पड़ रहा था। उसने फतिंगा डाला। धार उसे पानी के अन्दर पेड़ की लटकती शाखा के नीचे ले गई। डोरी ज़ोर से खिंची और निक ने मछली मार ली। ट्राउट ज़ोर-ज़ोर से झटके ले रही थी। वह आधी पानी से बाहर पत्तों और शाखाओं में थी। डोरी उलझ गई। निक ने ज़ोर से खींचा और ट्राउट छूटकर निकल गई। उसने डोरी लपेट ली और कांटे को हाथ से पकड़े बहाव के साथ-साथ बढ़ा।

आगे बायें तट से सटा एक बड़ा लट्ठा पड़ा था। निक ने देखा, वह खोखला था। उसका मुंह धार की ओर था और पानी उसमें स्थिरता से प्रवेश कर रहा था। बस एक छोटी-सी लहर ही लट्ठे के चारों ओर फैल-फैल जाती थी। पानी गहरा था। खोखले लट्ठे का ऊपरी भाग भूरा और सूखा था। उसका एक हिस्सा छाया में था।

फतिंगों की बोतल की डाट निक ने खोली। एक फतिंगा डाट से चिपक गया। उसने उसे उठा लिया। उसे पिरोया और आगे उछाल दिया। उसने बंसी को इतना आगे बढ़ाया कि पानी पर पड़ा फतिंगा धार के साथ-साथ

खोखले लट्ठे के अन्दर तक पहुंच सके। निक ने बंसी को नीचा किया और फतिंगा अन्दर बह गया। एक ज़ोर का झटका लगा। निक ने खिंचाव के विरुद्ध बंसी को हिलाया। एक जीवन के अनुभव के सिवाय ऐसा महसूस हुआ जैसे कि उसके साथ स्वयं लट्ठा ही कांटे में फंस गया हो।

उसने मछली को बाहर धारा में खींचने की कोशिश की। वह भारी बनी बाहर निकल आई।

डोरी ढीली पड़ गई। निक ने सोचा कि ट्राउट निकल गई। तब उसने उसे धार में बहुत पास ही देखा। वह सिर हिला रही थी और कांटे को निकालने की कोशिश कर रही थी। उसका मुंह कसकर बन्द था। साफ, बहती धारा में वह कांटे से लड़ रही थी।

अपने बायें हाथ से डोरी को लपेटते हुए निक ने बंसी को झुलाया जिससे डोरी कस जाये और ट्राउट को जाल की ओर ले आने की कोशिश की। लेकिन वह नज़रों से दूर जा चुकी थी और डोरी खिंच रही थी। निक ने बहाव के विरुद्ध उसे खींचा। पानी में बंसी के स्प्रिंग के खिंचने-तनने की चिन्ता न कर उसने उसे फड़फड़ाने दिया। बंसी को उसने बायें हाथ में ले लिया। ट्राउट को बहाव के ऊपर खींचा। बंसी से टकराते उसके बोझ को थामे रखा और तब उसे जाल में गिर जाने दिया। उसने उसे पानी से साफ ऊपर उठा लिया। जाल में वह एक भारी अर्धवृत्त बन रही थी। जाल में से पानी चू रहा था। उसने उसका कांटा निकाला और उसे बोरी में डाल लिया।

उसने बोरी के मुंह को खोल दिया और पानी में पड़ी दो जीवित बड़ी मछलियों को देखा।

गहरे पानी के बीच चलकर निक खोखले लट्ठे के पास पहुंच गया। उसने अपने सिर के ऊपर से बोरी को उतारा। जब बोरी पानी के बाहर निकली तो ट्राउट अन्दर फड़फड़ाई। उसने उसे इस तरह लटका लिया कि ट्राउट गहरे पानी में रहे। अब वह कूदकर लट्ठे पर चढ़ गया और उसपर बैठ गया।

उसकी पतलून और जूतों में से पानी निचुड़ रहा था और सोते की ओर बह रहा था। उसने अपनी बंसी नीचे रख दी और लट्ठे के छाया वाले हिस्से की ओर सरक गया। अपनी जेब से उसने सैंडविचें निकाल लीं। सैंडविचों को उसने ठंडे पानी में डुबो लिया। धारा उनके छितरे टुकड़ों को बहा ले गई। उसने सैंडविचों को खा लिया और टोप को डुबोकर पीने के लिए पानी भर लिया। पीने से पहले उसके टोप में से पानी बाहर बहा जा रहा था।

छाया में ठंडक थी। वह लट्ठे पर बैठा था। उसने एक सिगरेट निकाली और जलाने के लिए तीली को रगड़ा। तीली भूरी लकड़ी पर गड़ गई और वहां उसने एक हलकी-सी लीक बना दी। निक लट्ठे की बगल की ओर झुका। एक सख्त जगह उसने ढूंढ़ ली और तीली को जला लिया। वह बैठकर सिगरेट पीता रहा और नदी को देखता रहा। आगे नदी संकरी होकर एक दलदल में प्रवेश कर रही थी। नदी समतल और गहरी बन गई थी देवदार के पेड़ों के कारण दलदल ठोस दीख पड़ते थे पेड़ों के तने परस्पर सटे थे। उनकी शाखाएं ठोस थीं। ऐसी दलदल के बीच से निकलना संभव नहीं होता। शाखाएं बहुत नीची उगी थीं। ज़रा भी चलने के लिए ज़मीन से लगभग सटकर सरकना पड़ेगा। शाखाओं से टकराकर तो निकला नहीं जा सकता था। निक ने सोचा शायद इसीलिए दलदल में रहने वाले पशु उस तरह के बने होते हैं।

उसने सोचा, वह पढ़ने के लिए कुछ लाया होता तो अच्छा होता। उसे पढ़ने की इच्छा हुई। आगे दलदल में बढ़ जाने की इच्छा उसकी नहीं थी। नीचे उसने नदी में झांका। एक बड़ा देवदार टेढ़ा होकर सोते के पार तक फैला था। उससे आगे नदी दलदल में बह रही थी।

निक ने अब वहां जाना नहीं चाहा। कांखों के भीतर तक पहुंचते गहरे पानी में चलने और जहां मछलियों को जाल में ले आना असम्भव है, वहां बड़ी ट्राउट फंसाने के विरुद्ध उसके मन में एक प्रतिक्रिया पैदा हो गई थी। दलदल के तट नंगे थे। बड़े-बड़े देवदार सिर के ऊपर फैले थे। धूप उनके बीच से छनकर नहीं आ पाती थी। बस, कुछ धब्बे से ही आते थे। तेज़ गहरे

पानी और हलकी रोशनी में मछलियां पकड़ना निराशाजनक ही था। दलदल में मछलियां पकड़ना एक घातक दुस्साहस था। निक उसमें पड़ना नहीं चाहता था। सोते के बहाव के साथ और आगे बढ़ना वह आज नहीं चाहता था।

उसने अपना चाकू निकाल लिया। उसे खोला और लट्ठे में गाड़ दिया। फिर बोरी को ऊपर खींचा। उसमें हाथ डाला और एक ट्राउट बाहर निकाल ली। उसे पूंछ के पास से, जहां उसे जीवित पकड़ना कठिन होता है, हाथ से थामा। लट्ठे पर बार-बार पटका। ट्राउट कांपी और ऐंठ गई। निक ने उसे छाया में लट्ठे पर रख दिया और उसी ढंग से दूसरी मछली की भी गर्दन तोड़ी। उन्हें बराबर-बराबर लट्ठे पर रख लिया। वे बढ़िया ट्राउट थीं।

निक ने उन्हें साफ किया। उन्हें रन्ध्र से जबड़े के सिरे तक चीर डाला। अन्दर का पूरा भाग गलफड़े और जीभ एकसाथ बाहर निकल आए। ये दोनों नर थीं। समतल और साफ तिल्ली पर लम्बी, भूरी, सफेद धारियां थीं। अन्दर के सभी भाग साफ और ठोस रूप में एकसाथ बाहर आ गए। निक ने तलछट को ऊदबिलावों के खाने के लिए तट पर डाल दिया।

उसने ट्राउट को पानी में धोया। जब उसने उन्हें वापस पानी में डाला तो वे जीवित मछलियों जैसी लगने लगीं। उनका रंग अभी तक भी नहीं उड़ा था। उसने अपने हाथ धोए और लट्ठे पर उन्हें सुखाया। तब लट्ठे पर फैले बोरे पर उसने ट्राउट मछलियों को रख दिया। उन्हें उसमें लपेट दिया और बंडल के रूप में बांध दिया और उसे जाल में रख दिया। उसका चाकू अभी तक खुला था और फल लट्ठे में घुसा था। उसने उसे लकड़ी पर साफ किया और अपनी जेब में रख लिया।

निक लट्ठे पर खड़ा हो गया। वह बंसी उठाए था। जाल भारी होकर लटका था। वह पानी में उतरा और छपछप करता हुआ तट तक पहुंच गया। फिर तट पर चढ़ गया और जंगल में से होकर ऊंची भूमि की ओर बढ़ चला। वह अपने तम्बू में वापस जा रहा था। उसने पीछे मुड़कर देखा।

पेड़ों के बीच से नदी थोड़ी-सी दीख पड़ रही थी। अभी काफी दिन तक वह दलदल में मछलियां पकड़ेगा।

❑❑❑

जीवन के ओज और तेज से परिपूर्ण सजीव और मार्मिक चित्रण

नोबेल पुरस्कार विजेता लेखक अर्नेस्ट हेमिंग्वे की कहानियों में उनके घुमक्कड़ और खोजी जीवन के अत्यंत सजीव चित्र प्राप्त होते हैं। इनमें मनुष्य-जीवन का जो पहलू खींचा गया है वह अन्य किसी की कहानियों में नहीं मिलता। इसीलिए ये सारे संसार में समादृत हुई हैं और बड़े चाव से पढ़ी जाती हैं। यहाँ उनकी चुनी हुई कहानियों के अनुवाद किए गए हैं। ये कहानियाँ निश्चय ही पाठकों का मन मोह लेंगी।